देवा वटाला



बलदेव सिंह चिंब

देवा-वटाला

बलदेव सिंह चिब

अमर प्रकाशन

पहला संस्करण
१९९०

मूल्य : ४५ रुपये

अमर प्रकाशन :-
रणबीर सिंह पुरा, जम्मू तवी।

मुद्रक :-
जय दुर्गे प्रिंटिंग प्रेस, रानी बाग, जम्मू। दूरभष : ३१८६७

समर्पित

उन मजलूम विवश
बच्चों, जवानों और
बूढे शहीदों के नाम......
जो मज़हबी पागल
दरिन्दों की गोलियों
से छलनी हो कर भूके प्यासे
अपनी जन्म भूमी की गोद
में सदा के लिये सो गये।

"जब कोई कौम अपने स्वाभिमान को खो देती है तो वह कौम एक ऐसे मोड पर आ जाती है कि फिर वह कौम ही नहीं रहती"

अज्ञात

"जिस कौम को मिटाना हो, या गिराना हो तो उस का इतिहास नष्ट कर दो। वह कौम खुद-बखुद मिट जायगी"

लार्ड मैकाले

"इतिहास वह बस्तु है जो बच्चों के हाथ में सब से पहले दी जानी चाहिये। क्योंकि इस से उन के कोमल हृदयों पर देश प्रेम और वास्तविक बुद्धि की मोहर लग जाती है"।

रोलस

अपने पूर्वजों को जानने के लिये इतिहास बड़ा जरूरी है। जिस कौम का इतिहास ही नहीं हो उस जाती या कौम के लोग अपने मुंह से चाहे कितनी भी ढीगें हांकें उन की कोई बात सच्ची नहीं मानी जा सकती है। इतिहास से ही आने वाली पीढी को अपने अतीत की जानकारी मिकती है, उस का मनोबल बढ़ना है।

चिब

धर्म भी रहेगा और पृथ्वी भी रहेगी, परन्तु अन्याय का सामराज्य एक दिन नष्ट हो जायेगा, विश्वम्भर भगवान के भरोसे मेरा निश्चय अटल रहेगा।

महाराण प्रताप

गुरु के सिख वेश-भूषा में आदर्श हिन्दू होंगे। हिन्दू सिख में भेद नहीं होगा और एकता में मेलजोल बनाये रखना होगा। हिन्दू धर्म की रक्षा और हिन्दुस्थान के हितों के लिये गुरु का सिख मर मिटेगा।

श्री गुरु गोविन्द सिंह
१७२३-१७६५

सूचि

देवा - वटाला

देश की आज़ादी के लिये भारत वासियों ने अद्‌भुत बलिदान दिये और अनेक प्रकार के दुख झेले थे। अंग्रेजों को विवश हो कर देश प्रेमियों के आगे झुकना पड़ा था। जाते हुये उन्होंने भारत का ऐसे ढंग से विभाजन किया जिसके दुष्परिणाम आज भी सब के सामने हैं। भिवाजन के समय बंगाल, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत, पंजाब और जम्मू कश्मीर के बसने वालों को जिन हालात का शिकार होना पड़ा था उन को सदियों तक भुला देना कठिन रहेगा। स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नहरू की महाराजा जम्मू कश्मीर श्री हरि सिंह जी के साथ ज़ाती अनबनी के कारण इस अभागे राज्य के रहने वालों को कितने दुख और कष्ट सहन करने पड़े हैं यह एक लम्बी कहानी है। आज़ादी के ४२ बर्षों के बाद भी जम्मू कश्मीर एक विश्वव्यापी समस्या बनी हुई है। आधी सदी का यह महत्वपूर्ण इतिहास कई करवटें बदलता आया है और इस समय एक गम्भीर स्तिथि की ओर बढ़ता जा रहा है।

१९४७ में जम्मू कश्मीर के मुज़फ्फराबाद, पुंछ, राजौरी, कोटली, मीरपुर और भिंबर के हिन्दूओं पर भारी अत्याचार हुये थे। उन दिनों हज़ारों लोग मारे गये थे और लाखों को बेघर होना पड़ा था। मीरपुर और भिंबर के खूबसूरत शहरों को बिल्कुल नष्ट कर दिया गया था। तहसील भिंबर का "देवा-वटाला" एक ऐसा वीर उपजाऊ खण्ड था जिस को जम्मू कश्मीर की रीढ की हड्डी माना जाता था और इस के वीरों की वीरता की धाक दूर दूर तक जमी हुई थी। वे देवा-वटाला के वीर ही थे जिनके दम कदम से महाराजा रंजीत सिंह और गुलाब सिंह दोनों सीधे मुकाबिले में वालिए भिमर राजा सुल्तान खां को पराजित नहीं कर सके थे। उस विचित्र भुखण्ड की तबाई और बर्बादी की दर्दनाक कहानी अनुपम इतिहास का एक गुमनाम अध्याय बन कर रह गई है। पाठकों को इस छोटे इतिहास से कई प्रकार की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।

ॐ

दो शब्द ।

अच्छा लिखना मुझे आता नहीं फिर भी मुझे लिखने का बड़ा चाव है। यत्न करता हुं मेहनत करता हुं तब भी सुन्दर लिख नहीं सकता। अधिक पढ़े लिखे तो मेरे लेखों को पढ़ कर हसं देते होंगे। हो सकता है मेरा सीधा साधा लिखना कुछ पढ़ने वालों को पसन्द भी आ जाता हो। मेरा यह शौक ही तो है, जिसके कारण मैं कई छोटी मोटी किताबें लिखने में सफल हो चुका हुं जिन में से कई तो छप कर जनता के हाथों तक पहुंच चुकी हैं और बहुत सा पैसा न होने के कारण मेरे पास पड़ी हैं। यदि उन के लिये पैंसे का प्रबन्ध हो गया तो वह भी छप जायेंगी अथवा मेरे पास ही पड़ी रहेंगी।

जन्म से ही मुझे इतिहास से प्यार है। इतिहास पढ़ना, पुराने राजमहलों और किलों के खण्डहरों को देखना, उन में घण्टों घूमने से मुझे बड़ा अनन्द मिलता है। कई ऐतिहासिक स्थानों पर तो मेरा मन इतना लग जाता है। जी चाहता है मैं वर्षो वहां पर ही रहुं। भारत के सैंकड़ों ऐसे स्थानों में से चितोडगढ़ ने तो मुझे भारी अर्कषित किया है। उस पुण्य स्थान को देखने से मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं वहां वर्षों व्यतीत कर चुका हुं। उस पावन स्थान से मुझे अपने किसी पिछले जन्म का सम्बन्ध मालूम होता है। मेरा अब भी जी चाहता है कि मैं अपने जीवन के अन्तिम दिन वहां रह कर गुज़ारुं। इस विषय पर एक बार आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री अमर स्वामी जी से ग़ाजिबाद में मेरी बात चीत भी हुई थी। उन्हों ने मेरे वहां स्थाई रूप से रहने की मुझे स्वीकृति नहीं दी थी। केवल इतना कह कर न कर दी कि "वह स्थान तो बड़ा अच्छा है। वहां हज़ारों सतियों और शहीदों के वलिदानों से वातावरण बड़ा पावब और पवित्र हो चुका है फिर भी वहां उज्जड़ होने से किसी अकेले व्यक्ति का रहना उचित दिखाई नहीं देता है।"

चित्तोडगढ़ के अतिरिक्त केवल राजस्थान में सैंकडों ऐसे पुण्य स्थान हैं यहां देश की स्वतन्त्रता के लिये अनगणित वलिदान दिये गये हैं। हमीर चौहान का रणथमभोर आज भी अपने त्रचनो को निभाने और शर्ण में आये

मीर मकबूल मंगोल की प्राण रक्षा के लिये केसरी बाना पहर कर शहीदगति पाने वाले वीरों की पवित्र याद को अपनी छाती में छपाये हुये चुप चाप इतिहास के विद्यार्थियों के लिये वीरता का कोश बना हुआ है। हल्दी घाटी की मिट्टी को बेशुमार शहीदों के लहु ने सदा के लिये रंग दिया हुआ है।

इस के अतिरिक्त महारानी झाँसी का किला, ग्वालियार और भरतपुर के प्रसिद्ध गढ़, मध्यप्रदेश में रानी दुर्गा वति के महलों के अनुपम खण्डहर और उन से जुडी हुई अनेक वीर गाधाएं, गोलकुन्डा के चांदबीबी के अदभुत किला का मुख्य द्वार, दौलताबाद का अजय गढ़, शिवा जी छत्रपति के सिंह गढ़ और रायगढ़ के ऐतिहासिक किले और कालंजर का प्राचीन विशाल दुर्ग भी भारतीय अतीत के उज्जवल इतिहास की अपने मुहं से बोल कर ग्वाई पेश करते हैं। भारत की राजधानी दिल्ली को देखिये। इस महानगर का चप्पा चप्पा इतिहास के सुन्दर पन्नों से भरा पडा है। मीलों फैले शहर के स्थान स्थान फर इतिहास की स्वर्णमय सामग्री बिखरी पडी है। इस नगर की धर्ती ने जहां पाण्डूवों और चौहानों की उन्नती के दिन देखे हैं वहां औरंजेब के अत्याचार और नादरशाह दुर्राण के कत्लेआम के कष्ट भी सहन किये हैं। दिल्ली वह शहर है जिस पर आज ही नहीं आज से हज़ारों वर्ष पूर्व से संसार की नज़रें लगी रही हैं। दिल्ली ने बेदर्द ज़माने के हज़ारों रंग देखे हैं। इस की गलियां, बजार और पत्थर सैंकडो बार मानव लहु से रंगे जा चुके हैं। दिल्ली की धर्ती अपने अन्दर अनेक प्रकार की घटनाए छिपाये बैठी है।

१८५७ के स्वातन्त्रत समर में मुगल वशं के अन्तिम समराट बहादुर शाह ज़फर के दो शाहज़ादों को खूनी द्वार के पास कत्ल करके मेजर हडसन ने उन का लहु पी कर अपने पापी मन की प्यास बुझाई थी। मुग़ल शाहज़ादियां जिन्हों ने कभी महलों से बाहर पांव नहीं रखा था। उन बेचारियों पर क्या बीती थी। उन को घिसयारों और पत्थर कूटने वालों ने अपने घरों में डाल लिया था। सच्चाई और अपने धर्म की रक्षा के लिये श्री गुरु तेग़ के बहादुर को लाल किले के सामने उन के दो अनुयायों भाई मति दास और भाई दयाला के साथ शहीद कर दिया था। क्या लिखूं और कहां तक लिखूं। दिल्ली का इतिहास लिखना तो रही एक बात इस का इतिहास पढ़ना और जानना भी हरेक के बस की बात नहीं है।

समय बडा बेदर्द होता है। इसे बदलते देर नहीं लगती है। जब यह किसी के पक्ष में होता है तो उसे आकाश की बुलन्दियों से भी ऊपर ले जाता

है और अगर किसी के विपक्ष में हो जाये तो उस के लिये ज़मीन पर भी जगह नहीं रहती है। समय का चक्कर बड़ा बेरहम होता है। यह किसी का साथ नहीं देता है। किसी को उठाना और किसी को मिटाना बस इस का यही एक काम है। इस लिये इतिहास का विद्यार्थी अगर ध्यान से काम ले तो उसे बड़ा आनन्द मिलता है। मैं जब इतिहास की खोज में खो जाता हुं तो मुझे इस नाशवान ससांर का ज्ञान प्राप्त होने लगता है। इस से मुझे एक विशेष प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है। इसी आनन्द को पाने के लिये मैं प्राचीन इतिहास पढ़ता हुं। मुझे इतिहास की कोई भी पुस्तक मिलनी चाहिये चाहे वह किसी राष्ट्र, कौम या किसी एकेले वशं की ही क्यों न हो। यह इतिहास से ही पता चलाता है कि कैसे कैसे लोग आए और आ कर चल दिये। एक कवि के अनुसार।

तख्त वालों का पता देते हैं तख्ते गोर के।
खोज लगती है, यहां तक उस के आगे कुछ नहीं॥

मैं क्या लिखने बैठा था और कहां से कहां चला गया। यही तो मुझ में कमी है। इतिहास लिखने की मुझ में शक्ति कहां? मुझ से तो दुनिया के छोटे छोटे काम ही नहीं हो सकते है। अच्छा कुछ भी हो। मैं ने इतिहास लिखने की कई बार कोशिश की है और अब भी कर रहा हुं। जब तक मेरा जीवन रहेगा भगवान के नाम के साथ साथ इतिहास के बारे में लिख पढ कर आनन्दित होता रहुंगा।

यह तो रही पुराने इतिहास की बात जिस को मेरी आखों ने नहीं देखा है। जिस को मैं ने केवल पुस्तकों द्वारा पढ़ा है या बड़े बूढों से सुना है। अब उस इतिहास की कहानी लिखने जा रहा हुं जिस को स्वयं मैं ने देखा है और जिस की हरेक घटना सच्ची और कल्पनारहित है। यह इतिहास मेरी अपनी जन्म भूमि का है। जिस मिट्टी में मेरा जन्म हुआ और जिस का अन्नजल खा पी कर मेरा शरीर बढा पला, यहां मैं ने थोडा लिखना पढ़ना सीखा। जिस पुण्य भूमि को छोडे हुये चालीस वर्ष बीत चुके हैं फिर भी उस के एक बार दर्शन करने के लिये दिल तडपता है और आखें तरस्ती हैं। हो सकता है उस के दर्शन करने का समय न मिल सके। हम में से बहुत लोग ऐसे भी हैं जिन पर इधर आ कर अच्छे दिन आ गये हैं। वे अपनी जन्म भूमि को भूल चुके हैं। मैं उन में से नहीं हुं। मेरे मन में अपनी जन्म भूमि के लिये आज भी वैसा ही प्यार और स्नेह है जैसा पहले था। उसी प्यार से व्याकुल

हो कर मैं कुछ शब्द लिखने की हिम्मत कर रहा हुं। आने वाले ज़माने में पढने वालों के लिये यह एक बहुमूल्य सामग्री रहेगी।

मेरी जन्म भूमि की कोई विशेष बात नहीं है जो में यहां लिखूं। उस क्षेत्र को लोग देवा-वटाला के नाम से जानते थे। इलाका कन्डी था। हम तालाबों का पानी पीते थे। बाजरे की रोटी और सरसों का साग हमारा मन भाता भोजन था। हां एक दो बातें वहां की जरूर थीं। पहली बात उस पथरेली जमीन में जो आम पैंदा होते थे उन की मिसाल कहीं नहीं मिलती है। वतन छोड़ने के बाद मैं ने भारत घूम लिया मगर मुझे अपने आमों से अच्छे आम कहीं नहीं मिले। कल्मी आमों की भारत में भरमार है मगर ऐसे प्राकृतिक आमों का मुझे अभाव दिखाई पड़ा है। दूसरी बात वहां के निवासियों की थी। मेरा यह लेख पढ कर हो सकता है कुछ लोग यह बिचार बना लें कि लेखक ने कैसी गप लिखी है। मगर यह सच है। आज कल के लोग "देवा-वटाला" से आए लोगों के बारे में यह धारणा न बना लें। क्या यही वे लोग थे जिन की इतनी प्रशन्सा हो रही है? मगर यह सच है।।। आज से चालीस वर्ष पहले जो लोग और उन की परमप्राएं वहां थीं वह सब मिट चुकी हैं। उन का नामो निशान बाकी नहीं रहा है। इन लोगों की वीरता रणधीरता, सच्चाई से प्यार, सभ्यता और शिष्टाचार सब कुछ उजडने के कारण नष्ट हो कर रह गया है। क्या दिल्ली की सड़क पर घोड़ों की काठियां बेचने वाले क्वाडियों मुग़ल से आज का मानव यह अनुमान लगा सकता है कि इस बेचारे के पूर्वज भारत के सर्वोसर्वा शासिक थे। वैसी ही दशा आज कल देवा-वटाला से आये हुये लोगों की है। अपने घरबार लुट जाने से उन का हरेक प्रकार का पतन हो कर रह गया है। समय के चक्कर ने उन्हें पीस कर रख दिया है।

मेरा यह इतिहास पढ़ने पर कुछ पढ़ने वालों के मन में यह विचार भी पैदा हो सकता है कि बात तो देवा-वटाला की चल रही थी, मगर इस में चालीस पच्चास अन्य ग्रामों का जिक्र भी हो रहा है। इस लिये मैं ऐसा समझने वालों की जानकारी के लिए लिखना उचित समझता हुं कि देवा-वटाला एक गांव का ही नाम नहीं है बल्कि एक क्षेत्र का नाम है। इस में कई गांव शामिल थे। महाराज गुलाब सिंह के राज्य काल से पहले मुनावर तवी से लेकर कढाला के द्वाड़ तक का सारा क्षेत्र देवा-वटाला के नाम से पुकारा जाता था। इस क्षेत्र पर दसो खां चिब की औलाद ने तलवार के बल

द्वारा अधिकार कर लिया था। बड़ी देर तक उस इलाके पर चिब्बों की सरदारी रही। उस क्षेत्र में हिन्दू चिब्ब के अतिरिक्त जट ब्रादरी भी खासी संख्या में आबाद थी।

चिब्बों के अधिकार से पहले वहां के मालिक सुध्दन, बध्दन और कुल्दन जातियों के राजपूत लोग थे। जिन में से अधिकतर चिब्बों के साथ होने वाली लड़ाइयों में मारे गये शेष पुन्छ की ओर भाग गये थे। कुल्दन ब्रादरी के दो घर १९४७ तक कंजलूर नाम के गांव में रहते थे। इस के आलावा उन का कुछ पता नहीं चलता कि वे कहां लुप्त हो गये थे।

उस क्षेत्र में जट ब्रादरी के लोग कहां से आये। इस का बड़े यत्न करने पर भी ठीक पता नहीं चल सका। उस क्षेत्र पर लिखी कोई प्रमानित ऐतहासिक पुस्तक उपलब्ध नहीं है। स्वर्गीय मास्टर मेजर सिंह की "तारीख चिब्बाल" में भी इस ब्रादरी के बारे में कुछ मालूम नहीं होता है। राजगान भिबर के समय की भी कोई लिखित ऐसी नहीं मिलती है जिस से इस ब्रादरी के बारे में कुछ पता चलता हो। जम्मू राज्य की स्थापना तक इतिहास खामोश है।

जट ब्रादरी में एक शाखा समोत्रा कहलाती है। पहले पहल इस शाखा के लोगों को समोत्रे चिब कहा जाता था। समय के साथ इस शाखा के लोग चिब्बों से परे हटते चले गये और जट ब्रादरी से रिशता नाता करने लगे और धीरे धीरे उसी ब्रादरी का अंग बन गये। इस शाखा के बारे में मशहूर है कि किसी चिब ने एक जट कुमारी से प्रेम विवाह कर लिया था। उन की औलाद समोत्रा कहलाई। उस जमाने में ज़ातपात के बंधन बड़े सख्त हुआ करते थे। इस शाखा को चिब ब्रादरी में ब्राबरी न मिल सकी और यह शाखा चिब्बों से पृथक हो गई बास्तव में समोत्रे लोग चिब ही थे और आज भी चिब ही हैं।

इस के अतिरिक्त इस ब्रादरी की दूसरी शाखाएं इस क्षेत्र में कब आबाद हुई और फैली इस बारे में यही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह ब्रादरी पंजाब से इधर आई होगी क्यों कि नादर शाह दुर्रानी के बाद अहमद शाह अबदाली के लगातार हमलों के कारण पंजाब में रहने वाले हिन्दूओं की हालत बड़ी कमज़ोर हो चुकी थी। नित नये हमलों से जनता बड़ी दुखी थी और उस का हिन्दू धर्म और मान सम्मान खतरे में था। उस समय देवा-वटाला का इलाका आकमनकारियों की राह से दूसरी ओर पडता था। इस इलाके

में घने जगंल भी बहुत थे जिन में छुप कर शत्रु से बचाव सम्भव था। इस तरह यह लोग धीरे-धीरे अपने धर्म और प्राणों की रक्षा के लिये आये और इधर ही बस गये होंगे। समय के साथ साथ इस ब्रादरी की संख्या बढ़ती गई। यह लोग बड़े मेहनती, खेतीवाड़ी में बड़े निपुण होने के साथ साथ शरीरिक शक्ति में दृढ़ और बहादुर थे। इस तरह अपने सदगुणों के कारण क्षेत्रीय चिब्बों से मिल भुल गये और यहां के स्थाई नागरिक बन गये।

उस क्षेत्र में चिब्बों और जटों के अतिक्रित अन्य दूसरी जातियां बहुत ही कम संख्या में आबाद थीं। प्रति एक गांव में एक दो घराने लोहारों, तरखानों या धोबियों के होते थे। वह सब लोग इसलाम धर्म को मानने वाले थे। इन के इलावा कुछ मिरासी भी होते थे। यह लोग गायक होने के साथ साथ चिब्बों को उन के पूर्वजों की वीर गाथांए सुना कर अपना जीवन व्यतीत करते थे। उस क्षेत्र में दो तीन गांव ऐसे भी थे जिन के रहने वाले सब मुसलमान थे। उन में बरनाला, टिब्बा और खर्बूज़े के नाम उल्लेखनीय हैं। मलोट नाम के गांव में भी मुसलमान चिब्बों की काफी आबादी थी। उस गांव के राजा सोहबत अलि और राजा मोहम्मद खां बडे पट्टेदार और प्रतिष्ठत व्यक्ति थे।

यह रही देवा वटाला की एक छोटी सी रुप रेखा। आगे चल कर यहां के रहने वाले लोगों पर क्या बीती उस को पुराने लोग तो सब जानते हैं। कुछ अधिक जानने वाले चले भी गये हैं। कुछ लोगों की समरणशक्ति बहुत कम होती है। उन को पुरानी बातें जल्दी भूल जाती हैं। हमें उजड़े हुये ४० वर्ष हो चुके हैं। जो उस समय दूध पीते बच्चे थे। अब वे अपनी जवानी बिता कर बूढ़े हो चुके हैं। उन दूध पीने वाले बच्चों और आज की पीढ़ी को अपनी जन्म भूमी से कितना प्यार है? यह लोग तो केवल इतना ही समझते हैं कि रणबीर सिंह पुरा अथवा जम्मू का इलाका ही इन की जन्म भूमि है। इस से पहले की बातें अधिकतर लोग भूल चुके हैं या शीघ्र ही भूल जाएंगे।

इन बातों को दृष्टि गोचर रखते हुये और अपने जन्म स्थान के वियोग से व्याकुल हो कर मेरे दिल में वर्षों पहले से विचार पैदा हो रहा था कि मैं भी उस इलाके के बारे में कुछ लिख डालूं ताकि यदि भविष्य में किसी को इन बातों की अवश्यकता तो हो मेरी यह कहानी आने वाली पीढ़ी और इतिहास कारों की खोज की सहायक सिद्ध हो सके।

चन्द ने मेरी बड़ी सहायता की थी। वे भी बड़े देश भगत और उधार चि… व्यक्ति थे।

९ अगस्त १९४७ के दिन पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू सिखों के पहले जत्थे ने रियास्ती सीमा के अन्दर शर्णार्थि बन कर प्रवेश किया था। उन्हें पढ्ढार (रणीबर गढ़) के किले में ठहराया गया था। उन बेचारों के पास खाने कों कुछ न था। वे लोग केवल अपनी और अपने बच्चों की जानें ले कर आये थे। सूचना मिलते ही मैं और स्वर्गीय मास्टर सांई दास ने लोगों से दान मागनां शुरु कर दिया था। दो बोंरियां चने गांव की भट्टियों पर भुनवाए, आटा दाल अलग इकट्ठी की। उन सब वस्तुओं को घोडों पर लाद कर हम शर्णार्थि शिवर में पहुंचे। वह मेरे जीवन का पहला दिन था जब मैं ने सैंकडो बेघर लोगों को अपनी आंखों से देखा था और उन को खाने पीने के लिए कुछ दिया था। दुखी महमानों के पेट की आग बुझाने के बाद अंधेरा पड़ने पर हम लौट आये थे। उस के बाद धड़ाधड़ हिन्दू सिक्खों के जत्थे आने लग पडे थे। हमारे गांव के स्कूल और ठाकरद्वारे के अतिरिक्त गांव की तमाम दोकानों के ब्रादें भी उन दुखी भाईयों से भर गये थे। में, रायज़ादा जगन नाथ ठाकुर रवि सिंह, मास्टर सांई दास, ठा० बाबू सिंह और ठाकर वरियाम सिंह चाड़क यथा शक्ति आने वालों की सेवा में लगे रहते थे। पण्डित तारा चन्द भोग एक साधारण व्यक्ति था। उस ने उन दिनों जी जान से सेवा कार्य किया जिस को भुलाया नहीं जा सकता है। वह बेचारा अपनी जान तो बचा नहीं सका, अपने घर पर शहीद हो गया। उस की माता भी मार दी गई। हम सब ने दिन रात एक कर के आने वालों की सेवा की। बीमारों का इलाज करवाया और जो बे सहारा मर जाता था उस को अपने कन्धो पर उठा कर उस का दाह संस्कार करते थे।

उन दिनों हमें ऐसा करते देख कर कई लोग हम पर हंस देते थे किन्तु हम ऐसी बातों को अनसुनी करते हुये अपने काम में लगे रहते थे। मैं दिन के समय प्राय दारु-सिक्का बांटने तथा सीमा सुरक्षा-चौकियों की चौकसी देखने के लिये ज़ैलदार चरण दास के साथ सीमा पर चला जाया करता था और श्री जगन नाथ और ठाकुर रवि सिंह गांव में आने वाले अतिथियों की सेवा में लगे रहते थे। स्वर्गीय ठा० बाबु सिंह भी मेरे साथ रहता था।

पता नहीं उन दिनों हमारे गांव के पेडों पर उल्लू कहां से आ गये थे। रात के समय वे भयानक स्वरों में बोलते रहते थे। इस तरह हमें पूर्ण विश्वास

यह मैं ही क्यों लिखूं ? इसे कोई दूसरा व्यक्ति भी लिख सकता है। किसी दूसरे ने इस कार्य को क्यों नहीं किया मैं इस बात को नहीं जानता हुं। अपने अपने बिचार होते हैं, अपना अपना शौक होता है।

एक बात सच है जिसे मैं अपने लिये लिख रहा हुं। अपने बारे में लिखने वाले को बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जो कुछ मैं लिखने जा रहा हुं इस की सब घटनांए सच्ची और मेरी आखों देखी हैं। उन हालात से झूझने का अपने इलाके के सब लोगों से अधिक सुभाग्य मुझे प्राप्त रहा है। मैं तीन महीनों तक निरन्त्र यह महत्वपूर्ण कार्य निभाता रहा था। मुझे उन दिनों मरने का ज़रा भी डर या भय नहीं था। मैं ने असौनक होते हुये भी कई हत्था पाई की भीषण लड़ाईयों में राजकीय सैनिकों के साथ बड़ी वीरता से कार्य किया था। सैनिक और अफिसर मेरी गतिविधियों से बहुत प्रसन्न थे। अपने इलाके के लिये जम्मू से दारु, सिक्का और सैनिक सामग्री लाने की ज़िम्मेदारी भी मुझे सौंपी गई थी। यह कार्य मुझे ठाकुर प्रभात सिंह जी की ओर से दिये गये थे। ठाकुर साहब इस इलाके के जैलदार और उन दिनों सर्वोसर्वा थे। रियास्ती सैनिक भी सब काम उन से पूछ कर ही करते थे। प्रभू कृपा से मैं उन का सब से ज्यादा विश्वास पात्र कर्याकर्ता था।

एक दिन मैं और स्वर्गीय पन्डित बैज नाथ जी पिन्डी गांव की लड़ाई में शामिल थे। उस दिन वहां पाकिस्तानी सैनिकों से कड़ी मुठभीड हो गई। तडातड गोलियां चलने लगीं हमारे साथी पश्चिम की ओर से पीछे हटने में सफल हो गये जबकि मैं और पण्डित जी वहां फंस गये और हम ने एक गन्ने के खेत में छुप कर अपनी जानें बचाई थीं। हम शाम पडने तक वहां छिपे रहे और अंधेरे का सहारा लेकर बचे थे। उस दिन अगर शत्रु की सेना थोड़ी आगे बढ़ आती तो यह कहानी कोई दूसरा ही लिखता। एक दिन ऐसा ही भंगाली में भी हुआ और फिर दुख की घटना तो और भी भयानक थी। उस संकट काल में जिन्हों ने सब कुछ त्याग कर सीमा सुरक्षा का कार्य भी संभाल रखा था, उन में जैलदार चर्णदास जमादार जगत सिंह दोनों सब से आगे थे। स्वर्गीय जगन्नाथ वैद्य बी० ए० ने भी हमारे गांव के कार्यालय में लिखने पढ़ने का कार्य बड़ी कुशलता से निभाया था। मैं उन दिनों अपने गांव के स्कूल मैं अध्यापक था मगर बच्चों को पढ़ाने का समय मेरे पास कहां था! हमारे हैडमास्टर ठाकुर त्रिपत सिंह मेरे काम पर प्रसन्न नहीं थे फिर भी उन्हों ने मेरे खिलाफ कुछ नहीं किया था। मेरे कार्य में स्वर्गीय मास्टर दुनि

होता जा रहा था कि अब हमारे गांव पर भी आपत्ति आने वाली है।

उन दिनों हमारे ग्रामों में बसने वाले मुसलमान लोग बड़े भयबीत हो रहे थे। उन्हें यकीन था कि वे अपनी जानें बचा कर पाकिस्तान नहीं जा पाएंगे, हालंकि हमारे गांव से ५ मील दूर पाकिस्तान था। हिन्दू मुसलमानों की तरह निर्दयी नहीं थे। सीमा पार करते हुये मास्टर सरदार खां तथा उस के समस्त परिवार की हत्याओं पर हज़ारों लोगों ने शोक मनाया था। सूचना मिलते ही मैं और पं० बैज नाथ तुरन्त उस स्थान पर पहुंचे जहां वह परिवार मरा पड़ा था। हम दोनों ने उन सब के शवों पर मिट्टी डाल कर उन की अन्मित क्रिया की थी। उन के अतिरिक्त एक दो मुसलमान परिवार और भी मारे गये थे फिर भी अधिकतर मुसलमान लोग उस क्षेत्र से दयावान हिन्दुओं के कारण बच कर पाकिस्तान चले गये थे। कुछ मुसलमान परिवार तो हमारे उजड़ने के समय हमारे साथ जम्मू आ गये थे जो स्यालकोट के रास्ते पाकिस्तान चले गये थे। हमारे इलाके में बसने वाले मुसलमानों से जो कुशल बर्ताव हुआ उस की उन दिनों मिसाल मिलना बहुत कठिन दिखाई पड़ता है।

उजड़ने के बाद कई बार जब कभी हमारे इलाके के पढ़े लिखे लोग ईकट्ठे हो कर बैठते और बातों बातों में बीती कहानियों को दोहराया जाता। हर एक बात पर विचार होता। कभी कभी स्वर्गीय मास्टर मेजर सिंह जी की रचना "तारीख चिब्बाल" की चर्चा चल पड़ती। उन के इस महान कार्य की बातें भी होतीं। इतिहास के महत्व को ध्यान में रखते हुये १९४७ की उथल पुथल का लिखा जाना भी बड़ा ज़रूरी समझा जाता रहा। यह एक बड़ा कठिन काम था। इसे कौन करे? बातें सब करते थे पर इस की कोई भी अपने सिर ज़िम्मेदारी लेने को त्यार न था। इस ज़माने में इतना फालतू समय किस के पास है जो ऐसे लम्बे कार्य में लगा रहे। जब कि हरेक व्यक्ति अपना अपना पेट भरने के चक्कर में दिन रात भटक रहा है। किसी को दूसरे के साथ बात करने तक कि फुर्सत नहीं है। आज अगर कोई अपना आदमी भी मर जाए तो उस के अन्तिम संस्कार में शामिल होने तक का समय नहीं निकल सकता है। लोग धन कमाने के पीछे लगे हुये हैं। आज के ज़माने में ऐसा काम कौन करेगा जिस के लिये लम्बे समय की ज़रूरत हो और उस से किसी प्रकार का लाभ प्राप्त होने की कोई आशा भी न हो।

इस काम को अगर कुछ समय पहले कर लिया जाता तो इस के करने में आसानी रहती। इस समय जब कि उन घटनाओं को जानने वाले बहुत लोग मर चुके हैं। उस वक्त की उचित जानकारी मिलना मुश्किल ही नहीं असम्भव हो चुकी है। आज की पीढी गुजरी बातों को भूल चुकी है। लोग नई हवा में उड़ने लगे हैं।

इस विषय पर ठाकुर सिंधूरी सिंह से कई बार बात चीत और सोच विचार होता रहा। वे बड़े सूझ बूझ रखने वाले और अनुभवी हैं। उन्होंने भी इस इतिहास की रचना पर बल दिया और मुझे इस काम को करने के लिये प्रेरित किया। मेरा उन से बड़ा प्रेम है मैंने उन के आदेशानुसार १९७२ में काम शुरू कर दिया। मेरी हर्दिक इच्छा थी कि यह काम उन के जीवन काल में ही पूरा हो जाये। मैंने इस के लिये बड़ी मेहनत की और अपनी बुद्धि अनुसार काफी ज़ोर मारा। यह काम लम्बा और मुश्किल था। इस के करने में मुझे अनेक प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ा मगर भगवान की कृपा और शहीदों की आर्शीवाद से मेरा यह कार्य मेरी इच्छा के अनुसार पूरा होता गया। जब मैंने अपनी कहानी के एक भाग को स्वर्गीय ठाकुर सहदेव सिंह को पढ़ कर सुनाया तो उन्होंने इसे बड़ा पसन्द किया मगर इस में एक बात और बढ़ा दी। उन्होंने कहा अगर इस इतिहास में शहीदों के नाम और ग्राम भी दिये जांए तो इस को चार चांद लग जांएगे। इस में जीवन आ जाएगा। मैं ठाकुर साहब के आदेश से सहमत हो गया। यह काम बड़ा कठिन था इस को पूरा करना आसान न था फिर भी मैंने शहीद होने वालों की स्थान स्थान पर घूम फिर कर खोज शुरू कर दी। इस के करने में मुझे रगां रगं की बातों के उत्तर देने पड़े। जब में किसी गांव में किसी घर पूछता कि आप के घर के १९४७ के दिनों कौन कौन, लोग मारे गये थे? तो, झट उत्तर मिलता था क्या उन मरने वालों के घर वालों की पैंशन लगेगी या पैसे मिलेंगे। कई लोग यह भी समझते थे कि यह जो कई वर्ष पहले मारे गये लोगों के नाम लिखने के लिये घर घर जा कर भारी कष्ट उठा रहा है इसे कुछ तो लाभ ज़रूर होगा नहीं तो ऐसा करने की किसी को क्या ज़रूरत पड़ी हुई है। मैं ने यह काम करने का पक्का फैसला किया हुआ था। इस लिये मैं लोगों की ऐसी बातों को सहन करता हुआ अपने काम में लगा रहा। कई बार कुछ बातों को सुन कर मैं अपने आप को भी कोसने लग जाता, फिर

कुछ सोच कर अपने काम पर किसी न किसी गांव को चला जाता। इस कार्य में मेरे लिये सब से बड़ी मुश्किल यह थी कि हिन्दूओं में चार साल के बाद मरने वाले की अन्तिम क्रिया चौवर्षी हो जाती है और फिर मरने वाला पित्र बन जाता है। आठ दस वर्षों के बीत जाने पर मरने वाले का उस के घर वाले नाम भूल जाते हैं। यह तो ३० वर्ष होने को आये थे। कई लोगों को तो अपने परिवार के मरने वालों के नाम तक भूल चुके थे। मैं ने यथा शक्ति प्रयास किया जितना भी काम हो ठीक हो और जो भी नाम दिये जायें उन में कोई गल्त न हो ताकि असल तसवीर उभारी जा सके। मैं ने अपना यह महान कार्य हज़ारों लोगों से मिल कर और सैंकड़ों गांवों में घूम कर बारह महीनों में पूरा किया। इस काम में मुझें ठाकुर कृपाल सिंह चिब और स्वर्गीय पन्डित ज्ञान चन्द देडा का पूरा पूरा सहयोग प्राप्त रहा। वे दोनों मेरे साथ पागलों की तरह गांव गांव और द्वार, द्वार घूमते रहे।

इस इतिहास में लिखी गई सब घटनांए सच्ची और नाम ठीक हैं। जो कुछ हुआ इस में लिख दिया गया है यदि इस में कोई कमी रह गई हो तो इस में मेरा कोई दोष नहीं होगा अपितु उस व्यक्ति का होगा जिस ने मुझे उस घटना के बारे में बताया है। गाखड़ी तक तो मैं स्वयं वहां था। वहां तक तो सब कुछ मेरी अपनी आंखों ने देखा है। मगर पीरमोंगा और कबुतरगला के कत्लेआम मेरे बाद हुये थे। उन के बारे में सच्चाई जानने की कई आदमियों से मैंने पूरी कोशिश की है। मेरी समझ के अनुसार सब बातें ठीक और सच्ची हैं। इन की पुष्टी पण्डित परस राम, ठाकुर चैंन सिंह, सूबेदार कृपा राम और मास्टर ब्राह्मा सिंह ने भी की है। यह सब बड़े समझदार और पढ़े लिखे लोग हैं। मास्टर ब्राह्मा सिंह ने तो पीरमोंगा का हत्या कांड आम के पेड़ से देखा था। वे उस समय रात के अंधेरे में आम के पेड़ पर छुप कर बैंठे थे जिस समय नीचे भयानक नरसिंहार हो रहा था।

शहीदों की सूची से साफ पता चलता है कि हज़ारो लोगों का मारा जाना कोई साधारण बात नहीं होती और न ही अल्प संख्या में शत्रु इतने लोगों को मार सकता है। देवा वटाला पर यह हमला पाकिस्तान सरकार ने एक योजना के अनुसार करवाया था। उस समय पाकिस्तानी सेना के साथ कबाइली ज़रूर थे फिर भी हमला करने की जिम्मेदार पाकिस्तानी सेना ही थी। आक्रमनकारी समय के अनुसार भयानिक विनाशिक शस्त्रों से

सुसज्जित थे। उस हमले में जितने अत्याचार पाकिस्तानी सेना ने शस्त्रहीन ग्रामीन जन्ता पर किये, उन को देख और सुन कर संसार के हरेक सभ्य व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाता है। सेनाएं देश विजय करती हैं। देवा-वटाला के अतिरिक्त पाकिस्तानी सेनाओं ने मीरपुर, राजौरी, पुन्छ, बारामूला मुज़फराबाद और ऊडी ही नहीं जम्मू कश्मीर की तमाम सीमा पर ऐसा ही किया। पाक सरकार का ऐसा करना बिल्कुल अनुचित और शर्मनाक था।

देवा-वटाला पर बड़े हमले की तैयारी पाकिस्तान में किस ढगं से की गई ? पाकिस्तानी गुण्डों और कबालियों को कैसे सुशस्त्र किया गया इस की कहानी मुझे सरदार अमर सिंह ने सुनाई जो उस समय लायलपुर (फैसलाबाद) पाकिस्तान जेल में बन्दी था। "पाकिस्तान में उन दिनों आम डण्ढोरा पीटा जाता था कि देवा-वटाला की विजय के लिये जो लोग भाग लेने के लिये आगे आएंगे उन्हें गुजरात और जहलम की सैनिक छावनियों से शस्त्र मिलेगे। जो लोग वहां शहीद हो जांएगे उन को दिये गये हथियार उन से वापिस नहीं मांगे जायेंगे और जो जीवत रहेंगे उन से हथियार तो ले लिये जायेंगे मगर लूट का माल नहीं मांगा जाएगा। युद्ध में भाग लेने वाले गाज़ी कहलांएगे और वहां मरने वालों को शहीद का दर्जा दिया जायेगा, इस बात की पुष्ठि स्वर्गीय डॉक्टर लेहना सिंह के भाषण से भी हो जाती है जो उन्हों ने १९४८ में जालन्धर शहर में दिया था। सरदार अमर सिंह ने यह भी बताया था कि उस बड़े हमले में मारे गए पाकिस्तानियों की लाशों के कई ट्रक पहुंचे थे जिन को कई कब्रस्तानों में दफनाया गया था। इस से साफ पता चल जाता हैं कि उन दिनों पाकिस्तानी कैसे कामों में व्यस्थ थे।

देवा-वटाला की प्राजय के बाद जब भारतीय सेनाएं अधिक संख्या में जम्मू कश्मीर में पहुंच कर देवा-वटाला की और बढीं। उन का उस क्षेत्र में शत्रु सेना के साथ ज़ोरदार टकराव हुआ, और पाक सेना मूंह की खा कर पीछे चली गई। एक बार फिर यह क्षेत्र शत्रु से मुक्त करा लिया गया। उस क्षेत्र में हमारे जवान दिन को गश्त लगाकर रात को अपने हैडक्वार्टर छम्ब में आ जाते थे। उन दिनों गेहुं की फसल हमारे लोगों ने खुद काटी थी। सारा इलाका कई महीनों तक हमारी सेना के गश्ती अधिकार में रहा। उन दिनों वहां की निगरान फौज के कमांडर ने अपने डिविजन हैड़क्वाटर को इस इलाका को अपने स्थाई अधिकार में लेकर छम्ब के स्थान पर वटाला को अपना सैनिक केन्द्र बनाने के लिये लिखा था। कमांडर के उस पत्र के उतर

में डिविजन हैडक्वाटर ने उस से पूछा था कि क्या वह अपनी सेना के बल पर ऐसा करने के योग्य है? अगर है तो लिखे? उस के उतर में क्षेत्रीय कमांडर ने अधिक सहायक सेना के बगैर आगे बढ़ने की अनुमति मांगी थी मगर उस के बाद उसे ऐसा क्यों न करने दिया गया यह बात एक पहेली बन चुकी है।

इस पहेली पर रोशनी डालने के लिये लेखक एक विचित्र घटना लिख देना उचित समझता है। जो बिल्कुल सच्ची और अपने साथ बीती हुई है। इस घटना को यदि पूर्ण रूप में लिखा जाये तो कुछ पाठक इस के लिये गप होने का संदेह करने लगेंगे। क्यों कि जिस व्यक्ति के साथ लेखक की बात हुई थी वह इस समय जीवत नहीं है। इस लिये मैं इस को थोडा घटा कर लिखूंगा। हुआ यूं कि गाखडी के कत्लेआम के दिन मैं अपनी माता जी के साथ एक ऐसे सीधे रास्ते से निकला जो बिल्कुल छोटा मगर खतरनाक था। भगवान ने हमारा साथ दिया, रास्ते में हमें कोई आपत्ति नहीं आई और हम २५ नवम्वर को अखनूर पहुंच गये। २६ नवम्वर को धमूली निवासी पृथि सिंह मुझे मिला उस ने मुझे बताया कि पीरमोंगा नाथ की समाधी के आस पास हमारे इलाके के हजारो लोग शत्रु के घेरे में फंसे हुये हैं। यदि उन्हे जल्दी सैनिक सहायता न मिली तो वे सब मारे जांएगे। अगर उन्हे तुरन्त सहायता मिल जाये तो काफी बचाए जा सकते है। मैं उस समय इस के लिये किस को कहता और दुखियों की मदद करता यह कठिन समस्य मेरे सामने थी। इस के लिये मैंने मास्टर गुल्देव सिंह चिब से सम्पर्क किया और उन्हे विकट स्तिथि से अवगत कराया। पहले तो वे सोच में डुब गये। उसके बाद उन्होंने मुझे एक गाड़ी देकर बक्शी गुलाम मोहम्मद के पास गुलामी बाग गैस्ट साऊस में भेज दिया। मास्टर जगबीर सिंह भी उस समय मेरे साथ थे।

बक्शी गुलाम मोहम्मद उस समय जम्मू कश्मीर के चीफ एमरजैन्सी आफिसर थे। जम्मू कश्मीर में कहीं भी सेना भेजना उन के हाथ में था। गस्ट हाऊस पहुंचने पर मेरी उन से वारता हुई। बक्शी साहब ने मेरी बातों पर ठीक ढगं से ध्य.न न देने पर मेरी उन से गर्मा गर्मी हो गई। मेरी सच्चाई को वह सहन नहीं कर सके और बहुत जल्दी गुस्से में आ गये। क्रोधित बक्शी के मूंह से ऐसे शब्द भी निकल पडे जो समय के अनुसार ठीक नहीं थे। उन से स्पष्ट हो गया कि देवा-वटाला के विनाश के लिये बहुत हद तक उस समय के जम्मू कश्मीर के सत्ताधारी लोग थे।

बक्शी जी से झडप के बात हम तीनों जम्मू के गवर्नर लाला चेत राम चौपडा से प्रेड ग्राऊंड जम्मू में मिले। उन को सारी कहानी सुनाई। हमारे मूंह की बातों को सुन कर वह बड़े दुखी हुये। वे हमारे साथ बड़ी हमदर्दी से पेश आये। वे हमें अपनी कार पर बिठा कर सतवारी ले गये और वहां जा कर उन्हों ने हमारी भेंट ब्रिगेडियर कुलवन्त सिंह और ब्रिगेडियर रावत से कराई। इस के साथ ही उन्हों ने दोनों उच्चपदाधिकारियों को देवा-वटाला का महत्व भी समझाया। उन दोनों ने भी हमारे घेरे में फंसी हुई जनता को बचाने के लिये हमारी कुछ सहायता नहीं की और हमें दोबारा बक्शी साहब और डॉक्टर कर्ण सिंह जी के मामा निचिन्द चन्द से मिलने की सलाह दी। बक्शी जी को हम पहले ही मिल आए थे। केवल ठाकुर निचिन्द कटोच से मिलना बाकी था। चोपडा साहब हमें अपने साथ शाही महलों में ले गये। वहा ठाकुर साहब से मिल कर चोपडा साहब ने तमाम हालात से उन्हें अवगत किया, और उन्हें भी देवा-वटाला के महत्व के बारे में बहुत कुछ समझाया और यहां तक भी कह दिया कि अगर देवा-वटाला को इस समय न बचाया गया तो जम्मू का बचना भी मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने घेरे में आये लोगों को हर कीमत पर बचाने के लिये बल दिया इतना करने पर भी हमारी सब की मेहनत विफल रही। ठाकुर निचिन्द चन्द भी हमारे लिये कुछ न कर सके। हम सब निराश हो कर लौट आए। हम अपने मरते लोगों के लिये कुछ भी न कर पाए। विवश होकर उन को भगवान के न्याय पर छोड़ना पड़ा। हैरानी इस बात की है कि भारतीय सेना का ब्रिगेड़ कमाड़र जो उस समय ला एण्ड आर्डर का ज़िम्मेदार भी था और गवर्नर चोपडा मरने वालों को बचाने के लिये एक दस्ता सेना की सहायता भी नहीं भेज सका। क्या अब भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता है कि देवा-वटाला किस तरह तबाह-व-बर्बाद हुआ। २३ नवम्बर १९४७ को देवा वटाला पर बड़ा हमला हुआ, जनता मरती रही। २५ नवम्बर की शाम को पीरमोंगा के पास तबाही हुई २६ को मोहकडयला की त्रासदी और २७ को कबुतर गला का कत्लेआम हुआ। मगर अफसोस कि जम्मू कश्मीर के शासिकों की ओर से किसी प्रकार की भी कोई सहायता नहीं मिल सकी और हज़ारों इन्सानी जानें नष्ट हो कर रह गई। इतना कुछ होने के बाद उल्टी यह खबर उडा दी गई कि उस इलाके के लोग बड़े वीर और बहादूर थे अगर वे लूटमार के लिये बाहर न गये होते तो उन्हें कोई नहीं मार सकता

था। इस से ज्यादा इस इलाके के साथ और क्या अन्याय हो सकता था।

छम्ब के सैनिक कमाडर की इच्छा अनुसार दूरदर्शता से यदि देवा-वटाला क्षेत्र पर पूर्ण अधिकार कर लिया होता, वह इलाका हमारे पास होता तो आज की अनगणित कठनाइयों का सामना न होता और आधे पाकिस्तान पर हमारी सैनिक सरदारी होती। पाकिस्तान हमारे सामने दम नहीं मार सकता। छम्ब का मुंह देखना उसे कभी नसीब न होता और हज़ारों लोगों को वर्षों कैम्पों में सडना न पडता। इसे समय की भूल कहो या राजनीतिक चाल का कोई भी नाम दे लो मगर यह सच है कि इस से अपने देश को बड़ी हानि उठानी पड़ी थी और अब भी पड़ रही है। उस के बाद पहली जनवरी ११४९ को युद्ध विराम लागु हुआ था। जब विराम रेखा खींची गई तो उस इलाके के अधिकतर भाग को पाकिस्तान को दे दिया गया था। यह रेखा देवा-वटाला को दो भागों में चीरती हुई उत्तर को निकल गई थी।

मार्च १९५० में उस इलाके के पश्चिमी क्षेत्र के लोगों को अस्थाई तौर पर बसाने का फैसला हुआ था। नगरोटा के शर्णार्थी कैम्पों से उठा कर उन्हें जम्मू और रणबीर सिंह पुरा की तहसीलों में बसाया गया था। जो लोग कैम्पों से बाहर थे उन को भी ज़िमीनें दी गईं। बसाओ के समय कैम्पों में रहने वाले हरेक परिवार को ८ एकड़ नहरी और १२ एकड़ विरानी जमीन के साथ ५००-५०० रुपये भी दिये गये थे। आगे चल कर पता चल जाएगा कि इस इलाके के पश्चिमी भाग के लोगों को बसाने के बाद देवा वालों को पुणः अपने अपने घरों को लौट जाने के निर्देश मिले थे। उस समय वहां के अधिकतर परिवार अपने अपने पुराने घरों को चले गये थे और कुछ सीमा की घटनाओं के भय से डरते हुये इधर रह कर ही मेहनत मज़दूरी से अपना अपना पेट पालते रहे। जो गये थे वे भी १९६५ के पाक युद्ध से पीडत हो कर और जानो माल की क्षति उठा कर पुणः लौट आए थे। १९६६ में बहुत से घरानों को हीरा नगर, अनन्दपुर, रामगढ़ और सेई में वसा दिया गया था। कुछ मकवाल में भी बस गये थे फिर भी कई लोग अपने घरों को लौट गये थे।

१९७१ में फिर बर्बादी हुई। बेघर होने वालों को दोबारा कैम्पों में भरती किया गया। युद्ध विराम होने पर शिमला संधी के अनुसार पाकिस्तान से जीता हुआ इलाका लौटा देने के साथ-साथ छम्ब का उपजाऊ और सैनिक दृष्टि से भारी महत्वपूर्ण क्षेत्र भी नई कन्ट्रोल लाइन को सीधा करने के लिये पाकिस्तान को दे दिया गया! इस तरह देवा के साथ छम्ब

भी हमेशा के लिये हम से चला गया और पाकिस्तान की सीमा वटाला से और आगे बढ़ कर मुनावरतवि के पश्चिमी तट तक आ गई। भारत सरकार की यह दूसरी बड़ी भूल थी। इस भूल के परिणामों का देर के बाद पता चलेगा ! इस समय देवा और छम्ब के अठारह हज़ार परिवार बेघर, बेपर और भूमीहीन हो कर रह गये थे। वह लोग लम्बे समय तक कैम्पों में पड़े रहे। अन्ततः उन को कई स्थानों पर खड्डों और नालों में कुछ पैसे देकर बसाया गया।

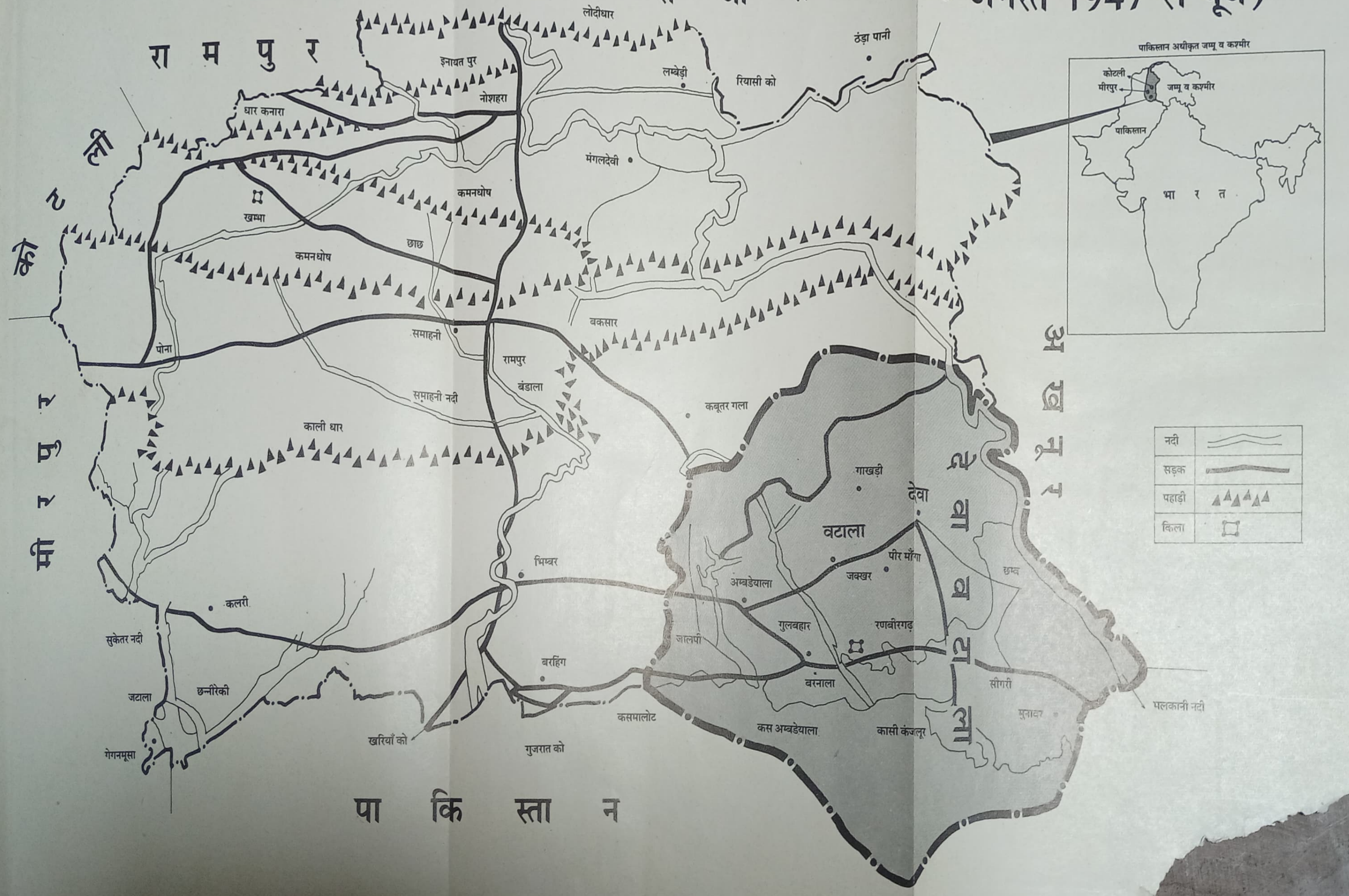
यह हैं अपनी जन्म भूमी के चित्र की आड़ी, तिर्छी लकीरें। विस्तार से आप को पढ़ने पर सब कुछ पता चल जायेगा। मैं ने इस छोटे इतिहास को देवा-वटाला का नाम दिया है। इस के पढ़ने से आने वाली पीढ़ी को अपने पूर्वजों की जन्म भूमी के बारे में कई बातों का पता चल सकेगा। इस के साथ साथ यह भी मालूम होगा कि १९४७ में जब भारत स्वातन्त्र हुआ तो हम पर क्या बीती, स्वातन्त्रा के लिये हमें कितना भारी बलिदान देना पड़ा, यह सब बातें इतिहास ही से मिलती हैं। इसी लिये तो इतिहास लिखे जाते हैं। वैसे तो इसे मैं ने १९८३ में पूरा कर लिया था मगर आर्थिक प्रेशानी के कारण यह छप नहीं सका था। अब मैं ने इसे छपाने का पक्का विचार बना लिया है। अगर भगवान ने कृपा की तो इसी वर्ष यह छप कर पाढ़कों के पास पहुंच जाए गा। इस के छपने से मेरे मन को शान्ति मिलेगी और वर्षों से लगे इस काम में मैं सफल हो जाऊंगा।

मेरा यह कार्य पूरा होने पर जब "देवा-वटाला पाठकों के हाथों में होगी, इस के लिये हमारे इलाके के लोग क्या कहेंगे मुझे इस से कुछ लेना देना नहीं है। मुझे केवल यहि खुशी है कि मैं ने जो काम अपने हाथ लिया था। वह परमेश्वर की उपार कृपा से पूर्ण हुआ। इस के लिये मैं भगवान का और जिन्हों ने मुझे इस को लिखने के लिये प्रेरित किया या जिन्हों ने मुझे इसे पूरा करने में किसी न किसी रूप में सहायता दी, मैं उन सब का हार्दिक धन्यवादी और अभारी रहुंगा।

१३ जन्वरी १९८८।

आप का शुभचिंतक
बलदेव सिंह चिब

मानचित्र
तहसील भिम्बर
(15 अगस्त 1947 से पूर्व)



देवा-वटाला इतिहास के झरोके से

देवा-वटाला पर सदियों चिब्बों की सरदारी रही। यदि कोई इतिहास का विद्यार्थि चिब राजपूतों के बारे में कुछ जानने का इच्छुक हो तो उसे बहुत दूर पीछे जाना होगा। आज कल यह लोग जम्मू प्रांत के विभिन्न स्थानों पर आबाद हैं। आज से चालीस वर्ष पहले देवा-वटाल में बसते थे और इलाका चिब्भाल के यही लोग गोर्व थे। इस से भी पीछे चलें तो नाह और ढन के गांव इन्ही के बसाये हुये तो हैं। "छत्तें की वां" चिब्बों के इतिहास की आज भी अपने मुंह से ग्वाई देती है। वह आज भी बताती है कि वह भी दिन थे जब मेरे किनारे इस उज्जवल इतिहास वाली जाती के हीरे मोती और शस्त्र सुरिक्षत रहे थे। मैं ने उन्हें वर्षों अपनी छाती में छुपा रखा था। जंगो भट्ट की इमानदारी और वफादारी की भी कोई सीमा थी जिस ने कभी खिलने वाली कलि की आशा लगाये अपनी जवानी का बड़ा भाग व्यतीत कर दिया था।

इतिहास के खोजी को अभी रुकना उचित नहीं रहेगा। उसे और पीछे जाना होगा। अब हमारा ध्यान उस क्षेत्र की ओर जाता है जिस के पहाड़ और घाटियां, भिम्बर नदि के मोड़, सुन्दर और अकर्षित दृष्य, बाग़ और बावलियां, महल और सैरगाहें कभी हरेक मानव को अपनी ओर खींच लेती थीं। कश्मीर की सैर पर जाते हूये जब मलिका नूर जहां पहली बार भिबर ठहरी थी। वह वहां के सोहावने बातावरण को देख कर वड़ी प्रसन्न हुई थी। खुशी के आलम में उस के मुंह से यह शब्द दिकल पड़े थे "वास्तव में यह स्थान राजधानी के योग्य है। जिस किसी ने भी इसे इस कार्य के लिये चुना होगा मैं उस की बुद्धि और दूरर्दाशता की तारीफ करती हुं" नूर जहां से पहले सम्राट अकबर भी भिबर को देख कर बड़ा खुश हुआ था। उस ने इस नगर का पुराना नाम बदल कर अपने नाम पर अकबराबाद रखा था। वह

नाम अकबर के जीवन समाप्त होने के साथ ही मिट गया और जनता ने फिर पुराने नाम को अपना लिया था।

भिबर वह नगर है जिस पर चिब्बों के पूर्वजों ने कई पीढ़या शासन किया था। यह नगर उस इलाके की सैंकड़ों वर्ष पुरानी संस्कृति का केन्द्र रहा है। उस नगर से चार मील की दूरी पर कभी एक कारवां मग़लूरा गांव के पास कुछ दिन विश्राम करने के लिये रूका था। उस कारवां की अपनी कोई मंजल न थी और उस का न ही कोई निश्चित लक्ष्य था। उस का ध्यय गुप्त और मंजल अनजानी थी।

उस कारवां के नेता राजा नारायण चन्द कटोच को क्या मालूम था कि यह स्थान ही उस की मंजल बनेगा और भिबर नगर उस की औलाद की राजधानी होगी जिस की ऊंची पहाड़ी पर स्थित किले के बुर्ज पर स्वास्तिका से सुशोभित भगवा ध्वज फहराता हुआ दूर दूर तक दिखाई देता रहेगा। भिबर के पुराने शासकों का नामोनिशान मिट जायेगा और राजा नारायण चन्द का होनहार राजकुमार चिब चन्द अपने नाम पर नया वंश चलायेगा और कोहस्थान भिबर की राजकुमारी पुंजा देवी उस की महारानी बनेगी। कहां वह अपने माता पिता की एक मात्र राजकुमारी जिस की सुन्दरता की कोहस्ताने भिबर के सैंकड़ो मीलों में धूम फैली हुई थी जिस के साथ विवाह करने के लिये हज़ारों राजकुमार बेताब और बेकरार थे। मगर हायेरी किस्मत कहां राजकुमारी भिबर और कहां अपने राज्य कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) से निष्कासित राजकुमार? भगवान की इच्छा ही ऐसी थी।

मग़लूरा में दो तीन दिन विश्राम करने के बाद राजा नारायण चन्द ने आगे बढ़ने का विचार बनाया। उसे अगले सफर के लिये पैसों की ज़रूरत पड़ी। उस के लिये राजा ने अपना एक बहुमूल्य भूषण अपने एक अधिकारी को देकर उसे बेचने के लिये शहर में भेजा। राजा की आज्ञा अनुसार वह कर्मचारी उसे लेकर शहर चला गया। वहां जा कर जब उस ने वह भूषण जोहरी को दिखाया और उसे बेचने के लिये कहा। ज़ोहरी उस बहुमूल्य भूषण को देख कर हैरान रहा गया। उस के मन में शक पैदा हुआ कि हीरों जड़ित इतना बहुमूल्य भूषण चोरी का ही हो सकता है। यह एक साधारण व्यक्ति का तो हो नहीं सकता है। जोहरी के पूछने पर कि यह आप के हाथ

कैसे लगा। अधिकारी ने बताया यह भूषण मेरे स्वामी राजा नारायण चन्द कटोच का है जो इस समय आप के राज्य के मगलूरा गांव में पडाव डाले हुये हैं। उन के आदेशानुसार मैं इसे आप के पास बेचने के लिये लाया हूं। फिर भी जोहरी उस की बातों के साथ सहमत नहीं हुआ और उसे भूषण के साथ भिंबर नरेश के सामने पेश कर दिया। भिंबर नरेश को जब राजा नारायण चन्द के आगमन का पता लगा तो उसे राजा ने अपने महल में बुला कर राजकीय अतिथि के रूप में बड़े सम्मान के साथ अपने पास ठहराया। उस समय राजा का नौजवान राजकुमार चिब चन्द भी उस के साथ था। राजकुमार को देखते ही भिंबर नरेश के मन में वह राजकुमार अपनी राजकुमारी के लिये उचित वर प्रतीत हुआ। भिंबर नरेश अद्वितिय राजकुमार को देख कर मन ही मन में बड़ा खुश होगया क्योंकि उस के घर कोई पुत्र रत्न न था। राजा को इसी प्रकार के सुन्दर, स्वास्थ और कुलीन राजकुमार की ज़रूरत थी।

इस तरह कुछ दिन राजा नारायण चन्द भिंबर नरेश का सरकारी महमान बना रहा। भिंबर नेरश ने उस की बड़ी सेवा की और आदर दिया। उस के बाद राजा से अपनी राजकुमारी के राजकुमार चिब चन्द के साथ शुभ विवाह के लिये प्रार्थना की। राजा नारायण चन्द खुशी से मान गया और शुभ महुरत आने पर चिब चन्द का विवाह कोहस्थान भिंबर की सुन्दर राजकुमारी पुंजा देवी से समपन्न हो गया। भिंबर नरेश के जीवन काल तक राजा चिब चन्द का समय बड़े अनन्द और शान्ति से व्यतीत हुआ। राजा का जीवन अन्त होने पर दरबारियों ने उल्टी चालें चलनी शरू कर दीं। राजा चिब चन्द के खिलाफ बग़ावत हो गई और सरदारों ने अपने राज्य पर किसी बाहर से आये व्यवित को अपना राजा मानने से इन्कार कर दिया। राजा चिब चन्द के लिये यह बड़ा मुश्किल वक्त था। आखिर वह भी राजपुत्र था। उस ने भी जन्म से लेकर बहुत कुछ देखा था। राजनीति में वह पहले ही निपुण था। उस ने हालात के अनुसार ऐसे ढंग से काम लिया और स्थिति को ऐसी वुद्धिमत्ता से संभाला कि कुछ दिनों के अन्दर ही कई सरदार उस के सहयोगी बन गये। कुछ मारे गये। विरोधी घुट में कमज़ोरी आ जाने पर कुछ डर के मारे क्षमा मांग कर शर्ण में आ गये। राज्य पर पूर्ण नियन्त्रण हो जाने पर राजा चिब चन्द की मनोकामना पूरी

होगई। राजा नारायण चन्द उस शुभ घड़ी की देखने से पहले ही स्वर्गवास हो चुके थे।

वातावरण शांत हो जाने पर भी विरोधी लोग समय की प्रतिक्षा में लगे रहे। जैसे कि ऊपर लिखा जा चुका है। सब कुछ होने पर भी राजा चिब चन्द की कार्याकुशलता और बुद्धिमत्ता के सामने किसी की भी पैंश न चल सकी। विरोधियों से निपट कर राजा ने दों तीन वर्षो के अन्दर अन्दर अपने राज्य को सुदृढ बनाया और बढाया। उस ने ऐसी योगिता और नीती से राजपाठ का प्रबन्ध चलाया जिस को देख कर उस के शत्रु भी उस का लोहा मान गये। वह राजा बड़ा शक्तिशाली और बहादुर सिद्ध हुआ। राजा स्वयं तो कटोच वंशीय था मगर उस के बाद उस की औलाद चिब कहलाई। इस समय जितने भी हिन्दू मुसलमान चिब आप को नज़र आते हैं। वे तमाम उस वीर प्रतापी राजा की औलाद हैं। आज कल के चिब नौजवान तो यह भी नहीं जानते हैं कि हिन्दू चिब्बों के अतिरिक्त और भी हमारे चिब भाई हैं। हैं, और बहुत हैं। वे सब पाकिस्तान में जहलम और गुजरात के ज़िलों में और जम्मू कश्मीर के मीरपुर ज़िले में लाखों की संख्या में रहते हैं। वे खुशहाल और खातेपीते लोग हैं। देश के विभाजन से पहले उन में से अधिकतर बड़े बड़े जागीरदार थे। कुछ जागीरदार तो न थे फिर भी बड़े ज़मीनदार और पट्टेदार थे। समय और हालात के अनुसार वे सब मुसलमान हो गये थे। उस सारे क्षेत्र को जिस में हम सब रहते थे "चिभाल के नाम से प्रकारा जाता था।

पाकिस्तान या कश्मीर के उन इलाकों में जो इस समय पाकिस्तान के अधिकार में हैं। यह लोग ठूठा-रायबहादुर पोठीराजगान, बकोहल, डाक, खल, सिमली, शैंखपुर, सेरला पिन्डी, चौकी, पंजेड़ी, भलवालकंला, कलरी, सहेलर, बावली, पिंड अज़ीज़, रहमानपुर, भलवाल खुर्द, तूत खुर्द, तूत कलां, बलानी बैंसा, जकवां, हस्साम, समवाल, लहड़ी, पोठी पन्सारी, कसगुमां चक नत्था, थोहीन, तोथिया, भ्रोट, मैंट्रो, मकवाल, नौरंग, नसेरा, अवहाल, करयाला, दाऊरा, खूईरट्टा, समानी, मलोट, बर्डाहिंग, भट्टियां, चकमरदानी, चक भागू, राजल, रामपुर, बंडाला, घाओलियां और लहड़ी नाम के ग्रामों में रहते हैं।

राजा चिब चन्द ने अपने राज्य को संगठित करने के साथ साथ उस ने

जनसाधारण के लिये भी बड़े काम किये। उस ने पीने के पानी के लिये कुएं खुदवाये, यात्रियों की सुविधा के लिये सराएं बनवाई और अपनी प्रजा को खुश रखने के लिये अनेक प्रयत्न किये। भिवर के पास उस ने अपने जन्म स्थान के नाम पर कांगड़ा नाम का नया गांव बसाया जो आज तक उस राजा की याद दिलाता है। राजा चिब चन्द बड़ा भाग्यवान और शक्तिशाली शासिक हो गुज़रा है। उस ने अपने राज्य की सीमाओं को दूर दूर तक बढ़ाया और बड़ी ठाठ बाठ से शासन कार्य चलाया। उस राजा की औलाद चिब कहलाई।

राजा चिब चन्द के बाद राजा कलसचन्द, राजा रूपाल चन्द, राजा रजान चन्द, राजा फेरी चन्द, राजा शान्ति चन्द और राजा गोजा चन्द, राजा संदीप चन्द (धर्मचन्द) राजा भूप चन्द आदी ने आठ पाढ़ियों तक बड़ी शान्ति से राज किया। और प्रजा को हर प्रकार से सुखी रखा।

चिब जाती की अगर तारीख के ज़माने से पहले की खोज की जाए तो इस का सम्बंध राजा कश्यप से जा मिलता है। जो भारत वर्ष का बड़ा शक्तिशाली और प्रकर्मी राजा हो गुज़रा है। महाराजा प्रेहलाद और बलि इसी वंश के सपूत थे। उन की धर्मिक कथाएं घर घर में होती हैं। इस वंश के राजे गुजरात कालियावाड के पूर्बी क्षेत्र कर्कूट देश में सैंकन्डो वर्ष तक राज करते रहे थे। भगवान की कृपा से जब यह वंश फला फूला और बढ़ा तो इस के कुछ वीर राजकुमार विजय की पताका फहराते हुये मुलतान तक आ पहुंचे। महाराजा कश्यप से २३४वीं पीढ़ी में राजा सुशर्म चन्द हुआ जो हस्तिनापुर के कुरू महाराजा दुर्योधन का बेहनोई था। महाभारत के युद्ध में उस राजा ने कोरवों का साथ दिया था। महाभारत के युद्ध से पहले वह राजा जालन्धर दोआब के पहाड़ी इलाके पर अपना अधिकार जमा चुका था। कांगडे का ऐतिहासिक गढ़ उसी राजा का बनाया हुआ बताया जाता है। महाराजा कश्यप की ४३८वीं और सुशर्म चन्द की २०४वीं पीढ़ी में राजा लछमन चन्द हुआ है। उस के दो बेटे थे। उन में बड़ा पदम चन्द था जो कांगडा का राजा बना और दूसरा पूर्व चन्द था जिस की औलाद जसवाल कहलाई। राजा पदम चन्द की सोहलवीं पीढ़ी में कांगडा का राजा मेघचन्द बना। उस के चार बेटे हुये। उस के बड़े राजकुमार का नाम

हरि चन्द था जिस की औलाद गलेरिया कहलाई कर्म चन्द की औलाद कटोच कही जाने लगी और कांगडा पर राज करती रही। उस के तीसरे बेटे प्रताप चन्द की औलाद उस के पोते चिब चन्द के नाम पर चिब कहलाने लगी और राजगान भिंवर के रूप में इतिहास में आई। उस के चौथे सपुत्र प्राग चन्द के बच्चे भौरिया नाम से प्रसिद्ध हैं और यह पूर्वी पंजाब के होशियारपुर ज़िले की ऊना तहसील में मिलते हैं।

मेघचन्द
↓
हरिचन्द — गलेरिया
कर्मचन्द | कटोच
प्रतापचन्द | नरायण चन्द | चिब चन्द ↓ चिब वंश इसी के नाम पर चला।
प्राग चन्द | भौरिया

जब कांगडा के राज्य पर हरिचन्द के बेटों का कब्ज़ा हो गया तो स्पष्ट था कि किसी दूसरे का वहां कुछ नहीं रहा। इस बात को ध्यान में रखते हुये दूसरे राजकुमारों के दिलों में कांगडा से बाहर किसी दूसरे भूभाग पर अपने लिये नये राज्यों की स्थापना के विचार पैदा हो गये। यह सोच कर प्रताप चन्द का बेटा नारायण चन्द कोटच अपने चारों राजकुमारों और कुछ अन्य विश्वास पात्र साथियों को साथ लेकर अपनी किसमत की प्रीक्षा के लिये कांगडा से पश्चिम उत्तर की ओर चल निकला उस का यह छोटा सा काफ़िला जम्मू के साथ साथ चपराड़ नाम के ग्राम से होता हुआ अपनी अनिश्चत दिशा की ओर बढ़ता गया। कई दिनों का लम्बा सफर करने के बाद भिंबर राज्य में प्रवेश कर गया। दो चार दिनों के पश्चात भिंबर राज्य की राजधानी भिबर शहर से चार मील दूर मग़लूरा नामक गांव में पहुंच गया और उसी गांव में कुछ समय विश्राम करने के लिये रूक गया।

उस के आगे की कहानी पहले लिखी जा चुकी है। राजा चिब चन्द के बाद उस की औलाद ने आठ पीढ़ियों तक अमनोचैन से राज्य प्रबंध चलाया। इस वंश के आठवें राजा धर्म चन्द हुये जिन को दिल्ली के लोदी बादशाह इब्राहीम ने अपने निजि इलाज के लिये दिल्ली बुला लिया। जब बादशाह राजा के इलाज से रोग मुक्त हो गया और राजा अपने राज्य को लौटने से पहले बादशाह से मिलने और जाने की अनुमति लेने के लिय महल में गया। राजा ने साधारण बात चीत के बाद अपने घर जाने की आज्ञा मांगी। इस पर बादशाह ने कहा "अभी मेरी बिमारी पूरी तरह ठीक नहीं हुई है। मेरी तबियत नासाज है। इस हालत में तुम्हारा जाना ठीक नहीं है। जब भी मैं ठीक हो जाऊंगा चले जाना।" बादशाह ठीक हो चुका था। अब बिमारी का केवल बहाना था। राजा को यह कह कर रोक लिया गया और कुछ दिनों के बाद उसे बलपूर्वक मुसलमान बना कर उस का नाम शादाब खां रख दिया गया। फिर अपनी साली जन्नत जहां से उस का विवाह करवा दिया। दिल्ली में बादशाह के हुकम से उसे एक सुन्दर महल दिया गया। यह राजा आज तक "शादी शहीद" के नाम से प्रसिद्ध है और उस की समाधी पर जो भिंबर शहर से कुछ मीलों की दूरी पर आधी ढक पर स्थित है। हिन्दू और मुसलमान चिब दोनों अपने बच्चों के मुण्डण संस्कार आज भी वहां करते हैं और उसे अपना कुलदेवता मानते हैं।

कुछ वर्ष दिल्ली में रहने के बाद राजा धर्म चन्द (शादाब खां) को अपनी पहली रानी और जन्मभूमी का प्यार स्ताने लगा। उस समय राजा पर बादशाह की ओर से लगाए गये प्रतिबन्धों में भी कुछ ढील आ गई थी। इस प्रकार राजा ने अपनी जन्मभूमी को चले जाने का दृढ निश्चय कर लिया। चुपके से राजा एक दिन शिकार का बहाना बना कर महलों से निकला और उस ने अपने घोड़े का मूंह अपनी जन्म भूमी की ओर मोड़ दिया। शाही घोड़ा पवन वेग से उड़ता और मंजलें मारता हुआ राजा को अपने देश की ओर ले उड़ा। जब राजा लगातार दो दिन तक मेहल में नहीं आया तों जन्नत जहां बेगम ने इस बारे में बादशाह को सूचित किया और राजा पर भागजाने का संदेह किया।

जन्नत जहां की बातों को सुन कर बादशाह बड़ा गुस्से में आ गया। तुरन्त उस ने अपने साले हैबत-कन्धारी को बुलाया। कन्धारी सेना का एक

उच्च पदाधिकारी और बादशाह का बड़ा विश्वास पात्र जरनैल था। सोच विचार के बाद बादशाह ने कन्धारी को सेना के साथ गादाब खां (धर्म चन्द) को बन्दी बना लाने के लिये भेज दिया। अभी राजा कई दिनों के लम्बे सफर के बाद अपने राज्य की सीमा के पास पहुंचा ही था कि पीछे से कन्धारी ललकारा "किसी की बहन बेटी को विवाह कर छोड़ दिना कहां की वीरता और राजपूती है" यह सुनते ही राजा ने अपना घोड़ा रोक लिया। राजा ने घोड़े का पीछे को मूंह मोड़ा और लड़ाई छिड़ गई। दोनों शूरवीरों में कमाल की झड़पें हुई। प्रभु इच्छा के अनुसार एक समय ऐसा भी आया जब दोनों बहादुरों के वार कारगर हुये! राजा धर्म चन्द का सिर धड से अलग होगया और कन्धारी के गले पर गहरा घाव आया। राजा का मृतक शरीर तो वहां पड़ा रहा और मुसलमान सैनिक अपने सेनापति की सेवा में लगे रहे। उस घटना की सूचना जब राजमाता को मिली। उस ने अपने बेटे राजा धर्म चन्द के शव को मंगा लिया। दूसरे दिन कन्धारी की भी मृत्यु हो गई। मुसलमान सैनिक कन्धारी के शव को दफना कर भिंबर की राजधानी में जा पहुंचे। उस समय राजा के अन्तिम संस्कारों की त्यारियां हो रही थीं। उन्हों ने वहां जाते ही कहा कि राजा को जलाया नहीं जा सकता क्योंकि वह मुसलमान हो चुका है। झगड़ा बढ़ते देख कर राजा को समाधी दी गई। वह समाधी १९४७ तक कच्ची थी। हैबत कन्धरी को ज़िला गुजरात के गांव फतेहपुर हेरानी में दफनाया गया था जिस की कबर आज भी पीर कन्धारी के नाम से मोजूद है। राजा धर्म चन्द को भी शादी शहीद के नाम से याद किया ज़ाने लगा।

राजा के स्वर्गवास के बाद उस की पतिव्रता रानी भी जीते जी अपने पति की समाधी में समा गई। उस स्थान के बारे में पहले लिखा जा चुका है। पाकिस्तान बनने तक उस पवित्र समाधी पर हिन्दू मुस्लिम एकता के अदभुत दृष्य देखने को मिलते थे। उस पावन स्थल पर चिब ब्रादरी अपने धर्मों को भूल कर अपने कुलदेवता के चर्णों में अपने अपने मस्तक प्रेम और श्रद्धा के साथ झुकाते थे। एक ही दिन मुण्डन होने वाले बच्चों को सगे भाइयों की तरह समझा जाता था। वे सब आजीवन मित्र बन जाते थे। ठीक है कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे धर्म का अनुयायी बन जाता है। तो उस का अपने पहले धर्म से ज्यादा लगाव नहीं रहता है। मगर चिब ब्रादरी

में ऐसा नहीं था। यह ब्रादरी धर्म के नाते से बिल्कुल अलग हो चुकी थी फिर भी दिलों से एक थी। इस बेमिसाल एकता का मुख्य कारण स्वर्गीय राजा धर्म चन्द जी की समाधी की शक्ति थी जो वर्षों बीत जाने के बाद भी चिब ब्रादरी को एकता की लड़ी में परोए हुये थी। उस शक्तिशाली स्थान पर जाने वालों के मैले दिल भी दोबारा प्रेम लड़ी में परोए जाते थे। उजड़ने के बाद बटाला की चिब ब्रादरी ने अपने कुल देव की समाधी सतरायां गांव (रणबीर सिंह पुरा) और मोहकड्याला की ब्रादरी ने बेरा गांव में बना रखी है। अब उन की समाधी तहसील अखनूर में भी नढ के पास बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं।

राजा धर्म चन्द के चार बेटे थे। उन में सब से बड़ा राजकुमार भूप चन्द था। राजा धर्मचन्द के दिल्ली चले जाने पर वह राजकाज को देखता था। रूप चन्द उन का दूसरा पुत्र था। तीसरे का नाम मल्ल खां और चौथे को गुलमुहम्मद खां के नाम से जाना जाता है। दोनों छोटे भाइयों ने पहले ही इस्लाम धर्म में प्रवेश कर लिया था। बाद में रूप चन्द भी मुसलमान बन गया। राजा भूप चन्द के दो राजकुमार थे। बड़े का नाम घघी चन्द और छोटे को घनी चन्द कहा जाता था। राजा भूप चन्द ने अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक स्वाधर्म का पालन करते हुये राज किया। उन दिनों लोधी बादशाह विदेशी हमलों के कारण चिन्तित था और उस का ध्यान भिंबर की ओर न जा सका।

भिंबर के राजा भूप चन्द का निधन हो जाने पर दिल्ली के बादशाह ने हुकम भेज दिया कि भिंबर पर राज का अधिकार केवल उसे होगा जो मुसलमान होगा और इसलाम धर्म का पाबन्द होगा। इस पर राजा भूप चन्द के बड़े बेटे राजा घघी चन्द ने धर्महीन बन कर राज करने से इन्कार कर दिया जबकि उस के छोटे भाई घनी चन्द ने अपने पुर्खों का राज जाते हुये देख कर मुसलमान बनना स्वीकार कर लिया। अतः वह घनी खां के नाम से भिंबर के तख्त पर पहला चिब मुसलमान राजा बना। राजा बनने पर उस ने हिन्दू चिब्बों को लगान और मालिया के अलावा और भी बहुत सी सुविधाएं दे रखी थीं। हिन्दू चिब्बों से लगान या किसी प्रकार का और कोई कर न लेने का जो आदेश राजा घनी खां ने जारी किया था वह उस वंश के आखरी

राजा सुल्तान खां तक निरन्त्र पन्द्रह पीढ़ी चलता रहा था। इस तरह हिन्दू चिब स्वातन्त्र होते हुये भी भिबर राज्य के वफादार रहे और उन का भाईचारा चलता रहा।

राजा घघी चन्द अपने राजकुमारों को साथ लेकर स्वा धर्म की रक्षा के लिये भिबर राज्य से बाहर चला गया। भाग्य के ग्रहों ने एक बार फिर उन्हें उसी चक्कर में डाल दिया जैसे कभी राजा नारायण चन्द कटोच को अपने घर से निकाला था। कुछ समय तक वे लोग किसी सुरिक्षतह स्थान की तलाश में रहे। ऐसा स्थान जहां उन का जीवन हिन्दूधर्म के अनुसार शान्ती से व्यतीत हो सके। वे कई स्थानों पर घूमे फिर भी उन के विचारों के अनुसार उन्हें उचित स्थान न मिल सका।

राजा घनी खां के जीवन काल में तो उन का समय अच्छी तरह व्यतीत होता रहा। मगर वे कब तक सुरिक्षत रह सकते थे क्यों की भिबर राज्य के असली वारिस तो वही थे। दिन प्रति दिन उन के खिलाफ चालें चली जाने लगीं। कुछ समय के बाद प्रस्थिति घम्बीर होती गई जो लड़ाई का रूप धारण कर गई। भाइयों के बीच धर्म की बिना पर लड़ाइयां भी लड़ी गईं जिन में काफी लोग मारे गये। शाही परिवार के लोगों की तलाश जारी रही। फिर एक मन्हूस दिन ऐसा भी आया जिस दिन इस वंश का अन्तिम व्यक्ति घघी चन्द का पोता और कन्दो चन्द का बेटा तख्ती चन्द भी मारा गया।

तख्ती चन्द के मरने के समय उस की रानी अपने मायके बल्ल में थी। यह गांग आज कल तहसील नौशहरा में है। वह रानी माहला ब्रादरी की भी और उस समय गर्भवति थी। इस लिये उसे सति होने से बचा लिया गया था। पति के मरने के बाद रानी के गर्भ से एक चांद जैसे बच्चे ने जन्म लिया। उस का नाम दसो रखा गया। यह वही भाग्य शाली और प्राकर्मी बच्चा था जो दसो खां के नाम से कोहस्तान भिबर में प्रसिद्ध हुआ और जिस ने तलवार के बल द्वारा देवा-वटाला पर अधिकार करके अपनी औलाद के लिये एक लम्बा चौड़ा उपजाऊ भुखण्ड पैदा किया और जिस की औलाद महाराजा रणजीत सिंह जैसे शक्तिशाली शासिक से लोहा लेती रही।

तख्ती चन्द की मृत्यु के बाद उस का वफादार दरबारी जंगों भट अपने स्वामी के बहुमूल्य भूषण, हीरे ज्वाहरात और शाही शस्त्र जो इस वंश

के लिये बड़े महत्व रखते थे, अपने अन्य साथियों के साथ छुपा कर ले भागने में सफल हो गया था।

उन अमूल्य वस्तुओं को उस ने छत्ते की वां के आस पास ज़िमीन के नीचे छुपा दिया और खुद एक साधु का भेस बना कर उसी स्थान पर बैठ गया। जगों को विश्वास था कि भगवान किसी का भी बीज नाश नहीं करते हैं इस लिये रानी के गर्भ से ज़रूर पुत्र रत्न पैदा होगा जो इन वस्तुओं का स्वामी बनेगा। भगवान की कृपा से ऐसा ही हुआ जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है।

बहुत समय तक दसो के जन्म को छुपा कर रखा गया। क्योंकि उस समय विरोधियों का बड़ा ज़ोर था। अगर दसो के जन्म का किसी तरह उन को पता चल जाता तो उस का जीवत रहना बड़ा कठिन होता। इस तरह दसो अपने ननिहाल में बड़े लाड प्यार से पलता रहा! वह बच्चा जन्म से ही बड़ा होनहार और बुद्धिमान था।

बालक दसो का एक दिन बातों बातों में अपने मामों से झगड़ा होगय। तरुण दसो गुस्से में आकर अपनी माता से पूछने लगा कि बता मेरा पिता कौन है, और कहां है?

मां ने समय को अनुचित समझते हुये बच्चे को कुछ वक्त के लिये टालना चाहा मगर बच्चा ज़िद पकड़ गया। आख़िर मां को झुकना पड़ा और बेटे को बताया "अगर तु अपने पिता, उस के ठिकाने और वंश को जानना चाहता है तो "छत्ते की वां" पर बैठे हुये साधु से पूछ ले" दुसरे दिन ही तरुण दसो साधु महाराज की सेवा में पहुंच गया और महात्मा ज़ी को नमस्कार कर के उन के चरणों में बड़े अदब से बैठ गया। महात्मा जी के उस के आने के लिये पूछने पर दसो ने बड़े भोलेपन से प्रार्थना की "महाराज आप मुझे इतना बताने की कृपा कीजिय कि मेरे पिता कौन हैं और मेरा जन्म किस कुल में हुआ है? इस पर महात्मा जी ने कहा "बेटा अभी समय यह बातें बताने के लिये ठीक नहीं है। वक्त आने पर मैं स्वयं सब कुछ बता दूंगा। मैं भी अच्छे दिनों की प्रतीक्षा कर रहा हुं।

दसो :- महाराज। वह समय कब आएगा?

महात्मा : जब तुम्हारे यह बाज़ू तलवार उठाने के योग्य हो जाएंगे। जब वह तमाम आपत्तियां टल जाएंगी जिन के कारण तुम अपने आप और अपने वंश से अपरिचित हो।

दसो : अगर ऐसी बात है तो मैं भी उस समय तक आप के पास रहुंगा। आप की सेवा करूंगा। समय आने पर मैं आप की आर्शीबाद और अपनी जानकारी ले कर चला जाऊंगा।

महात्मा : तुम्हारा इस समय मेरे पास रहना भी ठीक नहीं है। तुम अपने मामा के घर लौट जाओ तुम्हारी भलाई इसी में है।

देसो : महाराज मैं अब पीछे नहीं लौट सकता। नदी का बहता पानी पीछे नहीं जाता। कमान से निकला हुआ तीर पीछे नहीं लौटता तो एक सच्चा क्षत्रि अपने किये हुये फैसले को कैसे पीछे की ओर बदल सकता है।

बच्चे के मुंह से ऐसी बातें सुन कर महात्मा मन ही मन में बड़ा प्रसन्ना हुआ। उस का दिल खुशि से उछलने लगा पड़ा। उसे अपनी भगती के पेड़ को फल लगते हुये दिखाई देने गगे। कुछ देर चुप रहने के बाद उस ने दसो से कहा "बेटा तू अगर अपने मामा के घर नहीं जाना चाहता तो ढन वाले महता के पासे चला जा। उस को लगान वसूल करने के लिये तेरे जैसे बुद्धिमान और दृढ विश्वासी नौजवानों की ज़रूरत रहती है। मैं उस के नाम तुम्हें एक पत्र देता हूं। साधु जी की बात मान कर और पत्र लेकर दसो ढन ग्राम में महता के पास चला गया और उस के पास रहने लगा। बच्चा बड़ा खूबसूरत और होनियार (होशियार) था। थोड़े समय के अन्दर ही वह महता का प्यारा बन गया। महता का अपना कोई पुत्र न था। उस ने दसो को अपना बेटा समझ कर पढ़ाया लिखाया। महता की मृत्यु के बाद वह उस इलाके का कारदार नियुक्त हुआ और वह ढन नाम के गांव में स्थाई तौर पर बस गया और वहां की एक कुलीन सुन्दर युवति से विवाह कर लिया। अपनी मां को भी अपने पास बुला लिया और ठाठ बाठ से रहने लगा। उस के चार बेटे हुये। सब से बड़े का नाम सिकन्द्र था उस की ओलाद देवा-वटाला में आबाद हुई। दूसरा दाता

ढन गांव भी तहसील नौशहरा में ही पड़ता है और युद्ध बिराम रेखा के निकट है।

था जिस के वारिस नौशहरा तहसील के नाह गांव में बसते रहे। उसके तीसरे बेटे मानक के पुत्र पौतरे पिंडारियों में और चौथे बेटे मरदान की औलाद ने कोयल नाम का गांव बसाया और वहां ही आबाद होगये।

दसो की सफलता को देख कर जगों भट्ट जो बड़े दिनों से साधु का भेस धार कर अपने स्वामी के वंश पर अच्छे दिन आने की प्रतिक्षा के लिये जी रहा था और "छत्ते की वां" पर बैठा तपस्या में लीन था। एक दिन ढन आया। दसो को अपने साथ ले गया। वहां जा कर उस ने कहा "बेटा जो स्वाल तू उस दिन मुझ से पूछना चाहता था उसे मैं आज स्वयं तुम्हें बताने जा रहा हूं। तू कोहस्तान भिबर के प्रसिद्ध हुकमरान राजा चिब चन्द का वंशिज है। तेरा पिता और अन्य सारे रिशतादार तेरे वंश के लोगों के हाथों मारे जा चुके हैं। मारने वाले भी चिब हैं। पहले वे हिन्दू थे अब मुसलमान हो गये हैं। हम ने पीढियों से आप के वंश का अन्न जल खाया पिया था। अपने जीवन में मुझे बदला चुकाने का अवसर मिला, मैं ने जो किया है यह कोई तुम पर एसान नहीं किया अपितु अपना कर्तव्य निभाया है। इतना कह कर उस ने एक जगह खुदवाई और उस के पुर्खों की तमाम बहुमूल्य वस्तुएं और शस्त्र दसो को सौंप कर भगवान का धन्यबाद किया और कहा वर्षों पुरानी मेरी प्रतिज्ञा आज्ञ पूर्ण हुई। तुम अपनी अमानित संभालो, चिब खानदान का नाम रोशन करो। मेरी भगवान से प्राथना है कि वे इस वंश को फिर वही समय प्रदान करें जो कभी पहले था।" यह कहते हुये साधु की आंखे डुबडबा गईं और वे बातें करता हुआ चिब वंश के उज्वल अतीत में खो गया।

अपने पूवर्जों की सम्पत्ति को पा कर और अपने वंश की कहानी महत्मा के मुख से सुन कर दसो ने हाथ जोड कर प्राथना की। भगवन आप ने चिब वंश के पुर्नोत्थान के लिये अनेक कष्ट सहे हैं और दुख झीले हैं। आप मेरे साथ चलिये और अपना अन्तिम समय सुख शान्ती से मेरे पास रह कर गुजारे और मेरा पथ प्रदर्शन करें ताकि मैं आप की वर्षों पुरानी आशाओं को फलीभूत और साकार बना सकूं। महत्मा ने दसो की प्राथाना को अस्विकार करते हुये कहा "मैंने साधु का भेस आप की अमानित को बचाने के लिये धारण किया था। यह हम सब के लिये बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है अब मैं

अजीवन इसी भेस में रहुंगा, इसी में मरूंगा और अपने जीवन की आन्तिम घड़ी तक चिब वंश की उन्नती के लिये प्रार्थना करता रहुंगा।" इस प्रकार दसो अपने बाप दादा की अमूल्य वस्तुएं लेकर और महात्मा जी को नमस्कार कर के ढन लौट आया और उस के बाद महात्मा कहां चला गया इस बात का किसी को भी मालूम नहीं हो सका।

दसो खां के बड़े बेटे सिकन्दर के सात पुत्र हुये। जिन में सहाली सब से बड़ा था। सहाली के तीन पुत्र काहन चन्द, उगम चन्द और बताली हुये। उन में से सब से छोटा बताली किसी कारण शहीद हुआ। वे सुभाव के बड़े सीधे थे। मगर उन का आत्मक बल बड़ा बलवान था। बे एक प्रकार के सिद्ध पुरुष थे। मरने के बाद उन की आत्मा ने कई प्रकार के चमत्कार दिखाए जिन के लिये उन की पूजा होने लगी और वे वटाला के चिब्बों के कुलदेव बन गये। आज तक भी उन की बड़ी मान्यता है। उन का पहला मन्दिर ढन और दूसरा ऊपर वटाला में था। उजड़ने के बाद उन के नाम पर कई मन्दिर बन चुके हैं जिन में झिडी जम्मू और सतरायां रणबीरसिंह पुरा के उल्लेखनीय हैं।

चिब्बों की अधिक संख्या बढ़ जाने पर गुजारे के लिये खुले और उपजाअ इलाके की ज़रूरत पड़ने पर उन्होंने देवा-वटाला का रुख किया। यह इलाका हर प्रकार से उन के लिये ठीक था। मगर उन दिनों उस पर कुल्दन राजपूतों का अधिकार था वह लोग बड़ें वीर और बहादुर थे। लड़ाई लड़ कर उन से यह क्षेत्र लेना दसो की अल्प सक्षंक औलाद के लिये असम्भव था। फिर भी किसी न किसी तरह चिब्बों ने इस इलाके पर अपना अधिकार जमा लिया। उनकी सफलता में माहला राजपूतों का बड़ा योगदान रहा। अधिकतर कुल्दन मारे गये जो बचे वे इधर उधर भाग गये या बलीन हो गये।

ढन से आने के बाद चिब सब से पहले ऊपर वटाला आबाद हुये। क्योंकि यह जगह बड़ी ऊंची थी और वहां से शत्रु की गतिविधियों का बड़ी आसानी से पता लग सकता था और अपना बचाव सम्भव था। वहां आ कर चिब्बों ने अपनी सुविधा के लिये अपने कुलदेव बताली का मन्दिर बना लिया। वह ऊपर वटाला की बस्ती के खण्डहरों के पश्चिम उत्तर के कोने पर ५० फुट

ऊंचा पहाड़ी पत्थरों का बना हुआ था। वटाला की चिब ब्रादरी उस मन्दिर के लिये बड़ी श्रद्धा रखती थी। उस के पास ही सिद्ध हमीक्षण का मन्दिर भी था। इन दोनों की पूजा होती थी।

देवा-वटाला के मैदानी और उपजाऊ क्षेत्र की विजय के थोड़ा समय बाद रक्षा प्रबंध सुदृढ हो जाने पर चिब्बों ने सर्वसम्मती से काहन चन्द के बड़े बेटे सोमेश चन्द को टिका-ए-ठाकुराई लगा कर अपना सारदार मान लिया। सोमेशचन्द ने धीरे धीरे उस इलाके की सीमाओं को बढाया और थोड़े समय के अन्दर ही पूर्व में मुनावर तवि, से पश्चिम में कढाला के द्वाडे तक और उतर में पतनी से लेकर दक्षिण में जलालपुर सोबतियां तक पहुंचा दिया। इस सारे इलाके का प्रबंध एक स्वातन्त्र पंचायत के हाथ था जो एक छोटी सरकार की तरह काम करती थी। इस पंचायत के काम काज में न तों भिबर के राजे दखिल देते थे और न ही जम्मू के हुकमरान कुछ कहते थे। उस सारे इलाके को देवा-बटाला के नाम से पुकारा जाता था और वह १८४५ तक इसी नाम से प्रसिद्ध रहा। फसल पकने पर पंचायत साधारण लगान अनाज की सूरत में इकठ्ठा कर लिया करती थी। उस लगान को मंगनी कहा जाता था। मंगनी (लगान) इकठ्ठी करने में किसी को भी टाल मटोल करने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। हरेक व्यक्ति उसे समय पर देने का पाबन्द था।

इतना कुछ हो जाने पर भी चिब सुरिक्षत नहीं थे उन की कुछ जन शक्ति कुल्दानों के साथ लड़ाई में मारी गई थी और कुछ निमार्ण कार्यों में व्यस्थ थे। पंचायत इतने बड़े इलाके को संभालने के अयोग्य थी। इन कमजोरियां को ध्यान में रखकर पलां वाले के भाऊ राजपूतों ने देवा-वटाला पर हमला कर दिया। उस हमले में चिब्बों को प्राजय का मुंह देखना पड़ा। भाओं के हमले से चिब्बों को बड़ी क्षति पहुंची और अंत में सुलह हो गई।

लड़ाई के बाद चिब सर्तक हो गये। उन्हों ने अपनी रक्षा के सब उपाय जुटाने शुरू कर दिये। अपने साथ अन्य जातियों के नौजवानों को जोड़ लिया। यह सब काम और त्यारी सीतु नाम के वीर के नेतृत्व में हुई। वह वीर चिब इतिहास में "सीतु सरहन्ना" नाम से प्रसिद्ध है। अपने आप को शक्तिशाली बना कर उस ने भाऊ राजपूतों को ललकारा। भाऊ भी कब डरने वाले थे। दोनों ब्रादरियों के वीर भिड गये। सख्त लड़ाई हुई इस बार समय बदल चुका

था। चिब्बों की जय और भाऊओं की प्राजय हुई। उस लड़ाई में चिब्बों ने अपनी पिछली हार के दाग़ को धो डाला और सीतु के नाम की मीलों की दूरी तक धाक बैठ गई। उस के बाद देवा-वटाला की ओर बुरी नज़र से देखने की किसी को हिम्मत न हुई और १९४७ तक देवा-वटाला आज़ादी और अमनोचैन से आबाद रहा।

इस इलाके का प्रबन्ध पंचायत द्वारा बहुत देर तक अच्छे ढंग से चलता रहा मगर बाद में इस प्राणाली में कुछ कमज़ोरियां पैदा हो गईं। मंगनी इकट्ठी करने वालों ने मन मानी करनी शुरू कर दी। जनता दुखी होने लगी। उन दिनों महाराजा रंजीत सिंह की सेनाएं भिबर के राजाओं के साथ लड़ रही थीं और स्वयं महाराजा गुजरात में ठहरे हुये थे। वटाला पंचायत से दुखी हो कर कुछ लोगों ने महाराजा से मिल कर ज़ोरदार शिकायत की। लागों की शिकायत पर महाराजा ने अपनी सेना को ज़रनैल महासिंह और मियां मोहर सिंह के नेत्तृव में वटाला भेजा। सिख सेना ने वटाला के तीन मील दक्षिण में अपना पड़ाव किया और अपनी सुरक्षा के लिये कच्ची मिट्टी का किला त्यार किया। यह किला शताबगढ़ के नाम से मशहूर था।

जिस समय सिख फौज किला बनाने में लगी हुई थी तो वटाला के बहादुर लोग भी इस बात से बेखर न थे। यह जान कर पंचायत का आपात कालीन अजलास सरदार लक्खा के नेतृत्व में हुआ जिस में सिख सेना के साथ घुरीला लड़ाई लड़ने की योजना बनाई गई क्योंकि उस समय यह लोग़ सिख सेनाओं के साथ सीधी टक्कर लेने से असमर्थ थे और लड़े बिना हार मान लेना भी उन की परमप्राओं के प्रतिकूल था। अखिर लड़ाई शुरू हो गई। पहले दिन ही मियां मोहर सिंह मारा गया। अपने सरदार की अचानक मौत से सेना में भगदड मच गई और सैनिक किले में लौट गये। इस घटना की सूचना मिलते ही महाराजा स्वयं फौज लेकर वटाला पर चढ़ दौड़ा। अवश्यकता के अनुसार महाराजा ने एक दस्ता फौज भिबर से भी बुला ली। फौज के इकट्ठा हो जाने पर वटाला पर ज़ोरदार हमला हो गया। यह बात १८७२ विक्रमी की है। समयनुसार बटाला निवासियों ने पहले ही अपने बाल बच्चों को उत्तर की ओर घने जंगलों में छुपा रखा था। सिख फौजों को प्रवेश करते ही गोलियां का सामना करना पड़ा। गांव में किसी प्रकार के भी जीवन चिन्ह नहीं मिले।

पूरा गांव खाली पड़ा हुआ था। सिख फौज जब सरदार लक्खा की डयोढी को हाथी से गिरा कर लौट रही थी पीछे से इस पर जोरदार हमला हो गया। गोलियां तो चल रही थीं मगर गोली चलाने वाला कोई भी दिखाई नहीं पड़ता था। महाराजा की शाही फौज जो मैंदानों में तो बड़े बड़े मारके मार चुकी थी वह बटाला के जंगलो में विवश हो कर रह गई। लड़ाई लड़ते हुये एक समय ऐसा भी आया जब महाराजा के हाथी का महाबत गोली लगने से मारा गया। इस पर महाराजा ने सेना को पीछे लौट जाने का आदेश दे दिया। लौटती फौज का एक नक्कारा हाथी से गिर पड़ा जो बड़ी देर तक मेला छिंज के अबसर पर अपनी जीत की खुशी में हर साल बजाया जाता था।

इस लड़ाई के दूसरे दिन शताबगढ से महाराजा ने एक परवाना वटाला पचांयत के नाम भेजा जिस में लिखा था "आओं मेरे साथ बात चीत करो, हमारी इच्छा लड़ाई लड़ने की नहीं है। राजा का जन्ता के साथ मुकाबिला किस बात का"।

शाही पत्र मिलने पर पंचायत सरदार लक्खा के नेतृत्व में महाराजा से शताबगढ के किले में मिली। महाराजा ने पंचांयत के साथ बड़े प्रेम से बात-चीत की और उन को मंगनी द्वारा जनता को तगं न करने और शान्ति से रहने का सुझाव दिया। उस के साथ फैंसला हुआ कि पंचायत के अधीन ग्रामों के साथ लाहौर दरबार का कुछ वास्ता नहीं होगा। पंचायत पहले की तरह लगान लेकर उस का कुछ भाग लाहौर दरबार को दिया करेगी। महाराजा के साथ पंचायत की बात चीत सफल रही और पंचायत ने महाराजा के आदेश की सभी धाराओं का पालन करने का बचन दिया। इस पर महाराजा बड़े खुश हो गये और उन्होंने पंचायत को कई प्रकार के इनाम दे कर विदा किया। लाहौर दरबार की ओर से इस इलाके का पहला प्रबंधक सरदार मियां सिंह नियुक्त हुआ।

१८६५ बिक्रमी में मियां गुलाब सिंह जम्मू के कर्त्ताधर्त्ता मियां मोटा से नाराज होकर अपने भाई ध्यान सिंह के साथ शाही फौज में भरती होने के लिये लाहौर गया। सफलता न मिलने पर वह अपने कुछ अन्य साथियों के साथ शाह शुज्जाह की फौज में भरती होने के लिये काबुल को चल पड़ा। जेंहलम पहुंचने पर उस के कुछ साथियों ने लम्बे सफर की आपत्तियों से भयवीत हो कर आगे जाने से इन्कार कर दिया। इस तरह गुलाब सिंह को

भी अपना विचार बदलना पडा। और सब लोग जेहलम से अपने अपने घरों की ओर चले आये। गुलाब सिंह को अपनी विफलता का बड़ा दुख हुआ।

जेहलम से अपने घर आते हुये गुलाब सिंह को भिबर राज्य से गुज़रना पड़ता था। रास्ता चलते हुये वह भिबर के शासिक राजा सुल्तान खां की राजकीय प्रबंधक व्यवस्था और न्याय की अनेक कहानियां सुन कर बड़ा प्रभावित हुआ और उस के दिल में राजा सुल्तान खां के पास नौकरी करने की इच्छा पैदा हो गई। इस के लिये उस ने राजधानी में कुछ दिन रह कर यत्न किये मगर काम न बन सका। कहते हैं कि भिबर में रहते हुये उसे किसी ढाबे वाले ने बताया था कि अगर वह किसी अच्छे पद पर लगना चहता है तो उसे देवा वटाला के सरदार लक्खा से कहलाना बड़ा जरुरी है क्यों कि राजा सुल्तान खां उसकी बड़ी कदर करता है। इस तरह गुलाब सिंह पहली बार वटाला आया और तीन दिन सरदार लक्खा का अतिथि रहा। वटाला में उस की बड़ी आवभगत हुई। चौथे दिन सरदार लक्खा अपने अन्य पंचों के साथ भिबर गया। भिबर नरेश ने उन्हें सरकारी मेहमानों के तौर पर शाही मेहमान खाने में रखा। पंचायत ने राजा के साथ मिलते समय मियां गुलाब सिंह की बड़ी तारीफ की और उसे भरती करने के लिये कहा। सरदार लक्खा की सिफारिस पर गुलाब सिंह को भरती कर लिया और ३०/- रुपये मासिक वेतन पर राजौरी का हाकिम नियुक्त किया। कुछ समय तक मियां गुलाब सिंह ने राजा सुल्तान खां के दरबार में बड़े सम्मान और इमानदारी से काम किया। मगर राजा की रखेल हियाता बेगम के दुर्व्यवहार को डोगरा अंख सह न सकी और मामूली बात पर गुस्सा खा कर गुलाब सिंह नौकरी छोड़ कर घर आ गया। घर आते समय गुलाब सिंह फिर एक रात सरदार लक्खा के पास रहा। सरदार लक्खा गुलाब सिंह और हियात बेगम की सुलह के पक्ष में था मगर गुलाब सिंह दोबारा वहां जाने के लिये त्यार न हुआ और वह अपने घर चला गया।

महाराज रणजीत सिंह के साथ सुलह हो जाने पर कुछ वर्ष इस इलाका के लोगों ने अमनो शान्ती से गुज़ारे। जंग से छुटकारे के बाद खेती बाडी की और ध्यान दिया जाने लगा। इलाका की जनसंख्या भी बढ़ी। उस के बाद

हालात ने कुछ ऐसा पल्टा खाया। खालसा फौज को राज द्रोहियों की गतिविधियों पर रोक लगाने के लिये बहुत कुछ करना पड़ा। मियां डीडो के शहीद हो जाने पर राजा सुल्तान खां को विजय करने के लिये सिक्ख फौज को बड़ी हानी उठा कर भी कोहस्तान भिबर में अधिक सफलता प्राप्त न हो सकी। यह वह समय था जब गुलाब सिंह महाराजा रणजीत सिंह के निकट जा चुका था और लाहोर दरबार भी उस पर विश्वास करने लग पड़ा था। जून १८२२ को महाराजा रणजीत सिंह जम्मू आये और उन्होंने गुलाब सिंह को अपने कर कमलों से अखनूर के स्थान पर जियोपोता के पेड के नीचे राजतिलक लगा कर उसे जम्मू का राजा बना दिया था।

राज तिलक हो जाने पर मियां गुलाब सिंह जम्मू के राजा बन गये। राजा बनने पर उन्हों ने अपने राज्य को बढाना शुरू कर दिया। उस समय जम्मू के आस पास कई छोटे छोटे राज्य थे जिन को महाराजा गुलाब सिंह ने बड़ी आसनी से अपने राज्य में मिला लिया था। मगर भिबरएक मात्र राज्य था जिसे राजा गुलाब सिंह लड़ कर विजय नहीं कर सका। भिवर पर विजय पाना कोई आसान बात न थी। इस लिये भिबर की विजय के लिये महाराजा गुलाब सिंह ने नीति से काम लिया और साफदिल सुल्तान खां को बन्दी बना कर उस के राज्य पर कब्ज़ा कर लिया। राजा सुल्तान खां को कैंदी बना कर गज़पत के किले में भेजा जा रहा था कि रामबन के पास उस की मोत हो गई और चन्द्रकोट के स्थान पर ज़म्मू श्रीनगर राजमार्ग पर उसे दफना दिया गया। इस प्रकार राजा चिब चन्द का भिबर पर स्थापित किये राज्य का २५ पुश्तों के बाद अन्त हो गया और चिब्बाल के प्रसिद्ध भूभाग से चिब्बों की सरदारी खत्म हो गई। १८८२ बिक्रमी में भिबर राज्य को विधिवत तौर पर जम्मू में मिला लिया गया।

राजा सुल्तान खां के बेटे राजा फैंज़तल्ब खां ने अपने पिता की मुक्ति के लिये यत्न किये जो विफल रहे। पता लगने पर गुलाब सिंह ने उसे रियासत से बाहर निकाल दिया। उसे दस हज़ार रुपया वार्षिक पैन्शन देने का फैसला हुआ। पहले वह ज़िला गुज़रात के गांव ठूठे रायबहादुर में रहा और वहां से वह चकोडी शैखां में चला गया। १९२६ बिक्रमी में उस की मौत के बाद उस का बड़ा बेटा राजा अलि बहादुर जानशीन बना। १९४७ के विभाजन के

समय राजा सुल्तान खां का पोता राजा मुहम्मद अकबर खां जानशीन था और उसे बाराह हजार रुपये वर्षिक पैन्शन मिलती थी। अज कल उन के बेटे जेहलम नगर में निवास करते हैं।

भिबर के राजा चिब चन्द के अधिकार में आने से लेकर राजा कल्स चन्द, राजा रुपाल चन्द, राजा रजान चन्द, राजा फैरी चन्द, राजा शान्ती चन्द, राजा गोजा चन्द, राजा धर्म चन्द और राजा भूप चन्द नाम के नौ हिन्दू चिब राजाओं ने बड़ी ठाठ बाठ से राज किया। राजा धर्म चन्द के दिल्ली जाने, वहां मुसलमान बना लेने और फिर उस के शहीद हो जाने की कहानी लिखी जा चुकी है। राजा धर्म चन्द के दिल्ली चले जाने पर उस के बेटे राजा भूप चन्द ने कार्यभार सभांले रखा। जब भूप चन्द का छोटा बेटा घनी चन्द मुसलमान बन कर भिबर का राजा बना तो उस का बड़ा भाई घघी चन्द उस से नाराज हो कर बंडाला की ओर चला गया।

हिन्दू चिब्बों के बाद भिबर राज्य के ताजदार मुसलमान चिब बने। घनी खां से लेकर, राजा जमशैद खां, राजा तग़रल खां, राजा हज खां, राजा शाह मोहम्मद खां, राजा मदन खां, राजा अस्माईल खां, राजा चौक जन्नत खां, राजा रहमत अल्लाह खां, राजा फ्रीम अल्ला खां, राजा शेर सफदर खां, राजा माजी खां, राजा नाईम खां, राजा सुलेमान खां और राजा सुलतान खां तक राज करते रहे। इस तरह राज़ा चिब चन्द का स्थापित राज चौबीस पीढ़ी चलने के बाद १८८२ ब्रिक्रमी को समाप्त हो कर जम्मू का एक हिस्सा बन कर रह गया।

भिबर राज्य की स्थापना करने वाले राजा चिब चन्द के झंडे का रंग भगवा और उस के मध्य में कैसरी रंग का स्वास्तिका शोभामान था। जब तक हिन्दू चिब भिब्रर पर राज करते रहे यह झण्डा राजकीय ध्वज बना रहा। राजा घनी खां के शासनकाल में झंडे के बदलने का प्रशन ही नहीं उठा। उस की मोत के बाद इस के बदलने की बात चली तो राजा जमशैद खां ने उस झण्डे को अपने पूर्वजों का पावन चिन्य समझते हुये इस में किसी प्रकार का परिवर्तन करना अनुचित करार न दिया। उस के बाद राजा अस्माइल खां के शासन काल में उस में मामूली तबदीली लाई गई। उस का रंग तो भगवा ही रहने दिया गया मगर स्वस्तिका के वैदिक निशान के स्थान को एक दूसरे

को काटती हुई दो सफेद रंग की तलवारों ने ले लिया था। मुझे स्वर्गीय पंडित दुर्गादास जी ने जो चिब्बों के खानदानी भट्ट थे बताया था कि उस के बाद भी झण्डे में थोड़ा फेर बदल किया गया था और भगवे रंग को हटा कर नया रंग आसमानी दे कर मुसलमानों को खुश कर लिया था।

१८७२ बिक्रमी में देवा-वटाला पंचायत की महाराजा रणजीत सिंह से संधी हुई और उस के दस वर्ष बाद १८८२ में भिबर राज्य का अन्त हो गया। धर्म के नाते देवा-बटाला के चिब हिन्दू थे जबकि भिबर के शासिक चिब मुसलमान हो चुके थे लेकिन राजा सुल्तान खां के साथ महाराजा गुलाब सिंह के दुर्व्यवहार और अन्याय के फलस्वरूप वे जम्मू सरकार के खिलाफ भडक उठे और उन्हों ने गुलाब सिंह को अपना राजा मनाने से इन्कार कर दिया था।

मई १८५७ में प्रथम स्वातन्त्रा सग्रांम का श्री गणेष हुआ था। हज़ारों देश भक्त देश के हित बलिदान हो रहे थे। दुर्भाग्यवंश कुछ गद्दारों की सहायता से अंग्रेज़ सफल रहे। दिल्ली पर अधिकार कर लेने के बाद उन्हों ने देशभक्तों को कुचलने के लिये ज़ोर शोर के साथ दमन चक्कर चलाया। सैंकडों देश प्रेमियों को गोलियों से भून दिया गया। अंग्रेज़ों ने अपना गुस्सा सब से अधिक उत्तर प्रदेश के कुछ ज़िलों पर निकला था। वहां के हज़ारों लोग अपनी जानें बचाने के लिये इधर उधर भटकते रहे। उन में से अधिकतर जम्मू भी आ गये थे। इधर आ कर भी उन्हें निराशा का मुंह देखना पड़ा था क्योंकि महाराज़ा गुलाब सिंह भी अंग्रेज़ों के सहयोगियों में से एक था। इस प्रकार वे देशभक्त (पूर्विये) देवा-वटाला चले गये। वहां उन्हें आदर के साथ शर्ण मिल गई। महाराजा सरकार ने उन की पकड़ धकड़ के निर्देश ज़ारी कर दिये। पुलिस उन को पकडने के लिये देवा-वटाला जा पहुंची। इस पर देवा-वटाला के अंखीले लोग भडक उठे और उन्हों ने अपनी शर्ण में आये देश भक्तों को देने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। उस समय देवा-वटाला एक मात्र इलाका था यहां दो हज़ार से अधिक देश भक्तों ने अपातकाल का समय व्यतीत किया था। क्योंकि शर्ण में आये की रक्षा करना उन लोगों की सर्वप्रथम परमपरा थी। आम मुआफी के समय वे लोग बड़े सम्मान के साथ अपने अपने घरों को लौट गये थे इस सच का इतिहास साक्षी है।

जम्मू सरकार राजा सुल्तान खां को बन्दी बनाने के समय से देवा-वटाला

किसी बहाने की तलाश में थी। पूर्वी देश वालों से पहले ही खुश न थी और भक्तों को शर्ण देने और सरकार के हुक्म को न मानने पर और भी तलमला उठी थी। इस प्रकार दीवान हरिचन्द बड़ी सेना के साथ देवा-वटाला को सर करने के लिये भेजा गया। इस बात की वटाला वालों को पहले ही सूचना मिल चुकी थी। जब दीवान वहां पहुंचा तो गांव खाली पड़ा था। यह देख कर दीवान ने गांव के अच्छे अच्छे घरों को गिरा देने का हुक्म दिया और अन्य सब को जला डालने के लिये कहा। दीवान वहां एक सप्ताह रहा और गांव को तबाह कर के लौट आया। दीवान के चले जाने पर जब वटाला वाले जगलों से बाहर निकले और उन्होंने ने अपने घरों की तबाही को देखा तो वे और भी क्रोधित हुये और उन्हों ने महाराजा सरकार के खिलाफ खुलमखुला बग़ावत कर दी और जम्मू सरकार के शत्रु बन गये।

इस बार देवा बच गया। पता नहीं किस बात के लिये देवा को छोड़ दिया गया। सरकार तो वटाला के साथ देवा को भी मिटाने की इच्छुक थी। उन दिनों दखूआ गांव वालों का देवा वालों से झगड़ा हो गया। सरकार के लिये इतना ही बहाना काफी था। सरकार ने बड़ी सेना के साथ जनरल जागर मन्हास को घडना स्थल पर भेजा। मन्हास ने जाते ही देवा को जलाने का हुकम दे दिया। गांव जलाने के बाद लौटती फौज पर देवा के वीरों ने ज़ोरदार हमला कर के सेना के अधिक भाग को मार डाला। फौज संभली तो यह लोग जंगलों में जा छुपे। इस के बाद देवा-वटाला का सारा इलाका भडक उठा और वह कुछ करने के लिये त्यार हो गये।

देवा-वटाला के बिगड़ते हुये हालात को सुन कर अपने सब कार्यक्रम छोड़ कर स्वयं महाराजा गुलाब सिंह को सारे इलाके का दौरा करना पड़ा। वह देवा-वटाला के मुख्य स्थान जक्खर तक गये और वहां जा कर कुर्सी की बजाये एक पत्थर पर बैठे, उस इलाके के तमाम प्रतिष्ठित लोगों से मिले और बड़े प्रेम से उन्हें कई बातें समझा कर और रिश्तादारी का वास्ता देकर वटाला के चिब्बों से शान्त रहने का अनुरोध किया। उस दिन देवा-वटाला के चिब्बों ने कई वर्षों के बाद पहली बार गुलाब सिंह को लगान देने की हां भरी।

महाराजा रणजीत सिंह के मरने के बाद सिक्खों के साथ अंग्रेज़ों ने ९ मार्च १९४६ को अमृतसर सन्धि कर के दोआबा बिस्त ज़ालन्धर को अपने

अधिकार में ले लिया। उस के बाद उन की लालची दृष्टि पंजाब के अन्य भागों पर पड़ी। कई बहाने बना कर उन्हों ने सिक्खों से बचा खचा पंजाब भी तलवार के बल द्वारा हासिल करने के लिये साजिशें शुरू कर दीं। उधर सिक्ख सैनाएं भी अंग्रेज़ों से एक बार सीधी टक्कर ले कर अपनी खोई हुई इज़्ज़त को बहाल करना चाहती थीं। इस तरह एक बार फिर जंगी हालात पैदा होने लगे और चारों ओर जंग के बादल मंडराते हुये दिखाई देने लगे और लाहौर दरबार कि हालत डावांडोल हो गई।

अंग्रेज सैनापति जनरल हियुगफ ने पच्चीस हज़ार पैदल फौज और एक बड़े तोपखाने के साथ पंजाब में प्रवेश किया। उस के खिलाफ शानदार सिक्ख सेनाएं जनरल इशर सिंह की कमान में अंग्रेज़ों का मुकाबिला करने के लिये त्यार खड़ी थीं। १३ जनवरी १८४९ के दिन चेलियां वाला (गुजरात) के मैदान में भ्यानक लड़ाई लड़ी गई। दोनों ओर की सेनाएं जी जान से लड़ी। इस लड़ाई में दोनों ओर के सैकड़ों सैनिक मारे गये मगर किसी पक्ष ने भी अपनी प्राजय स्वीकार नहीं की। उस के कुछ दिन बाद पेरोशाह के स्थान पर फिर मुकाबिला हुआ जिस में सिक्ख सेना का नाश हो गया और सारा पंजाब अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया।

गुजरात की लड़ाई में पराजय होने के बाद सिक्ख सैनिक तितर बित्तर हो गये और अपनी जानें बचाने के लिये चारों ओर भाग निकले। उस संकट काल में उन्हें शरण देना बड़ा मुश्किल काम था, मगर वटाला के निर्भय चिब्बों ने अपनी परमप्राओं को नछोड़ा और उन्हों ने सिक्ख सैनिकों को अपने पास ठहरा लिया और अपने अतिथि मान कर उन की यथा शक्ति सहायता की। इस से बहुत पहले की बात है जब लखपत और जसपत ने काहनोवां के जंगलों में छिपे हुये सिक्खों का तमाम जंगल को आग लगा कर सर्वनाश करना चाहा था और वहां सिक्ख जलाये भी गये थे। उन में बचे हुये सिक्ख शिवालिक की पहाड़ियों की ओर भागे थे। उन में से भी कुछ रावी नदी के तूफान में डूब कर मर गये थे। बाकी बचे सिक्खों का एक जत्था सांबा से होता हुआ "देवा-वटाला" तक जा पहुंचा था। यह भी एक कारण हो सकता है कि सिक्ख गुजरात की लड़ाई में हार जाने के बाद "देवा-वटाला" गये हों। इस बार सिक्ख सैनिक हालात सुधरने तक वहां ही रहें होंगे क्योंकि १९४७ में उजड़ने के

दिनों तक सिखों के लगाए हुये आमों के कई पेड मौजूद थे जिन को सिखों वाले आमों के नाम से पुकारा जाता था। हमें बड़े बूढ़े यही बताते थे कि यह पेड़ सिखों ने जलावतनी के दिनों इधर रहते हुये लगाए थे। वह पेड आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं।

अमृतसर संधी के अनुसार जम्मू कश्मीर के शासिक अंग्रेज़ों के मित्र बन चुके थे। उन दिनों बाहर से आये सिखों को अच्छा नहीं समझा जाता था। जब रियास्ती सरकार को "देवा-वटाला" में सिखों के रहने का पता चला तो इलाके के सरदार से इस के लिये पूछताछ की गई। मगर उस ने सरकार की तनिक परवाह न की और शर्ण में आये बहादरों का तृसकार करना उचित नहीं समझा। उन्हें अपने पास ही रखा। सरकार को यह बात अच्छी तो न लगी होगी पर पता नहीं किस गर्ज़ के लिये वह चुप ही रही थी और उस ने कोई विशेष पग नही उठाया।

रियासत जम्मू कश्मीर के जन्म से ले कर "देवा-वटाला" के चिब्बों ने जो नीती अपनाई थी उस से सरकार किसी समय भी खुश न रही थी। सरकार ने सेना द्वारा गांव भी जलाए और प्यार से भी उसे किसी प्रकार की सफलता न मिल सकी। देवा-वटाला के निवासी बड़े अंखीले, स्वातन्त्रता प्रेमी और आन पर मर मिटने वाले लोग थे। वे किसी ऐसी बात को सह भी नहीं सकते थे जिस से उन की इज्ज़त को वट्टा लगता हो। इस प्रकार उन की जम्मू कश्मीर सरकार से कभी भी बन न सकी थी। सरकार भी उन के साथ कभी न्याय नहीं कर सकी। उन्हें हमेशा सैनिक और सिवल पदों से वंचित रखा गया। इस तरह उन्हों ने रियास्ती सेना की बजाए अंग्रेज़ी सेना में भरती होना ही उचित समझा। ब्रिटिश सेना में भरती सैनिकों ने युद्ध के हरेक क्षेत्र में बड़े अदभुत कार्य किये जिन्हें देख कर अंग्रेज़ अफिसर हैरान रह गये थे। अपनी वीरता के फलस्वारूप इस इलाके के सैनिकों ने बड़े अच्छे अच्छे पद प्राप्त किये। अंग्रेज़ अफिसरों द्वारा उन की वीरता की बड़ी सराहना हुई और उन्हें कई प्रकार के सैनिक पुरूस्कार भी दिये गये। प्रथम महा युद्ध में इस इलाके के हज़ारों सैनिकों ने भाग लिया जिन मैं ७४ वीर गति को प्राप्त हुये। इस तरह इन वीरों की रूचि रियास्ती सेना में भरती होने से हट कर ब्रिटिश सेना की ओर बढ़ गई।

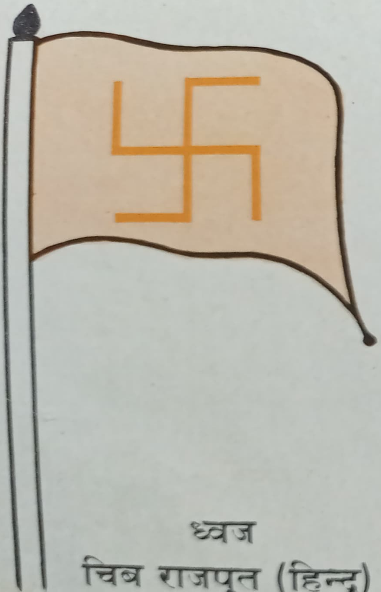
अब देवा वटाला नष्ट हो चुका है। केवल उस का नाम रह गया है। किसे मालूम है कि हमारे जीवन काल में उस पुण्य भूमी के दर्शन भी होंगे या नहीं ? मगर वह इलाका वास्तव में वीर उपजाऊ खण्ड था। उस इलाके के लोग दिल के साफ और बात के बड़े पक्के थे। वे स्वयं तो मिटना जानते थे मगर किसी दूसरे पर अत्याचार होते नही देख सकते थे। स्वातन्त्रता ही उन का जीवन और मरन था। अगर कोई विवश हो कर उन की शर्ण में आ जाता था तो वे उसे अपने प्राणों से बढ़ कर प्यारा समझ कर उस की रक्षा करते थे। शणार्थी की रक्षा के लिये चाहे उन्हे कितनी भी कुर्बानी देनी पड़े वे उस के लिये तैयार रहते थे। उन्होंने देश भक्तो का हमेशा साथ दिया और उन की अपनी शक्ति से बढ़ कर सहायता की थी। वे ऐसे कामों के लिये राजा के साथ भी टक्कर लेने से झिझकते नहीं थे। इस इलाके की वीरता, देश भक्ती और अतिथि सेवा की कहानियां दूर दूर तक फैल चुकी थी। इस का जिन्दा सबूत पंजाब के महान देश भगत चौधरी राम भज दत्त के भाषण से मिल जाता है जो उन्हों ने मार्शल ला के दिनों सियालकोट में दिया था। उन्हों ने लाखों लोगों के समूह में गरजते हुये कहा था। "पंजाबियो। अगर आप देश भक्ती की अमली तस्वीर देखना चाहते हो तो रियासत जम्मू कश्मीर के इलाका "देवा वटाला" के देश भक्तों से सबक हासिल करो। जिन्हों ने जमाना-ए-कदीम से हरेक काल में देश प्रेमियों की हर सम्भव सहायता की है और उन का पक्ष लिया है। अभी कल की बात है अंग्रेजों द्वारा पराजित सिक्ख सैनिकों को "देवा-वटाला" के लोगों ने अपने घरों में रखा था। हालांकि रियासती सरकार इस बात के लिये बड़ी नाराज थी और अंग्रेज़ भी इस इलाके पर कडी नज़र रखे हुये थे। इतना कुछ होते हुये भी वहां के वीरों ने हरेक प्रकार के दबाव से बाहर रह कर देश भक्तों को अपने घरों में अपने प्रियजनों की तरह रखा और दो सरकारों की शत्रुता मूल लेकर देश भक्ती का वह अदभुत नमूना देश के सामने रखा था जिस की मिसाल नहीं मिल सकती है"।

प्रथम महायुद्ध में देवा-वटाला के वीरों की वीरता से प्रभावित हो कर इस इलाके से अधिक भरती करने पर बल दिया जाने लगा था। द्वतिया महा युद्ध तक इस इलाके के सैनिकों की संख्या हज़ारों तक पहुंच चुकी थी। युद्ध के कई क्षेत्रों में वहां के वीरों ने बड़े साहस हिम्मत और वीरता के कारनामें कर दिखाए थे। नायब सूबेदार प्रकाश सिंह चिब ने अपनी अनुपम

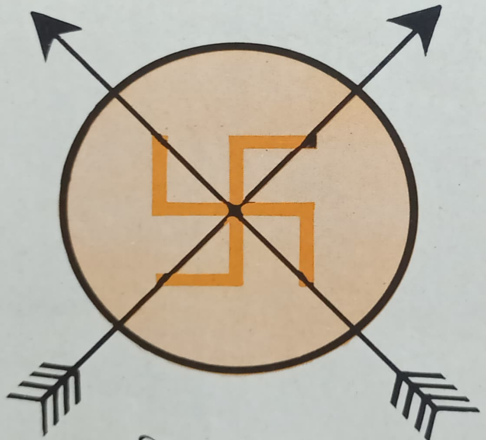
वीरता और अदभुत बलिदान के लिये उस समय का सब से बड़ा सैनिक पदक विक्टोरिया क्रास प्राप्त किया था और उन्हों ने अपनी जन्म भूमी की परमप्राओं को अमर बना कर वीर गति पाई थी।

नेता जी सुभाष चन्द्र की आज़ाद हिन्द फौज में भी पहल उसी इलाका के स्वातन्त्रा प्रिय सैनिकों ने की थी। वे उस समय जब अन्य सैनिक आना-कानी कर रहे थे बेधड़क आज़ाद हिन्द फौज में शामिल हो गये थे। नेता जी के नेतृत्व में इलाका घिब्भाल के सैंकडों सैनिको ने युद्ध क्षेत्रों में लड़ते हुये वीर गति पाई थी। उस समय नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के निजी सचिव लेफ्टिनेन्ट कर्नल हबीबउलरहमान चिब थे। उन्होंने सब से बढ़चढ़ कर नेता जी का साथ दिया और इतना विश्वास प्राप्त कर लिय था कि नेता जी ने अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक उन्हें अपने अंगसंग रखा था। वे हवाई जहाज़ की दुर्घटना के समय भी नेता जी के साथ थे। देश के विभाजन के बाद वह पाकिस्तान नहीं जाना चाहते थे मगर हालात से मजबूर होकर उन्हें जाना पड़ा था। उधर जाने से पहले उन्होंने अपने कई हिन्दू मित्रों से कहा था "अब मैं मज़हबी केदोबन्द में जीने के काबिल नहीं रहा हूं" मगर बटवारे ने क्या कुछ नहीं किया। आखिर उन्हें अपना फैसला बदलना पड़ा था। ऐसा करना किसी चिब के लिये एक बड़ी बात होती है।

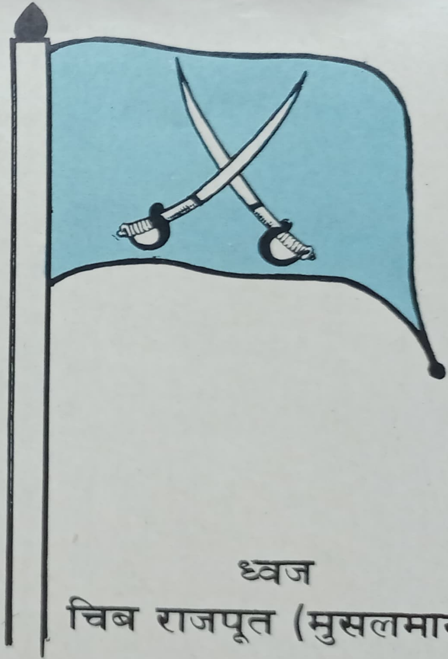
द्वितिया महायुद्ध के बाद हालात ने तुरन्त पल्टा खाया। आज़ाद हिन्द फौज के बन जाने पर अंग्रेजों को मालूम हो गया था कि अब भारत पर राज पाठ चलाना आसान नहीं रहा है। उस के बाद फरवरी १९४६ में भारतीय नौ सेना के विद्रोह से और भी स्पष्ट हो गया था। उन दिनों भारतीय नौ सेना की कमान तीन दिन तक भारतीय अफिसरों और जवानों के हाथ रही थी। हालात को देखते हुये सरकार ने आज़ाद हिन्द फौज के खिलाफ खड़े किये तमाम केस वापिस ले लिये थे। भारत की आज़ादी की मांग दिन प्रति दिन ज़ोर पकड़ती गई। बर्तानिया की लेबर सरकार ने भारत को आज़ाद करने में ही अपनी भलाई समझी। उस शुभ घड़ी के लिये १५ अगस्त १९४७ का दिन निश्चित हुआ। उस तिथि को रात के बारह बज कर एक मिन्ट पर यूनियन जक का स्थान भारतीय ध्वज तिरंगे ने ले लिया। नेता जी का वर्षों पुराना सपना साकार हो गया। अनेक शहीदों की अमर आत्माएं तृप्त हो गई। दिल्ली के लाल किले पर स्वातन्त्र भारत का ध्वज आन बान से लहराने लगा।



ध्वज
चिब राजपूत (हिन्दू)



भिम्बर राज्य
राजकीय चिन्ह



ध्वज
चिब राजपूत (मुसलमान)

देवा-वटाला का पतन

भारत बट कर स्वातन्त्र हो गया। भारत के एक टुकरे को पाकिस्तान के नाम से पुकारा जाने लग पड़ा। पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दूओं को महा बलिदान देने पड़े। नया जन्म लेने वाले पाकिस्तान में मार काट की होली खेली जाने लगी। हज़ारों निहत्थे शहरियों को अकारण गोलियों से भूना जाने लगा। लाखों को सदा के लिये नाकारा बना दिया गया। नौजवान स्त्रियों और कन्याओं पर अमानवीय अत्याचार होने लगे। लहु की नदियां बहने लगीं। लोग अपने अपने घरों को छोड़ कर अपनी जानों को बचाने के लिये इधर उधर भागने लग पड़े।

जम्मू कश्मीर राज्य की सैंकड़ों मील सीमाएं पाकिस्तान के साथ मिलती थीं। पकिस्तानी पंजाब और सीमा प्रांत से अनगणित हिन्दू, सिक्ख अपने अपने घर द्वार छोड़ कर जम्मू कश्मीर में प्रवेश करने लगे। यह सच है कि जम्मू कश्मीर लाखों इन्सानी जानों को बचाने की सहायक सिद्ध हुई। महाराजा सरकार ने दुखी अतिथियों की अपनी शक्ती से बढ़ कर सहायता की थी। स्वर्गीय महाराजा हरि सिंह जी ने स्वयं स्थान स्थान पर जा कर ज़रूरतमन्दों में राशन और कपड़े बांटने का अपने कर कमलों द्वारा शुभ कार्य किया था। उन दुखियों को आगे बढ़ने के लिये जम्मू कश्मीर से बड़ा सहारा मिला था और लाभ हुआ था।

हिन्दू सिक्खों की लूट मार के बाद पाकिस्तान की अपवित्र नजरें जम्मू कश्मीर को हड़प करने में लगी हुई थीं। थोड़े समय के बाद जम्मू कश्मीर पर भी हमले होने शुरू हो गये। पाकिस्तान के हमलों का रियासत के लोगों ने पहले तो उचित जवाब दिया, मगर यह हमले रुकने वाले नहीं थे। पाकिस्तान की लालची फौज और भाड़े के टट्टू कबाइली कहां रुकने वाले थे। जबकि पाकिस्तानी फौज का हाथ उन की पीठ पर था।

उन दिनों रियासत जम्मू कश्मीर का "देवा-वटाला" एक मात्र इलाका था जिस के वीरों की वीरता से कराची और लाहौर कांपते थे, जिस की

सदियों पुरानी धाक पाकिस्तानी पंजाब पर जमी हुई थी। यह बात सच्च थी क्योंकि इस इलाका के लोगों से लोहा लेना कोई आसान काम न था। यहां के अधिकतर लोग शिक्षित सैनिक थे। वैसे भी हरेक घर में एक दो बन्दूकें ज़रूर हुआ करती थीं। इस के साथ ही वह लोग शत्रु से निपटने के ढंग को भली प्रकार जानते थे।

१९३१ की घटनाएं इस बात की साक्षी थीं। उन दिनों जम्मू कश्मीर में साम्प्रदायक दंगों में बहुत संख्यक मुस्लिम इलाकों में हिन्दू सिक्खों पर बड़े अत्याचार हुये थे और हज़ारों हिन्दू सिक्ख परिवार अपने अपने घर बार छोड़ कर भाग आये थे। कई कई दिनों तक हिन्दू सिक्ख देवियां अपने सतित्व को बचाने के लिये जंगलों में भूखी प्यासी छुपी रही थीं। महाराजा सरकार ने उस आग को ठंडा करने की बड़ी कोशिश की थी फिर भी वह भयानक आग बढती ही गई थी। पहले पहल वह आग कश्मीर की घाटी में बढ़की और फिर धीरे धीरे जम्मू प्रान्त में भी फैल गई थी। राजौरी, पुन्छ और मीरपुर भी उस से बच नहीं सके थे। उस संकट काल में भी देवा-बटाला के वीरों ने अपनी जानों पर खेल कर अपनी परमप्राओं को बचा लिया था और कुछ दिनों के अन्दर ज़िला मीरपुर में शान्ती स्थापित कर के अपने नाम की धाक सारे पश्चिमी पंजाब में बिठा ली थी। वहां के लोगों के साहस और वीरता पर प्रसन्न होकर महाराजा सरकार ने देवा-वटाला के मुखिया ठाकुर साधु सिंह ज़ैलदार को १३७/- रुपये वार्षिक जागीर अलौंस देकर सम्मानित किया था। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये पाकिस्तान की इस ओर कड़ी नज़र लगी हुई थी। "देवा-वटाला" विजय करने के लिये वह बड़ी देर से योजना बना रही थी। अपनी योजना की सफलता के लिये मुस्लिम लीग के नेताओं ने अजनाला के खान मोहम्मद खां से विचार विमर्श किया था मगर पहले उस ने इसे एक मुश्किल काम कह कर कन्नी कतरा ली थी। खान के अतिक्ति और किसी में भी इस काम को करने की शक्ति नहीं थी, किसी में साहस न था। इस की विजय के पश्चात ही पाकिस्तानी घुसपैठ सम्भव थी।

"देवा-वटाला" विजय के लिये एक नई योजना बनाई गई। बड़ी संख्या में क़बाइलियों और मियांवली के छाछी मुसलमानों को जलालपुर जट्टां और कड़ियांवाला में इकट्ठा किया गया। उन के साथ खान मोहम्मद खां के गुन्डे भी मिल गये। बाहरवाल के नम्बरदार मोहम्मद खां से सहायता ली गई।

इतना करने पर भी योजना सफल होती दिखाई न पड़ी। उस के बाद अजनाला में एक बार फिर सोच विचार के लिये नेतागण बैठे और निर्णय हुआ कि इस महाकार्य की सफलता के लिये बड़ी संख्या में फौज का साथ होना बड़ा ज़रूरी रहेगा। परन्तु फौजी अफिसरों से बातचीत करने का फैसला हो गया। बातचीत हुई और सेना ने हमला करने वालों का साथ देना मान लिया।

पाकिस्तान में मार काट का तूफान सब से पहले कराची से उठा था। थोड़े दिनों के अन्दर पंजाब भी जलने लगा। उस का असर जम्मू कश्मीर पर पड़ना लाज़मी था। १५ अगस्त तक रियासत में अमनोशान्ती बनी रही। पंजाब से उजड़े लोगों के जत्थे आते रहे। दिन रात नर सिंहार होता रहा अमानवता की सीमांए टूट गईं।

पंज़ाब जले और जम्मू कश्मीर सुरक्षित रहे यह कैसे हो सकता था। आखिर वह समय आ गया। लूट मार के इच्छुक गाज़ी पाकिस्तानी सेना के साथ सीमाओं पर आ गये। महाराजा सरकार के पास फौज कम थी। कुछ विभिन्न मोर्चों पर मारी गई थी। नागरिकों को अपनी रक्षा खुद करनी पडी। ऐसे मुश्किल के समय "देवा वटाला" के लोग कहां पीछे रहने वाले थे। उन्हों ने सीमाएं संभाल लीं और वे यथा शक्ति कार्यशील हो गये। तीन महीनों तक यह बहादुर लोग निरन्त्र सीमा पर डटे रहे। पाकिस्तानियो को एक इंच आगे बढने का साहस न हो सका। जब इन को पाकिस्तानी हमले की टोह लगती। तुरन्त ढोल बजाए जाते। ढोलों की आबाज सुन कर हज़ारों लोग सीमा पर चले जाते जिन्हें देखते ही दुशमन को पसीना छूटने लग जाता था।

कुछ समय ने बाद सीमा पर मैं, मैं तु, तु होने लगी। पाकिस्तानियों ने पूरी त्यारी के बाद ८ अक्टूबर १९४७ के दिन भंगाली नाम के गांव पर हमला कर दिया जिस का रियासती सैनिकों ने उचित जवाब दिया। सैनिकों के पास खडे हज़ारों वीर मौत का भय त्याग कर बलिदान होने को तैयार थे। जोशीले वीरों ने लड़ने की आज्ञा चाही मगर सैनिक कमांडर से अनुमति न मिल सकी। दूसरे दिन प्रातः काल पाकिस्तानी सेना को कुमक मिल गई और शत्रु ने ज़ोरदार हमला कर दिया जिस के फलस्वारुप हमारे सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। समय के अनुसार सैनिक कमांडर ने जनता से सहायता

मांगी। यह सुन कर हज़ारों बलिदानी वीर गगनवेदी नारे लगाते हुये दुशमन पर टूट पड़े। क्षण भर में शत्रु की गनों के मुंह बन्द हो गये और उस ने पीछे भागने में ही अपनी भलाई समझी। शत्रु सेना पीछे भाग गई। निर्भय जनता सीमा पार कर गई और चार पाकिस्तानी ग्रामों को जला कर लौट आई। उस के तीसरे दिन बाद फिर पाकिस्तानी सेना ने अपने मोर्चे संभाल लिये। भंगाली के हमले के बाद इलाका भर के अवकाश प्राप्तकर्त्ता सैनिकों को उन के पदों के अनुसार संगठित कर के उन्हें सीमा के महत्व पूर्वक स्थानों पर चौकियां बना कर बिठा दिया गया था। उन देश भक्तों के पास देसी रायफलों के अतिरिक्त कुछ कारतूसी बन्दूकें भी उपलब्ध थीं जिन के साथ वे अपनी जन्म भूमी की रक्षा करते थे। फौजी ढंग से पहरा दिया जाता था। यह कार्याक्रम देश की स्वातन्त्रा के बाद कई महीने चलता रहा और आक्रमनकारी आगे न बढ़ सके।

भिंब्रर का ऐतिहासिक नगर जो सदियों से चिब्बों की राजधानी रह चुका था और तहसील हैडक्वाटर था। अब पाकिस्तान उस शहर को घेरने की सोच रहा था। शहर की रक्षक डोगरा सेना बड़ी अल्प संख्या में थी मगर डोगरे वीर सतर्क और अन्तिम बलिदान के लिये तैयार थे। उन्होंने वायरलेस द्वारा सम्पर्क करने के यत्न भी किये मगर सफलता न मिल सकी। सहायता मिलती भी कहां से जबकि जम्मू कश्मीर की डोगरा सेना के अधिकतर सैनिक मात्री भूमी की रक्षा करते हुये शहीदगति प्राप्त कर चुके थे।

उस संकट काल में परगोवाल निवासी कप्तान गंधर्ब सिंह मन्हास तहसील अखनूर के मन्चले नौजवानों को साथ लेकर शस्त्र संभाल कर भिंबर में चारों ओर से घिरी डोगरा फौज और जन्ता की सहायता के लिये चल पड़े। रूस्तमे जम्मू कश्मीर फंजू पहलवान भी उन के साथ था। जब वे लोग कढाला गांव पहुंचे तो पता चला कि पाकिस्तानियों ने सड़क तोड़ दी है और घात लगाए बैठे हैं। इतना जानते हुये भी वह वीर आगे बढ़े। थोड़ी दूर आगे जाने पर गोलियों का तबादला होने लगा। मुसलमानों के पास दारू सिक्का कम होगा या सैनिक शक्ति का अभाव रहा होगा। इस लिये वे भाग गये। सड़क को ठीक करने के पश्चात सिर पर कफन बांधे कप्तान गंधर्ब सिंह और उन के साथी भिंबर की ओर बढ़े। भिंबरनदी को पार करके जब वे लोग शहर

में प्रवेश करने ही वाले थे, उन की हैरानी की कोई हद न न रही जब उन्होंने वहां के हाई स्कूल को कबाइलियों से भरा हुआ देखा।

यह देखते ही उन्होंने कबाइलियों पर हमला बोल दिया। गोलियों के बाद हत्था पाई की भीषन लड़ाई शुरू हो गई शत्रु के अधिकतर लोग जो खाना बना रहे थे डोगरा वीरों की तलवारों से कटगये। शेष अपनी जानें बचाने के लिये जंगल की ओर भाग खड़े हुये। इस लड़ाई में चार डोगरा वीर भी बलिदान हो गये। मरने वाले कबाइलियों की संख्या बहुत ज्यादा थी। शत्रु से निपटने के बाद विजई वीर बड़ी शान से शहर में दाखिल हुये, घेरे में फसे नागरिकों ने उन का हार्दिक स्वागत किया।

शहर की तमाम चौंकियों को दृढ बनाने और दस दिन वहां रह कर वे देश भक्त जम्मू से अधिक सैनिक सहायता लेने के लिये आ रहे थे। जब वे कढाला के उसी स्थान पर पहुंचे तो उन पर ज़ोर दार हमला हो गया। इस बार पाकिस्तानी पूरे तैयार थे। मुकाबला शुरू हो गया। सैनिक गाड़ियों के टायर नष्ट हो गये। कप्तान गंधर्ब सिंह लड़ते हुये जगंल की ओर भागे। मगर बच न सके और वहां पर ही शहीद हो गये। लड़ाई जारी थी। डोगरा फौज को सहयाता मिल गई। पाकिस्तानी अपने गाज़ियों की लाशे छोड़ कर पीछे भाग गये। शहीद कप्तान के शव को निकाल लिया गया और फैज़ू पहलवान अपने अन्य साथियों के साथ फिर भिंबर को लौट गया और शहर के उजड़ने तक वहां रहा। शहीद कप्तान के शव को वटाला के रास्ते जम्मू ले जाया गया और सैनिक सम्मान के साथ उन के गांव में दाह संस्कार कर दिया गया।

उस के बाद पाकिस्तानियों ने भिंबर को विजय करने का पक्का विचार बना लिया और उन्होंने २९ अक्टूबर की रात को शहर को मॉटरों, टैंकों और तोपों से खण्डहर बना दिया। उन दिनों ऐसा पहली बार हुआ था जबकि निहत्थे शहरियों को नष्ट करने के लिये बड़े शस्त्रों को प्रयोग में लाया गया था। जब शहरियों को बचने की कोई उमीद न रही तो भिंबर के नौजवान वकील जगदीश मित्र ने सैंकड़ों देवियों को ज़हर बांट दिया ताकि पाकिस्तानी भेडिये जीते जी उन के सतित्व को भंग न कर सकें। सदियों से बसने वाले अपनी जन्मभूमी को सदा के लिये छोड़ कर भागने लगे। घायल और

अंगहीनों की चीख़ो पुकार से धरती कांप रही थी। रोने चिल्लाने के साथ पानी मांगने वालों को कोई सुनने वाला न था।

उस सकंट काल में एक डोगरा वीर ऐसा भी था जिस की दोनों टागें गोलों से उड़ गई थीं और जो चलने के काबिल न रहा था। उसने मरते हुये अपने साथी डोगरा सिपाइयों से कहा था "मुझे मशीनगन दे जाओ ताकि मैं मरने की अन्तिम घड़ी तक दुश्मन का लहु पी सकूं" विवश सैनिकों ने अपने साथी की अन्तिम इच्छा किसी तरह पूरी कर दी। इस तरह उस मरते हुये गुमनाम शहीद ने लगातार १३ घंटे फायरिंग जारी रखी, उस ने जीते जी शत्रु के अपवित्र पांव शहर में पड़ने नहीं दिये और सैंकड़ों जानों को बचाने का अवसर उपलब्ध कराया। ३० अक्टूबर की शाम तक कढाला तक का तमाम इलाका पाकिस्तानी फौज के अधिकार में चला गया और स्वाय गली सडी लाशों के एक भी हिन्दू सिक्ख उस पार न रहा।

भिंबर विजय के बाद पाकिस्तान का दूसरा निशाना देवा-वटाला था। यह वह समय था जब पाकिस्तान सरकार ने जम्मू कश्मीर पर बड़ा हमला करने का हुक्म दे दिया था। ५ नवम्बर को उन्होंने बड़ी तैयारी के साथ अम्बडयाला के पश्चिम की ओर द्वाडा के पार हल्ला बोल दिया। इस पर ढोल पीटे गये। सारे इलाके में यह खबर आग की तरह फैल गई। हज़ारों की संख्या में रणबांकुरे इकट्ठे हो गये। उस समय रियास्ती फौज के केवल २५ सैनिक साथ थे। जो इतने बड़े हमले से घबरा रहे थे। अभी सोंच बिचार हो ही रही थी। बड़े बूढे किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाये थे कि नौजवान गगन वेदी नारे लगाते हुये दुश्मन पर टूट पड़े। हज़ारों जवानों की खूंखार ललकार के सामने दुश्मन की मशीन गनों के मुंह बन्द होगये। मियांवाली के छाछी होसला छोड़ गये। कबाईलियों के लोगों ने डण्डों से सिर फोड़ दिये। दुश्मन भाग निकला। जवानों ने शत्रु का बहुत दूर तक पीछा किया। पाकिस्तान बनने से लेकर सीमा पर सैंकड़ों बार झडपें हुई थीं मगर अम्बडयाला की विजय देवा-वटाला की सब से बड़ी विजय थी।

इस भीषण लड़ाई में वटाला के संसार सिंह चिब ने वीरता का अदभुत परिचय देते हुये अपनी तलवार से तीन कबालियों के सिर काट कर उन से पठानी रायफलें छीन ली थीं और चौथे के साथ लड़ता हुआ अमर गति को

प्राप्त हो गया था। इसी गांव के एक कतियालु रामदासिया ने भी उदभुत मिसाल पेश की थी जबकि उस ने बांस के सोटे से एक बड़े मोटे पठान को मार कर उस से रायफल छीन ली थी। इन दो के अलावा गुलवहार गांव के सरदार बान सिंह के सपुत्र सरदार करतार सिंह ने भी वीरता का अदभुत नमूना कर दिखाया था। उस ने भी कई पठानों को मार कर जामेशहादत पिया था। इस लड़ाई में दुश्मन को भारी नुकसान उठाना पड़ा था। उस के ८५ व्यक्ति हताहत हुये १३, पठानी रायफिलें एक मशीनगन और १० हजार गोलियों के अतिरिक्त छः ऊंट और एक घोड़ी हमारे हाथ लगी थी। इस अनुपम विजय पर हमारे वीरों के होस्ले बड़े बुलन्द हो गये थे और पाकिस्तानी गाजियों से लड़ना उन के लिये बच्चों का खेल बन गया था।

उस लड़ाई के परिणाम से भयवीत हो कर पाकिस्तान सरकार भी कोई बड़ी योजना वनाने के लिये विवश हो चुकी थी। क्योंकि गुजरात के गूजर तो पहले ही इस इलाके से कांपते थे। अम्बडयाला की कार्यावाही तो छाछी और कबालियों की शह पर की गई थी। जब यह दोनों भी कुछ न कर सके तो फिर पाकिस्तानी कुछ सोचने के लिये मज़बूर हो गये थे। उस लड़ाई के बाद सीमा पर गोलियां चलना बन्द हो गया। पाकिस्तान की देवा-वटाला विजय करने की इच्छा दम तोड़ते हुये दिखाई देने लगी। उस लड़ाई की सूचना जब महराजा हरि सिंह ने सुनी तो वे देवा-वटाला के वीरों पर बड़े प्रसन्न हुये थे। वे फौजी गणवेश में स्वंय वटाला आये। उन्हों ने जीपगाड़ी में सारे इलाके का दौरा किया और वीरों को शावाश दी थी। उस समय इस इलाके के मुखिया ठाकुर प्रभात सिंह ज़ैलदार थे। वे विधायक भी थे और महाराजा बहादुर ने उन्हें अबैतनिक लफिटनेन्ट भी बना रखा था को मुबारिक दी थी और उचित समय आने पर उस इलाका को विशेष इलाका घोषित करनें का बचन दिया था। भगवान को यह सब कुछ मन्जूर न था। उस इलाके के नाम के दिन समाप्त हो चुके थे..........उस के भाग्य में पतन के स्वाये शेष कुछ न रहा था कुछ न बचा था।

अम्बडयाला की घटना के बाद कुछ दिनों तक सीमा पर पूर्ण शान्ती बनी रही और खामोशी छाई रही। शत्रु के मन में पाप था। वह अम्बडयाला की

हार का बदला चुकाना चाहता था। उन दिनों पाकिस्तान से कुछ हिन्दू परिवार छुप कर निकल आने में सफल हो कर बटाला आ गये थे। उन्हों ने बताया कि पाकिस्तान बटाला को नष्ट करने पर तुला हुआ है। इस बात को सुन कर देवा-बटाला के मुख्या ठाकुर प्रभात सिंह सरकार को सूचित करने के लिये जम्मू गये। वहां उन्होंने सेना के कमांडर ब्रिगेडियर कुल्बन्त सिंह और राज्यपाल श्री चेत राम चौपडा से मिल कर उन्हें सारी स्तिथि से अवगत कराने के साथ साथ उस इलाके की वीरता, कठिनायों और शस्त्र हीनता के बारे में सरकार को सूचित करने के अतिरिक्त इलाके के सैनिक महत्व को भी समझाया था। जिस के फलस्वारूप पहली पटियाला बटालियन की एक कम्पनी उस क्षेत्र में भेज दी गई। कम्पनी कमांडर वहां के रहने वालों के साहस को देख कर बड़ा प्रभावित हुआ था। जनता द्वारा चलाए जा रहे सीमा सुरक्षा प्रबन्धों को देख कर फौजी कमांडर बड़ा खुश हुआ था। वह कुछ दिन उधर रह कर ओर कुछ हथियार अवकाश प्राप्तकर्ता सैनिकों को बांट कर जम्मू लौट आया और उस ने अपने बड़े कमाडरों को सब अच्छा बोल दिया था।

पहली पटियाला का यह "सब अच्छा" देवा-बटाला के लिये बड़ा बुरा सिद्ध हुआ। जिस सैनिक सहायता के लिये इतनी कोशिश हुई थी इतना संघर्ष हुआ था वह मिल न सकी। ग्रामीन बहादुर कई महीनों से दिन रात जागते रह कर थकते जा रहे थे फिर भी उन्हों ने साहस और हिम्मत को नहीं छोड़ा था। वे बड़े पक्के इरादे के साथ सीमा सुरक्षा में लगे हुये थे। जब कभी छेड़ छाड़ होती थी उस का मुंह तोड़ जवाब दिया जाता था। उन दिनों जम्मू कश्मीर के चीफ एमर्जेन्सी अफिसर बक्शी गुलाम मोहम्मद बनाये जा चुके थे। सैनिक गतिविधियों में राजनीती ने प्रवेश कर लिया था। "देवा-बटाला" के नेताओं की बार बार प्रार्थनाओं पर भी किसी प्रकार की कोई सैनिक सहायता नहीं दी गई क्योंकि महाराजा सरकार का स्थान लेने वाले उस इलाके के पुराने इतिहास से बड़ी अच्छी तरह परिचित थे। वे ऐसे इलाके को सुरिक्षत रख कर हमेशा के लिये सिर दर्द मूल नहीं लेना चाहते थे। इस रहस्य से सैनिक कमांडर और भारत सरकार दोनों बेखबर थे। रियासत के यह राजनीतज्ञ शायद यह नहीं जानते थे कि अगर देवा-बटाला चला गया तो फिर

जम्मू का बचना भी मुश्किल हो जाएगा।

अम्बडयाला की लड़ाई के बाद १८ दिन तक पूर्ण शान्ती बनी रही। सीमा पर कोई हमला ना हुआ, कोई गोली न चली। रणबीरगढ़ (क़िला पढ़ार) के ऊचें बुर्जों पर चढ़ कर हम अकसर दूर्बीनों से देखा करते थे। उस लड़ाई के बाद सरहद पर बसने वाले पाकिस्तानी ग्राम बिल्कुल खामोश हो गये थे। दूर दूर तक कोई भी व्यक्ति काम काज करता और चलता फिरता दिखाई नहीं देता था और मीलूं तक धूंएं का नामोनिशान भी दिखाई नहीं पड़ता था। शत्रु की यह चुप्पी आने वाले भारी तूफान का संकेत करती थी। इस के परिणाम से डोगरा सैनिक और हम लोग अपरिचित नहीं थे मगर विवश थे।

पहले भी बताया जा चुका है कि रियासत की फौज उस लम्बे चौड़े इलाके की रक्षा के लिये काफी न थी। ग्रामीन कई महीनों से सीमा सुरक्षा में लगे हुये थे। कुछ अवकाश प्राप्त करता सैनिकों ने सीमा के महतव्यपूर्ण स्थानों पर चौकियां बना रखी थीं। ऐसी हरेक चौकी पर कम से कम २० सैनिक माजूद रहते थे। वे ३०३ रायफलों, कारतूसी दोनालियों, तलवारों, देसी नेज़ों और गन्डोसा से लैस होते थे। ऐसी एक चौकी का नेता सूबेदार होता था। ज़ैलदार चरण दास तमाम चौकियों के निगरान और ठाकुर प्रभात सिंह ज़ैलदार निगरानेआला थे। ठाकुर प्रभात सिंह ज़ैलदार थे, उस के साथ महाराजा बहादुर ने उन्हें अवैतनिक लेफ्टिनैन्ट बना कर देवा-वटाला की रखवाली का कार्यभार सौंपा हुआ था।

सीमा की पहली चौकी सूबेदार कृपा राम के चार्ज में थी। सूबेदार कृपा राम बड़ा होशियार और देश भगत था। उस ने यह चौकी बड़े अच्छे ढंग से संभाल रखी थी। कुलियां चौकी पर सूबेदार हरि सिंह नियुक्त था। इस चौकी को भी बहुत बड़ा क्षेत्र सौपां हुआ था। इस प्रकार की तीसरी चौकी मोहकडयाला के दक्षिन की ओर बनाई गई थी इस को बरनाला, टिब्बा और खरबूज़े के रास्ते बढ़ने वाले दुश्मन को रोकने का काम सौंपा गया था। इस का नेता सूबेदार कर्म सिंह था। यह सूबेदार बड़ा वीर और बहादुर था। उस ने हत्थापाई की लड़ाई लड़ते हुये अमरगति पाई थी। मरने से पहले उस नें लगातार तीन महीनों तक दिन रात एक कर के सीमा की रक्षा की थी।

"रणबीर गढ़" की चौकी बड़ा महत्व्य रखती थी। उस पुराने क़िले में ग्रामीनों के साथ ४० डोगरा सैनिक भी रहते थे। यह वटाला के मुख्या द्वार के सामने पड़ती थी और इस रास्ते शत्रु के चढ़ आने का भारी खतरा था। इस की रक्षा की ज़िम्मेदारी सूबेदार वरियाम सिंह और शेर सिंह को दी गई थी। इन के पूर्व की ओर भंगाली नाम की एक और अहम और ज़रूरी चौकी थी। इस पर कई बार हमले हो चुके थे और लड़ाइयां लड़ी जा चुकी थीं। इस को सूबेदार ग्रीब चन्द और नायब सूबेदार जगत सिंह ने सभांला हुआ था। ज़ैलदार चरण रास भी अपना अधिक समय इसी चौकी पर गुज़ारते थे। ज़ैलदार चरण दास जम्मू कश्मीर के रसाला में काम कर चुके थे और वह सैनिक गतिविधियों के विशेषज्ञ माने जाते थे। उन के साथ सूबेदार जगत सिंह ने तो अपना जीवन मात्रीभूमि के लिये अर्पन कर रखा था।

इस के पूर्व की ओर देवा की सीमा शुरू हो जाती थी। उस की रक्षा के लिये देवा के वीर काम करते थे। उन्होंने भी इसी प्रकार सीमा सुदृढ़ और सुरिक्षत बना रखी थी। वैसे तो देवा की सीमा पर वटाला की तरह कोई बड़ा हमला नहीं हुआ था फिर भी ऐसा करना बड़ा ज़रूरी था।

सीमा की खामोशी और पाकिस्तानी लोगों के पीछे चले जाने से अनुमान लगाया ज़ाने लगा था कि दुश्मन की यह चुप्पी ज़रूर कोई रंग लायेगी। इस लिये कुछ धनि परिवार अपनी सम्पति और बाल बच्चों को ले कर चोरी छुपे निकलने शुरू हो गये थे। मगर अधिकतर लोगों ने जीवन की अन्तिम घड़ी तक जन्मभूमी में ही रहने का दृढ़ संकल्प बना लिया था। अगर कोई परिवार चोरी छिपे गांव छोड कर चला जाता तो दूसरे लोग उसे बड़ा बुरा मानते थे। उस सकंट काल में भागने वालों के नाम गद्दारों की सूचि में गिने जाते थे और यदि कोई भागता हुआ पकड़ा जाता था तो ब्रादरी उसे कड़ा दण्ड सुनाती थी ताकि अन्य ऐसा सोचने वालों को भी भय रहे। सब कुछ करते हुये भी कुछ लोग भागने लग पड़े थे। २२ नवम्बर १९४७ की रात को तीन परिवार बाल बच्चों सहित गांव छोड़ कर जम्मू की ओर चले आये थे। २३ नवम्बर को जक्खर में भारी पंचायत हुई और ऐसे लोगों को बुरा भला कहा गया। कई घन्टो तक हालात पर विचार होता रहा। शाम होने पर लोग अपने अपने घरों को चल पड़े। मैं और मास्टर दीवान सिंह भी बातें करते और हालात से

निपटने के लिये सोचते होये चलते जा रहे थे। अचानक हमें भंगाली और कोट जैंयमल के आस पास आग के शोहले बुलन्द होते दिखाई पड़े। हम ने सोचा सीमा पर पहरा देने वालों ने ठन्ड़ के बचाव के लिये आग जलाई होगी। मगर क्षण भर के अन्दर ही हमारी गल्त फहमी दूर हो गई। हमारी सोच ग़ल्त निकली। देखते ही देखते आग के शोहले तीब्र गति से आगे बढ़ने लगे और एक घन्टा के अन्दर कई मीलों तक फैल गये। गोलियां चलने लगीं, मॉटर के गोले फटने लगे और दुश्मन की गनों ने गर्जना शुरू कर दिया। इस प्रकार पाकिस्तानी सेना का हमला स्पष्ट हो कर सामने आ गया। यह जान कर विचार बनाया गया कि बूढ़ों, महलाओं और बच्चों को पीछे जंगलों में भेज दिया जाये और लड़ने योग्य सब लोग गांव की रक्षा में डट जाएं। यदि शत्रु की शक्ति अधिक हो तो उस पर छुप कर वार करके उसे क्षति पहुंचा कर गांव को बचाया जाए। यह सोच कर सीमा की रक्षा करने वालों के परिणाम से बेखबर नौजवान गांव के चारों ओर बचाव की जगहों पर मोर्चे संभाल कर अन्तिम बलिदान के लिये बेकरार हो कर बड़ी बेसबरी से दुश्मन का इन्तज़ार करने लगे।

शत्रु भी देवा-वटाला के वीरों की बहादुरी से बेखबर न था। वह यह भी जानता था कि जक्खर पर सीधा हमला किसी सूरत में भी सफल नहीं हो सकेगा। इस लिये पाकिस्तानियों ने नया तरीका निकाला। शत्रु अंधेरे का लाभ उठा कर जक्खर की बांई ओर से आगे उत्तर की ओर बढ़ता गया। वह छुप लुक कर किसी तरह गांव को घेरे में लेने का विचार बनाए हुये था। यत्न करने पर भी उसे सफलता न मिल सकी। उस ने अपना इरादा बदल लिया और वह सीधा ऊपर की ओर बढ़ता गया। उस समय गांव के अधिकतर लोग अपने बाल बच्चों सहत गाखड़ी के तालाब तक फैल चुके थे। यह गांव सीमा से आठ मील और जक्खर से तीन मील उत्तर की ओर है।

पहली रात आराम से कट गई। अगली सुबह के लिये फैसला हुआ कि लड़ने के अयोग्य व्यक्ति इसी स्थान पर रहेंगे और दूसरे सब लोग गांव की रक्षा के लिये पीछे लौट जाएंये। लौटने से पहले कुछ खा पी लिया जाना ज़रूरी था क्योंकि किसी को कुछ पता नहीं था कि वहां जा कर कैसे हालात का सामना करना पड़ेगा। सब लोग गांव को जाने की त्यारी में लगे थे।

सोमवार का दिन था। प्रातः के नौ बजने को थे। गाखड़ी के दक्षिन की ओर से एक गोली चली। उस के बाद दो तीन चलीं और फिर जंगल, नाले और पहाड़ गोलियों की तड़ातड़ से गूंजने लग पड़े। इस पर सब लोग अपना अपना सामान सिरों पर उठा कर उत्तर की ओर भागने लग पड़े। रास्ता तंग और कठिन होने के कारण लोगों को भागने में बड़ी मुश्किल आ रही थी। दर्भाग्यवश एक घोड़ी जिस पर रज़ाइयों का बड़ा गट्ठर लदा हुआ था तंग रास्ते में फंस गई। रास्ता रूक गया और लोगों के लिये मसीबत बन गई। उस मुश्किल की घड़ी में कुछ नौजवान आगे बढ़े उन्होंने रस्से काटे तब जा कर कहीं रास्ता खुला और लोगों को अपनी जानें बचाने का अवसर प्राप्त हुआ। पांच मिन्ट की वाधा पड़ जाने से बड़ा नुकसान हुआ। पाकिस्तानी सैनिक आगे बढ़ आये। जम्था उन की फायरिंग की चपेट में आ गई। बेशक रास्ता टेहड़ा था और घने जंगलों से गुज़रता था, फिर भी अत्यचारी शत्रु की गोलियों से हमारे लोग हताहत हो रहे थे। रोगी, बूढ़े और बच्चे साहस छोड़ रहे थे। कई माताएं अपने दूध पीते बच्चों को जंगल में फैंक कर अपने प्राण बचाने में लगी हुई थीं। वह दृश्य बड़ा भ्यानक और डरावना था। जो कुछ उस समय लेखक की आंखों ने देखा उसे लिखने की लेखनी में शक्ति नहीं है। पाकिस्तानियों के घोर अत्याचारों से धरती का कलेजा कांप उठा था। निर्दोश बच्चों की चीखों और पानी मांगने वालों की पुकारों से जंगल पहाड़ और नाले गूंज रहे थे। मां से बेटा और बहन से भाई बिछड़ने लगे थे। भगवान वह कैसी घड़ी थी। प्रभु ऐसा समय किसी पर न आए.........................

गाखड़ी के उत्तर में जब लेखक का सारा परिवार विछड़ गया और गांव की ब्राह्मन कन्या कुमारी कृष्णा गोली लगने से भूमी पर गिर पड़ी तो मेरी माता श्री ने भी होस्ला छोड़ दिया। उस ने मुझे जान बचाने के लिये भाग जाने के लिये कहा। मैं ने न कर दी और ज़ोर देकर कहा कि मां अगर तू मुझे बचाना चाहती है तो हिम्मत कर के आगे बढ़ अपितु में तुझे छोड़ कर एकेला कभी नहीं जाऊंगा। यह सुन कर मां की ममता ने जोश मारा। बेटे को बचाने की लालस में होस्ला हारी हुई मां में हिम्मत पैदा हो गई और हम दोनों बच निकले। आगे रास्ते में मुझे मेरी तीन वर्षीय चचेरी बहन सत्या मिल गई जो रास्ते में पड़ी रो रही थी। में ने अपना सारा सामान फैंक कर उसे उठा लिया। वह बच गई।

२४ नवम्बर के दिन कुछ अन्खीले लोग अपनी सदियों पुरानी परमप्राओं को लुटते देख कर सहन न कर सके। उन्होंने अन्तिम मुकाबिला के लिये बाधा समझकर अपनी जवान स्त्रियों और बेटियों को अपने हाथों से खतम कर दिया ताकि शत्रु के अपवित्र हाथ उन को छू ने न पाएं और निश्चिन्त हो कर दुश्मन से लोहा लिया जा सके। किन्तु ऐसा ही किया गया और ३०—४० वीर अपने परिवारों को अपने हाथों से मार कर हर हर महादेव की गगन वेदी गर्जना के साथ दुश्मन पर टूट पड़े। वे ऐसी दलेरी और वीरता के साथ लड़े कि शत्रु का आगे बढ़ना रूक गया। उन में कई तो वहां ही ढेर हो गये जो बचे वे मरतों को पानी पिलाते रहे और दुखियों को ढारिस बधाते रहे। उन वीरों के अनुपम बलिदान से बहुत लोग असमय की मोत से बच गए। उस दिन प्रातः नौ बजे से शाम के पांच बजे तक क्या कुछ हुआ, निशस्त्र और निर्दोश जन्ता पर क्या बीती कितने मरे, कितने काटे गये और घायल हुये उन की क्या गणना हो सकती थी? यह दिन वटाला वालों के लिये प्रलय के दिन से किसी तरह भी कम न था। जब तक वटाला के लोगों की लड़ी चलती रहेगी उन के दिलों में पीढियों तक इस प्रलयजनक दिन की याद कभी न भूलेगी। वटाला वालों के लिये वह दिन साका से कम न था। यहां मैं केवल वटाला के किये ही लिख रहा हूं। सारे देवा-वटाला के इलाके के लिये क्यों नहीं? यह हमला केवल वटाला के केन्द्रीय स्थान जक्खर पर हुआ था। वटाला के अतिरिक्त किसी दूसरे गांव पर उस समय कुछ नहीं हुआ था। वटाला के पूर्ब और पश्चिम में सब कुछ ठीक ठाक था। दुश्मन का विचार था केन्द्र पर अधिकार हो जाने पर सब कुछ ठीक हो जाएगा। उस का खियाल किसी हद तक ठीक था।

पहले लिखा जा चुका है कि दुश्मन ने अधिक संख्या में वटाला की बाईं ओर से आगे बढ़ कर गाखडी के आस पास तबाही मचा डाली थी। उस के

आज वह कई बच्चों की मां है और नानकपुरा जम्मू में आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रही है। माता जी और मैं पहाड़ से नीचे उत्तरे तो मेरा सहपाठी और मित्र रायजादा जगन नाथ वैद्य मिल गया। हम तीनों रात को भी चलते रहे और २५ नवम्बर की शाम को सोहल नाम के गांव में पहुंच गये। देवा-वटाला की बर्बादी के बारे में सुन कर उस गांव के लोग हैरान रह गये और २६ नवम्बर को हम अखनूर आ गये। कई दिनों के इन्तज़ार के बाद मेरे सब घर वाले भी ३० नवम्बर को हम से आ मिले थे।

अतिरिक्त शत्रु का दूसरा भाग बरनाला से बढ़ता हुआ ढ्राडा के पश्चिमी किनारे चलता हुआ कल्लर मोहड़ा के पीछे तक बढ़ चुका था। जक्खर के आस पास हो रही फायरिंग को सुन कर कई पश्चिमी बसतियों (मोहड़ों) के लोग भी अपने बाल बच्चों के साथ हमले की पहली रात से ही बंजावाले जंगल में संकट की घड़ियां व्यतीत करने के लिये छुपे हुये थे। वे समझते थे कि कुछ समय के बाद अपने अपने घरों को लौट जायेंगे। बटाला पाकिस्तान के अधिकार में आ जाएगा यह किसी ने सोचा तक न था। नहीं तो यह लोग रात के समय बड़ी आसानी से दुश्मन की पकड़ से निकल सकते थे।

शत्रु का तीसरा भाग दोनों भागों के मध्य से बटाला के पश्चिम की ओर नूरोवाला के तलाब से निकाल कर ऊपर पहाड़ियों पर चढ़ कर घात लगा कर छुपा बैठा था। पाकिस्तान २३ नवम्बर १९४७ को जक्खर पर कब्ज़ा तो नहीं कर सका फिर भी अपनी योजना के अनुसार बहुत हद तक सफल हो चुका था। दूसरे दिन जब गाखडी में हाये हाये मची हुई थी दुश्मन की सेना का वह हिस्सा चुपचाप उचित समय की प्रतिक्षा में बैठा रहा था क्योंकि शत्रु को इतना बढ़ आने पर भी सफलता का विश्वास न था। उसे डर था कि जक्खर की रक्षा के लिये कितने लोग बलिदान होने को बैठे होंगे। उन के पास कैसे हथियार होंगे और लड़ाई का पांसा किधर को पल्टा खा जाएगा। असफलता की सूरत में अपना बचाव कैसे करना होगा। इन सब बातों से भयबीत पाकिस्तानी चुप बैठे रहे थे। उन्हों ने इस से पहले भी लड़ कर देख लिया था। उस समय तक हरेक बार उन्हें मार खाने और भागने के स्वाए किसी प्रकार की भी सफलता न मिल सकी थी।

२४ नवम्बर सोमवार के दिन जो कुछ गाखडी के आस पास हुआ था उस से पाकिस्तानी सेना के दोनों भाग अपरचित थे। उन दोनों ने गोलियां चलने की आवाजें तो अवश्य सुनि होंगी मगर उन को यह मालूम नहीं हो सका होगा कि गोलियां कौन चला रहा है? और किस पक्ष की हानी हो रही है? यह भी सम्भव हो सकता है कि तीनों सैनिक भागों का आपसी सम्पर्क ही टूट चुका हो। यह तीनों भाग एक दूसरे से कई मील दूर बैठे हुये थे।

गाखडी की पहाड़ियों पर हुई घटनाओं का कई बार जिक्र किया जा चुका है। वहां सूरज चढ़ने से लेकर डूबने तक मार काट चलती रही। सैंकड़ों

घायल और मरने वाले पानी की बूंद बूंद को तरसते हुये प्राण त्याग गये। पाकिस्तानी सैनिकों और कबाइलियों ने जी भरकर निहत्थे और निर्दोश लोगों को मार कर उन की समपत्ति को लूट कर गांव के किनारे किनारे रात के अंधेरे में पाकिस्तान को लौट गये। उस दिन शाम तक गांव बिल्कुल सुरक्षित रहा। अनेक नौजवान उस की रक्षा में लगे रहे थे। शाम को उन्हों ने विचार किया कि गोलियां भी चलती रहीं और गाखडी से कोई आदमी भी नहीं लौटा। इस को जानने के लिये उन्होंने कुछ नौजवानों को पता लगाने के लिये भेजा। जब वे ठाकरी छण्डी के पास पहुंचे तो उन्हें कुछ आदमी सिर पर गट्ठर उठाये हुये नीचे को आते हुये मिले। वे पाकिस्तानी लुटेरे निकले और उन्हें तुरन्त गोलियों से भून डाला गया। यह कार्य सूबेदार जगत सिंह के नेतृत्व में हुआ। अब उन्हें यह मालूम करने में देर न लगी कि गाखडी को गये लोग कुशल नहीं हैं। उन अभागों पर क्या गुज़री उन को अपनी आंखों से देखने के लिये उन्हों ने आगे बढना जारी रखा। आगे बढने वालों ने अपने दो साथियों को गांव को सूचित करने के लिये संदेश भेज दिया कि गांव की रक्षा करने वाले सतर्क रहें। थोडा आगे जानें पर उन्हें कई अपने आदमी मिल गये जो रात के अंधेरे की प्रतिक्षा में छुपे बैठे थे। उन्हें यह भी मालूम हो गया कि बडी संख्या में शत्रु ऊपर पहाडों पर पहुंच चुका है और उस के हाथों हमारे सैकड़ों लोग मारे जा चुके हैं। कई लोगों को बन्दी बना लिया गया है और पाकिस्तानी लुटेरे लूट के भारी सामान के साथ ऊपर-वटाला के रास्ते लौट गये हैं। मगर पाकिस्तानी सेना अभी तक गाखडी के आस पास इखनी के नालों में छुपी बैंठी है। यह सुन कर वे बुझे दिल से लौट आये और गांव में आ कर उन्हों ने सारी कहानी अपने दूसरे साथियों को सुनाई। यह सुनते ही जोशीले बहादरों में जोश भड़क उठा और वे बदला चुकाने के लिये त्यार हो गये।

२४ नवम्बर सोमवार प्रातः मध्य भागीय पाकिस्तानी सैनिकों ने बंजावाला और लाएं की पहाड़ियों में छुपे हुये लोगों पर पीछे से फायरिंग शुरू कर दी। मोत से घबराए सब लोग अपना सब कुछ छोड़ कर पश्चिम की ओर मोहड़ा कल्लर की ओर भागे। भगवान की कृपा रही। शत्रु की फायरिंग से दो व्यक्ति मरे और कुछ घायल हुये और बचाव रहा। फायरिंग चिरकाल तक न बढी क्योंकि ऊपर जंगल से हमारे जवानों ने भी गोली चलाई

थी जिस के फलस्वारूप शत्रु को भी नुकसान पहुंचा होगा। शत्रु की फायरिंग जल्दी बन्द होने का भेद न खुल सका। हो सकता है उस समय शत्रु की शक्ति कमज़ोर हो या उस ने कार्णवश ऐसा किया हो। यह भी सम्भव है कि हमारी फायरिंग से वह डर गये हों कि दूसरी ओर भी शस्त्रहीन लोग नहीं हैं। फिर यह भी मालूम हुआ था कि हमारी फायरिंग से शत्रु सेना का एक बड़ा अफिसर मारा गया था जिस के फलस्वारुप उन्हों ने गोली चलाना और पीछा करना बन्द कर दिया था।

जब यह लोग कल्लर पहुंचे तो वहां अन्य ग्रामों के भी बहुत सारे लोग इकट्ठे मिले। उधर ही उन्हों ने दोपहर का खाना बनाया और कुछ नौजवानों को हालात की जानकारी के लिये जक्खर भेजा गया। वहां उन्हों ने अनेक वीरों को जन्मभूमी की रक्षा के लिये अन्तिम बलिदान के लिये त्यार पाया। उन से उन्हें गाखडी की बर्बादी के अतिरिक्त यह भी पता लगा कि प्रातः काल से पाक सेना ने देवा पर भी हमला बोल दिया हुआ है। देवा वालों के साथ क्या बीती उस बारे में उस समय कुछ मालूम न हो सका।

शाम को उन्हों ने कल्लर जा कर सब घटनाओं के बारे में इकट्ठे हुये लोगों को बताया। उन्हें सुन कर जन्ता घबरा गई। बचाब के लिये सोच विचार हुआ मगर एकमत्त नहीं हो सका। उसी शाम को अम्बडयाला और मोहकडयाला के कई गांवों और मोहडों के लोग भी वहां आ मिले। इस प्रकार लोगों का यह इकट्ठ धीरे धीरे एक बड़े जत्थें में बदल गया। उस रात को लोग चिन्ता में डूबे हुये वहां कुछ सो गये और बाकी पहरा देते रहे। रात आराम से कट गई। प्रातः उठ कर सब ने अपने अपने खाने पीने का प्रबन्ध कर लिया और आगे की त्यारी में लग पड़ें।

दूसरे दिन २५ नवम्बर मंगलवार के दिन रकवाल छप्पड़ की ओर से अचानिक फार्यरिंग शुरू हो गई। गोलियों की आवाज़ें सुन कर सहमी हुई निहत्थी जन्ता पश्चिम की ओर भागी। उन पर दुश्मन लगातार गोलियों की वर्षा करता रहा। बड़ी भाग दोड़ पर भी २०-२५ व्यक्ति मारे गये। द्राड़ा पार करके चुक्खांवाली छपड़ी पर भारी संख्या में लोग इकट्ठे हो गये। वहां फिर हालात से निपटने के लिये कई योजनाओं पर विचार हुआ। उस दिन के सोच विचार के बाद फैसला हुआ कि एक घुडस्वार हथियारबन्द पार्टी

वटाला से हो कर देवा तक इस बात का पता लगाने के लिये भेजी जाय कि क्या देवा-वटाला वाली सड़क निकल भागने के लिये सुरिक्षत है या दुश्मन के कब्जे में चली जा चुकी है। इस बात को सुन कर कई नौजवान त्यार हो गये। जिन में से १० घुडस्वारों को उस महा कार्य के लिये भेज दिया गया और गम में डूबी हुई जनता उन के आने के इन्तजार में गुम सुम हो कर बैठी रही। वे लोग वहां से ११ बजे चले और जक्खर से होते हुये देवा से सुरिक्षत लौट आये। रास्ते में उन की भेंट फतेडियां छपड़ के पास ५-६ पाकिस्तानी लुटेरों से हो गई। उन्हें देखते ही यह लोग उन पर टूट पड़े। मुसलमानों के ४ आदमी मारे गये और दो भागनें में सफल रहे। ढाई बजे यह पार्टी पापिस पहुंच गई। उन्हों ने वहां से निकलने के लिये वह रास्ता सुक्षित और उचित बताया। उन के सुझाव के अनुसार जनता ने उसी रास्ते से निकल भागने का निर्णय कर लिया। समय बहुत कम था। हालात बड़ी तेज़ी से घमबीर होते जा रहे थे। एक क्षण भी व्यार्थ खोना बड़ा हानीकारक सिद्ध हो सकता था। इस प्रकार लोग भगवान का नाम ले कर तुरन्त चल पड़े। उन में स्त्रियां, परुष, बूढ़े बच्चे, गायें, भेंस, ऊंट, घोड़े और भेड़ बकरियां आदी शामिल थीं। ग्रामीन हरेक उठाई जाने वाली वस्तु को अपने साथ ले जाना चाहते थे। वह सब लोग एक बड़े जत्थे के रूप में वहां से पूर्ब की ओर चल पड़े। उस बड़े जत्थे की लम्बाई लग भग चार मील थी और उस में पशुओं के अतिरिक्त लगभग छेः हज़ार लोग थे। यह जत्था रुकवाल छप्पड़ से होता हुआ झीरूं वाली देवी के मन्दिर के पास से गुज़रता हुआ भगयाडांवाली से हो कर जब सिर्याला छप्पड़ के पास पहुंचा तो सूरज अस्ताचल को पहुंच चुका था। सात मील का यह सफर कुशलता से समाप्त हो गया। इस सफर के दौरन कोई मुठभेड या हमला न हुआ। जत्था बेखतर आगे बढ़ता गया। जब उस जत्थे का अगला भाग वटाला की अन्तिम सीमा वाली खढ़ के किनारे पहुंचा तो उस पर पूर्ब उत्तर की ओर से अकस्मात हमला हो गया। उस के बाद चारों ओर से गोलियों की वर्षा होने लग पड़ी। जत्था तित्र वित्र होने लग पड़ा। किसी की समझ में कुछ नहीं आता था कि वह किधर जाए। बड़ा भ्यानक समय था। अंधेरा हो चुका था। गोलियों से अनगणित लोग धरती पर गिरते जा रहे थे। रोने चिल्लाने की ध्वनि से आकाश गूंज उठा, धरती हिलनें लगी मगर निदयी पाकिस्तानी सैनिकों को निर्दोश प्राणियों को गोलियों से भूनने से

बड़ा आनन्द प्राप्त हो रहा था। आक्रमन कारी अधिकतर पाकिस्तानी सैनिक और उन के साथ कबाइली थे। मोत से भयबति हो कर जानें बचाने के लिये कुछ लोग पास के मकानों में जा छुपे। कई खड़ की झाड़ियों में जा बैठे और कुछ पेड़ों पर चढ़ गये। लगभग एक घन्टा तक मार काट होती रही। उस संकट काल में हमारे जवानों ने भी कोई कसर बाकी नहीं रखी। उन्हों ने अपने हथियारों से शत्रु के ढेर लगा दिये। ३०३ रायफलों से मुकाबला भी खूब किया। कुछ समय के लिये हमला ठण्डा पड़ा रहा। मगर भगवान की इच्छा कुछ और थी। नई पाकिस्तानी सेना आ जाने पर लड़ाई फिर भड़क उठी। मार काट शुरू हो गई। घरों के अन्दर छुपे लोगों को आग लगा कर जला डाला गया। जलने वालों पर क्या बीती उसे वही लोग जानते हैं जिन्होंने वह दृष्य अपनी आंखों से देखा है या मरने वालों की चीखों को अपने कानों से सुना है। जलते हुये मकानों की रोशनी से कुछ छुपे हुये लोग भी हत्यारों की गोलियों का निशाना बन गये। उस समय कई लोगों ने नवविवाहित पत्नियों और लाड प्यार से पाली बेटियों को अपने हाथों से खत्म कर दिया और खुद लड़ते हुये मारे गये। रात के गुप अंधेरे में मरने और मारने वालों की पहचान बड़ी मुश्किल थी। यह वही विकट समय था जब हाकम सिंह चिब ढांग्री वाले ने अपनी दो नौजवान बेटियों के सिर अपनी तलवार से काट कर शत्रु से निर्भयता से दो हाथ किये थे। उस दिन की शाम उस इलाका में रहने वालों के लिये प्रलय की शाम बनी रही थी।

उस अचानिक हमले और भारी मार काट से जनता का साहस जाता रहा। उन्हें बच निकलने की कोई आशा न रही। अपनी जानें बचाने के लिये सैंकड़ों लोग पीर मोगां नाथ के पेड़ों के झुण्ड में छुपे रहे। क्योंकि मोंगा नाथ पर देवा-वटाला के लोगों का पक्का विश्वास था कि सच्चे मन की पुकार करने पर मोंगा नाथ जी सब प्रकार के कष्टों से मुक्त कर देते हैं। कहते हैं किसी ज़माने में नाथ जी ने किसी चिब बजुर्ग पर कृपा की थी उस दिन से लेकर

मास्टर ब्राह्मा सिंह उस समय आम के पेड़ पर चढ़े यह सब कुछ देख रहे थे। उन्हों ने आंखों देखा और कानों सुना सारा हाल लेखक को सुनाया था। जिसे सुन कर रौंखटे खड़े हो जाते थे। मास्टर जी का सगा भाई और भतीजा प्रकाश ओर शिंगारा राम दोनों उन के सामने जला दिये गये थे।

उजड़ने तक वहां के लोग बाबा जी की उस कृपा का अभार प्रकट करते हुये प्रतिवर्ष एक बड़े भारी मेले का आयोजन करते थे जिस को "मेला छिन्ज" के नाम से पुकारा जाता था। उस मुश्किल की घड़ी में एक नहीं हज़ारों लोग सच्चे मन से बाबा जी के चर्णों में बैठ कर अपने प्राणों की रक्षा के लिये प्रार्थना करते रहे मगर बाबा मोंगा नाथ जी ने एक न सुनी। रात के पिछले पहर पाकिस्तानयों की एक छुरा मार पार्टि आ घुसी। जिस ने घुसते ही महिलाओं को परुषों से अलग कर दिया और फिर निहत्थे मर्दों को बकरों की तरह काटना शुरू कर दिया। इस बार भी कुछ वीरों ने बेशर्मी की मोत मरने की बजाए लड़ कर मरना ही बेहतर समझा। वे शत्रु से भिड़ गये और हाथापाई की लड़ाई लड़ते हुये शहीद हो गये, मगर अपने हाथों कई गाज़ियों का भी सफाया कर गये। वह भ्यानक रात कैसे बीती इसे विस्तार से लिखने के लिये लम्बे समय की ज़रूरत है। दिन चढ़ने तक वहां सैकड़ों लोग मारे जा चुके थे। बेशुमार अबलाओं को बन्दी बना लिया गया था। उन बेचारियों पर कई प्रकार के अमानवीय अत्याचार ढाए गये। कई महीनों तक वे उन दुष्टों की दुष्टता का शिकार होती रहीं। यह महा नाश उस इलाके के लिये दूसरा साका था।

पहले लिखा जा चुका है कि वह जत्था बड़ा लम्बा था। उस की लम्बाई मीलों तक फैली हुई थी। उस के अगले भाग पर जो आफित आई थी उस की मिसाल मिलना कोई आसान बात नहीं है। उस जत्थे के पिछले भाग वाले कुछ समय के लिये बचजाने में सफल रहे थे। जब जत्थे के अगले भाग वाले दुश्मन के घेरे में फंस गये थे और उन पर ग़ोलियों की बुछार शुरू होगई थी। उस वक्त पिछले भाग के लोग पीछे को भाग गये थे। पीछे जाते हुये उन की किसी के साथ मुठभेड या टकराव नहीं हुआ था ? क्योंकि उस दिन पाकिस्तानी सेना का ज़ोरदार दबाव मुनावर तवि से लेकर पीरमोंगा तक रहा था। उस दिन सूरज चढ़ने से पहले मत्तेंवाला से पाकिस्तान के एक ब्रिगेड ने हमला कर के शाम तक रियासत के कई गांवों का सफाया कर दिया था। २५ नवम्बर मंगलवार की दोपहर तक मुनावर के तमाम इलाके पर पाकिस्तानी सेना का अधिकार हो चुका था। जम्मू कश्मीर राज्य के उस क्षेत्र में घायल, लाचार व्यक्तियों और गलती सड़ती लाशों के अतिरिक्त कुछ

दिखाई नहीं पड़ता था। सदियों से आबाद और हरेभरे क्षेत्र को दुश्मन ने थोड़े दिनों के अन्दर तबाहो बर्बाद कर दिया था।

पिछले तीन दिनों से शत्रु उस क्षेत्र पर कब्जा करने के लिये अपनी शक्ति से बढ़ कर ज़ोर लगा रहा था। गोलियां चल रही थीं। मार्टर नाश कर रहे थे। लगभग दस मील लम्बे उस अभागे क्षेत्र में चीखने चिल्लाने और रोने पीटने की ध्वनि के स्वाए कुछ सुनाई न देता था। निर्दोशों के गले काटे जा रहे थे और देवियों की पवित्रता भंग की जा रही थी। पाकिस्तानी सेना का एक ब्रिगेड, हज़ारों कबाइली और सैंकड़ों पठान उस वीर उपजाऊ भूखण्ड को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये दिन रात एक किये हुये थे। मगर रियास्ती सरकार, उस के एमरजैन्सी आफिसर और भारत सरकार चुप साधे तमाशा देख रहे थे। ऐसा क्यों था ? यह रहस्य ही बना रहेगा। सब कुछ उपलब्ध होते हुये भी यह वीर उपजाऊ इलाका बर्बाद हो गया। सच बात यह रही कि यह इलाका गल्त राजनीती की बलिवेदी पर चढ़ कर स्वाह हो गया। इस का कुछ नहीं रहा कुछ नहीं बचा।

२५ नवम्वर की शाम और २६ के प्रातः की पीरमोंगा के आस पा की मार काट और पकड़धकड़ से पाकिस्तानियों का साहस बड़ा बढ़ चुका था। इस प्रकार उन्होंने २७ नवम्वर बुधवार के दिन जक्खर पर बड़ा हमला बोल दिया। जक्खर के पहरेदारों ने ऊंची पहाड़ियों से शत्रु की टैंकों और आर्मंड गाड़ियों को आगे बढ़ते देख कर और अपने आप को मुकाबला के अयोग्य समझ कर अपनी जानों को बचाना ही उचित समझा। क्योंकि इतनी बड़ी सेना के साथ लड़ना असम्भव था। शत्रु ने जक्खर पर एक मील की दूरी से गोलावारी शुरू कर दी थी और आगे बढ़े तो मार्टरों ने तबाही मचा दी। गांव वालों की ओर से किसी प्रकार की हिलचल न होने पर घेरा तंग करते हुये वे हिन्दू चिब्बों के मुख्य केन्द्र जक्खर में प्रवेश कर गये। गांव पर अधिकार करने के पश्चात उन्होंने ठाकुरद्वारा और महात्माओं की समाधियों को अपवित्र किया। इस के बाद उस इलाके के प्रसिद्ध सरदार ठाकुर साधू सिंह ज़ैलदार की हत्या कर डाली। उस समय वे अस्वस्थ थे और अचानिक हमले के कारण उन्हें निकाला नहीं जा सका था। वे घर में ही रह गये थे।

पीरमोंगा की मार काट और बाहर निकलने के तमाम रास्ते बन्द हो जाने पर भी यह लोग बिना समझे सोचे इधर उधर भटकने लग पड़े थे। इस मारकाट से बचकर जो लोग छम्ब की ओर बढ़े थे वे सुरिक्षत जम्मू की ओर बढ़ने में सफल हो गये थे। पीरमोंगा से तीन चार सौ लोगों का एक टोला इखनी नाले के बीचोबीच होता हुआ चकला गांव की ओर बढ़ा और रात भर चलते रहने के बाद काफी सफर कर गया था। वे लोग सूबेदार करम सिंह के नेतृत्व में जम्मू की ओर बढ़ते जा रहे थे। सूबेदार करम सिंह के बारे में पहले भी लिखा जा चुका है। लम्बा रास्ता काट लेने और जंगलों की ओट की बजह से यह लोग अपने आप को सुरिक्षत समझने लग पड़े थे। जब वे ठन्डी चोही के पास पहुंचे, पौ फटी और सूरज भगवान का प्रकाश फैला। अचानक उन पर पहाड़ों की चौटियों से चारों ओर से गोलियों की वर्षा होने लग पड़ी। समय के अनुसार जो कुछ उन हो सकता था किया गया। काफी हाथ पांव मारे मगर क्या करते शत्रु बड़ी भारी संख्या में था और वे विचारे बालबच्चों के साथ कई दिनों से भटकते भूके प्यासे और थकेमांदे अपने प्राणों को बचाने की दौड़धूप में लगे हुये थे। उन्होंने दो तीन घन्टे लुकते छुपते और मरते जीते किसी तरह गुज़ार लिये। आखिर वह समय भी आ पहुंचा जब हत्थापाई की लड़ाई शुरू हो गई। गोलियां समाप्त हो जाने पर शेरदिल सूबेदार करम सिंह अपने दस बारह अन्य साथियों के साथ तलवारें सौंत कर शत्रु पर टूट पड़ा। उस एकेले वीर ने कुछ क्षणों के अन्दर १० आदिमयों को मार गिराया। स्वयं भी अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक लड़ता हुआ अमरगति को प्राप्त हो गया और उस के दूसरे साथी भी अपने नेता के साथ वीरता के साथ लड़ते हुये अपनी पुरानी परमप्राओं के अनुसार शहीद हो गये। पता लगने पर दूसरे दिन एक जत्था उस स्थान पर पहुंचा जहां वे अमर शहीद पड़े थे। उन्होंने उन सब का दाह संस्कार किया और घायलों को वहां से ला कर अखनूर के हस्तपताल में भरती करवाया। उन में से कुछ मर गये और थोड़े ठीक भी हो गये थे।

पीरमोंगा के कत्ले आम में सैंकड़ों लोग मारे गये थे। अनेक देवियों को बन्दी बना लिया गया था। जैसा पहले लिखा जा चुका है। ऐसा सब कुछ जत्थे के अगले भग से साथ हुआ था। जबकि जत्थे का पिछला भाग

पीछे की ओर मोहकडयाला गांव की तरफ चला गया था। उस गांव में हज़ारों ऐसे लोग इकट्ठे हो गये थे। उन की पहली रात ठीक कट गई थी। वे चारों ओर से दुश्मन के घेरे में फंस जाने के कारण घबरा गये थे। उस समय तक उन्होंने कहां ज़िन्दा रहना था? वे इस लिये बचे रहे कि पाकिस्तानी सब से पहले जक्खर को विजय करने के उत्सिक थे या तमाम रास्ते बन्द कर लेने के कारण उन्हें अपनी मुट्ठी में समझते होंगे। यह बात बिल्कुल सच थी क्योंकि उन के बच निकलने का अब कोई भी रास्ता नहीं बचा था। जम्मू मीरपुर सड़क पर शत्रु का कब का कब्ज़ा हो चुका था। भारतीय सेना अगर सहायता के लिये आ भी जाती तो उसे पूर्व की ओर छम्ब से होकर आना पड़ता था। उस इलाके पर पाकिस्तानी सेना दो दिन पहले ही आ बैठी थी। भारतीय सेना की सहायता की आस लगाये हुये वे अभागे लोग कई दिनों से मरते जीते दुख की घड़ियां गिन रहे थे। मगर उन की इच्छा पूरी न हो सकी, भारतीय फौज ने नहीं आना था नहीं आई।

मोहकडयाला में रात काटने के दूसरे दिन २६ नवम्बर बुद्धवार को लोगों ने अपने पेट की आग बझाने के लिये भोजन बनाया। कुछ खाया और कुछ साथ ले लिया। वे लोग चलने ही वाले थे। उन्होंने आकाश पर दो हवाई जहाज़ों को उड़ते हुये देखा। जहाज़ों को देख कर हौस्ला हारे हुये लोगों के दिलों में उत्साह पैदा हुआ और उनका हौस्ला बढ़ा। उन जहाज़ों को उड़ते देख कर लोगों ने अपने जहाज़ समझ कर सफैद कपड़े लहरा कर सहायता के लिये संकेत दिया और बचाव के लिये प्रार्थना की। ऐसा करने पर जहाज़ों ने उन पर गोलियों की वर्षा शुरू कर दी। जहाज़ों की गोलाबारी से कई व्यक्ति मारे गये और अनेक घायल हो गये। कुछ सामने से लदे हुये ऊंट भी मारे गये। रोनाधोना शुरू हो गया। भगधड़ मच उठी और सब लोग अपनी अपनी जानें बचाने के लिये इधर उधर भाग खड़े हुये जैसे किसी पेड़ पर बैठी चिड़ियां शिकारी की गोली की आवाज़ सुन कर इधर उधर उड़ जाती हैं। सब लोगों को पता था कि तमाम पहड़ियों पर दुश्मन घात लगाये बैठा है। पूर्व की ओर जा कर भी वे भारी हानी उठा चुके थे। दक्षिन शत्रु का घर था। उन की समझ में पश्चिम का कुछ भाग रह गया था। उस तरफ विवश जनता चल पड़ी। हरेक का दिल दुखी और परेशान था। किसी को भी बचने और मंजल पर पहुंचने का विश्वास बाकी न रहा था। किसी

सयम भी उन के लिये आपत्ति आ सकती थी। उन में अधिकतर तो जीने की उमेद भी छोड़ चुके थे। फिर भी जान प्यारी होती है जीते जी मनुष्य को क्या कुछ नहीं करना पड़ता है। वे लोग कबूतरगला के रास्ते नौशहरा तक इस उमेद पर जाना चाहते थे क्योंकि नौशहरा डोगरा फौज की छावनी थी। इस टूटी फूटी उमेद पर वे लोग अपनी ग्रीब जानों का बोझ उठाए हुये भारी कदमों से आगे बढ़ते जा रहे थे मगर दर्भाग्य उन के साथ साथ ही चलता जा रहा था।

वे बदनसीब लोग २६ नवम्बर की शाम को मोहकडयाला के आस पास से चले और २७ नवम्बर दो बजे दोपहर के बाद कबुतरगला पहुंच गये। वहां तक उन्हें रास्ते में कोई वाधा नहीं आई, कोई मुकाबला पेश नहीं आया। पहाड़ शुरू हो चुके थे। जंगल आ गये थे। उन के दिलों में थोड़ा हौस्ला पैदा हुआ। बच निकलने की आशा बंधने लगी। काफी रास्ता भी काट लिया था। निश्चित स्थान भी आने वाला था। मगर भगवान की मर्जी कुछ और थी। अभी कड़ी प्रीक्षा बाकी थी। किसी को यह मालूम न था। अभी तक उन को पीरमोंगा की मार काट नहीं भूली थी। उस के अतयन्त दुखदायक दृष्य उन के दिलों में फिलम की तरह घूम रहे थे। इतनी जल्दी ऐसी दर्दनाक दुर्घटनाएं भला कैसे भुलाई जा सकती थीं। हर दम उन निर्दोश अभागों के कानों में पिछले दिन के हमले में होनी का शिकार बने हुये हजारों मज़लूमों की चीख़ो पुकार सूनाई दे रही थी।

कबुतरगला पार करने वाले उस काफिले के सब से आगे वरियाम सिंह कुल्दन था। यूंही उस ने गले की परली ओर मुंह निकाला शत्रु की एक सनसनाती हुई गोली ने उसे वहां ही ढेर कर दिया। उस के बाद एक एक कर के दो तीन व्यक्ति और मारे गये। फिर क्या था गोलियां चलने लगीं लोग मरने लगे। भगधड़ मच गई आगे बढ़ने का केवल वही एक रास्ता था। उस के इर्दगिर्द बड़े ऊंचे ऊंचे पहाड़ थे जिन को पार करना मनुष्य के लिये सम्भव न था। उस जगह से पीछे भागना व्यर्थ था और आगे तो मौत खड़ी थी। उस विकट स्तिथि में वे बदकिस्मत लोग बड़ी दुबधा में फंस गये थे। उन्हों ने आगे बढ़ने की बजाए गले के दक्षिण की ओर इकट्ठा होना शुरू कर दिया। कुछ समय के अन्दर वहां काफी लोग इकट्ठे हो गये। बूढ़े, घायल

और रोगी तो वहां बैठे रहे जबकि हिम्मत वाले नरनारी पूर्व दिशा से सीधे पहाड़ों पर चढ़ने लग पड़े। मगर ज्यादा लोग गले के पास खुलि जगह में ही इकट्ठे होते रहे। उन को जीने का इतना समय इस लिये मिल गया था कि उन के साथ कुछ बन्दूकधारी सैनिक भी थे जो कभी कभी फायर करते रहते थे। उन में हवलदार बाशी राम और गिद्दू राम के नाम उल्लेखनीय हैं। उन के अतिरिक्त अम्बडयाला के इलाके के नौजवानों के पास भी कुछ हथियार थे। हथियारों और गोली बारुद का अभाव ही शत्रु से सीधी टक्कर लेने में बाधा बना हुआ था। फिर भी इन की फायरिंग से शत्रु के आगे बढ़ने में ढील पैदा हो गई थी। हालांकि उन के पास अच्छे शस्त्र उपलब्ध न थे। केवल तलवारें, कुल्हाड़ियां, छवियां और अपने बनाये हुये नेज़े थे। जबकि दुश्मन के पास ३०३ किस्म की रायफलें और मशीनगनें थीं।

एक घंटे की देख रेख और जांच पड़ताल के बाद शत्रु ने उन ग़रीबों पर ज़ोरदार हमला कर दिया। पहले उन्हों ने पहड़ियों की ओट से अन्धाधुंद फायरिंग की। उस के बाद सैंकड़ों सैनिकों ने हल्ला बोल कर उन निहत्थों को बकरियों की तरह काटना शुरू कर दिया। उस संकटकाल में भी कुछ बहादुर नौजवानों ने एक बार फिर अपने लोगों को ललकारा "बुज़दिलो। भेड़ों की तरह क्यों मारे जा रहे हो। तुम्हारे तमाम रास्ते बन्द हो चुके हैं। मौत के स्वाये अब कोई चारा बाकी नहीं रहा है। अपने इलाके का नाम क्या तुम भूल गये हो? तुम्हारे नाम से गुजरात और जहलम कांपता था। जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसे संभाल लो और दुश्मन की बोटी बोटी उड़ा दो। युंही अपनी जन्म भूमी के नाम को बट्टा न लगाओ।" यह शब्द सुनते ही अनेक नोजवानों का लहु उबल पड़ा। हत्थापाई की भीषण लड़ाई शुरू होगई। कई पाकिस्तानी मार डाले गये और बाकी भाग गये। भाग्य में अभी भी बहुत कुछ बाकी था। मार काट शुरू हुये बीस मिन्ट भी नहीं हुये थे। दोनों ओर से मरने वालों की लाशें तड़प रही थीं, घायल पानी मांग रहे थे कि दक्षिन दिशा से पाकिस्तानी फौज का एक बड़ा दस्ता और कबाइली "अली" के नारे लगाते हुये आ पहुंचे। उन्हों ने आते ही गोलियों की झड़ी लगा दी। इस पर बदकिस्मत लोगों का होस्ला टूट गया, उनकी हिम्मत जवाब दे गई। चारों ओर से गोलियां चलती रहीं। बेशुमार लोग मारे गये। जब पाकिस्तानी

सैनिकों को यकीन हो गया कि मुकाबला करने वाले शक्तिहीन हो गये हैं। अंधेरा भी बढ़ने लगा था। मरने वालों के अतिरिक्त ज़िन्दा लोग इधर उधर भाग गये थे या आस पास की झाड़ियों में छुप गये थे। ऐसा देखकर बेशर्म पाकिस्तानी लुटेरे सामान के ढेरों पर गिद्दों की तरह टूट पड़े। मगर उन को क्या मालूम था कि राख में अभी आग के अंगारे भी दबे पड़े हैं। कुछ नौजवान उचित समय की प्रतिक्षा में छुपे बैठे यह सारा तमाशा देख रहे थे। जब वे वहशी निश्चिन्त हो कर सामान से सोना चान्दी ढूंढने में लगे हुये थे। उस समय उन वीरों ने लुटेरों पर भारी हल्ला बोल दिया और कुछ क्षणों के अन्दर उन्होंने अपनी तलवारों और गन्डासों से शत्रु के कई आदमियों को मार कर अपने गुस्से को ठन्डा किया। वे बहादुर अपने प्राणों का मोह त्याग कर जीवन की अन्तिम घडियों तक मरदानावार मुकाबिला करते रहे। एक के बाद एक गिरता गया, फिर भी उन्हों ने साहस नहीं छोड़ा और बड़ी बहादुरी से लड़ते हुये सब के सब वीरगति पा गये।

उस मन्हूस स्थान पर देवा-वटाला की पिछली तमाम घटनाओं से ज्यादा लोग मारे गये, पकड़े गये और घायल हुये। सैंकड़ों महिलाओं को बन्दी बना कर गुजरात ज़िले के कुंजाह कैम्प में ले गये। कैम्प तक ले जाते हुये उन पर अमानवीय अत्याचार ढाये गये। कई दिनों तक उन्हें भूका, प्यासा और नंगा रखा जाता रहा। जेल में भी उन के साथ बलातकार होते रहे। कबुतर गले की मार-काट देवा-वटाला वालों के लिये सब से बड़ी त्रासदी और तीसरा साका बन कर रह गई थी।

पहले लिखा जा चुका है कि जब कबूतरगला में गोली चलने लगी। लोगों में भगदड़ मच गई। उन की आंखों के सामने मौत नाचने लगी तो कई हिम्मत वाले अपनी जानें बचाने के लिये कठिन चड़ाईयों पर सीधे चढ़ने लगे थे। उन की देखा देखी और भी बहुत लोगों ने उस तरफ चढ़ना शुरू कर दिया था। इस प्रकार उस रास्ते जाने वाले भी बड़ी संख्या में थे। वह लोग आगे की ओर बढ़ते रहे। दुश्मन को इस बात का पता लग चुका था। मगर वह तो कबूतरगले की लड़ाई में उल्झा हुआ था। उस का ध्यान दूसरी ओर परिर्वातित हो चुका था। वह अपने मरने वालों और घायलों की सांभ संभाल में लगा हुआ था। इस लिये उन लोगों को आगे बढ़ने के लिये कुछ समय

मिल गया था। वह दुखी पहाड़ी चट्टानों से टकराते, कांटेंदार झाड़ियों से उलझते, सीधी चढ़ाइयों को फांदते हुये आगे बढ़ते गये।

पाकिस्तानी उन बच कर निकल जाने वालों को दूर पहाड़ों की चोटियों पर से देख रहे थे। वे एक को भी जीवत जाने देना नहीं चाहते थे मगर विवश थे। अगर वे आगे बढ़ कर रास्ता रोकने की कोशश करते तो एक तो उन को समय अधिक लगता दूसरा पीछे से हमला होंने से उन्हें भारी क्षति पहुंच सकती थी। उन का यह भी विचार रहा होगा कि नौशहरा की ओर गये हुये लुटेरों से वे लोग बच कर नहीं जा सकेंगे। मगर दुश्मन को अपने विचारों के अनुसार सफलता न मिल सकी। शत्रु नें कबुतरगला से निपटने के बाद पहाड़ी पगड़न्डियों से आगे बढ़ने वाले जत्थे के लोगों पर गोलियां चलाई थीं। उन की फायरिंग से कुछ लोग मरे ओर घायल हुये फिर भी शत्रु की योजना असफल रही और काफी जनता बच गई।

कलाल से थोड़ी दूर आगे जा कर उन बचे हुये लोगों का १००/१५० पाकिस्तानियों से सामना हो गया। बे लोग ऊपर से लूटमार के बाद कबुतरगला से होकर पाकिस्तान को जाने वाले थे। उन के साथ कुछ कबाइली भी थे। उन्हें देखते ही जत्थे के क्रोधित लोग उन पर बुरी तरह टूट पड़े। उन पर कबाइलियों ने गोलियां चलाई। गोलियों से हमारे दो तीन आदमी मर गये और कुछ ज़ख्मी हो गये। फिर भी लुटेरों की कोई पेश न चली और वे सब मारे गये। उन में से एक जंगल में छुप गया था। उसे भी ढूंढ कर मार दिया गया था।

इस दर्दनाक कहानी की एक बात इस प्रकार रही थी। जब कबुरगला में मार काट हो रही थी। उस समय भी पीरमोंगा की तरह जत्थे के पिछले हिस्से के लोग पीछे की ओर मुड़कर पैलीखजूरी वाले कस (बड़ी खढ़) से होते हुये पतनी की तरफ बढ़ गये थे। उन की संख्या कई सो थी जब वह लोग कस के अन्तिम सिरे पर पहुंचे। उन का सामन जंगल में छुपे पाकिस्तानियों से हो गया। गोलियां चलने लग पड़ी। मोत नाचने लगी। मरते जीते जो कुछ उन दुखियों से हो सकता था उन्होंने किया। वहां लड़ते हुये दयाराम मनहास ने कबाइलियों से तीन रायफिलें छीन ली थीं। दयाराम मनहास सियालकोट जिले के बहादुरपुर गांव का रहनेवाला था। वह उन दिनों अपने रिश्तादारों

को मलने वटाला गया हुआ था। नौशहरा पहुंचने पर उस ने रायफलें सैनिक अधिकारियों को सौंप दी थीं।

वहां से बचकर कुछ लोग छुपलुक कर पतनी की ओर बढ़ने में सफल हो गये थे। जिन में सूबेदार कृपा राम, ठाकुर चैन सिंह, चौधरी चूहड़ा राम, हरिया जहाल, लाल सिंह, हेम राज, पीरू चिब के अतिरिक्त कुछ महिलाएं भी थीं। रास्ते में उन्हे ४०/५० लुटेरों का टोला मिला जो फत्ता नाम के एक व्यक्ति के नेतृत्व में लूटमार पर जा रहा था। फत्ता ठाकुर चैन सिंह का गहरा दोस्त था। ठाकुर चैन सिंह को देखते ही फत्ता उन के पास आ गया। पास आकर उस ने ठाकुर चैन सिंह के घर के तमाम सदस्यों के मारे जाने के लिये अफसोस प्रकट किया और उन्हें पतनी न जाने का सुझाव दिया। उस ने ठाकुर चैन सिंह को चुपके से बता दिया था की पतनी गांव तक पाकिस्तानी सेना पहुंच चुकी है। उस के साथ ही उस ने नाह गांव जाने वाली एक गुप्त पहाड़ी पगडंडी की ओर संकेत करके मित्रता का परिचय दिया। फत्ते के पथप्रदर्शन पर वे सब सुरिक्षत नाह तक पहुंच गये थे। उस समय तक वह गांव आबाद था। गांव वालों ने उन भूक से तड़पते आने वालों को मक्की की रोटियां खिला कर उन के पेट की आग बुझाई थी।

अपने पेट की आग बुझा कर वे लोग विश्राम करने ही लगे थे कि तड़ातड़ गोलियां चलने लग पड़ी। हमला हो जाने के कारण नाह के निवासी भी उन बदनसीबों के साथ भाग निकले। इतनी जल्दी नाह पर हलमा होने से स्पष्ट हो जाता है कि फत्ता की पार्टी के किसी व्यक्ति ने पाकिस्तानियों को उन लोगों के बारे में सूचित कर दिया होगा और लूटमार के लिये कबाइली पठान अपने शिकार पर झपट पड़े होंगे।

कबूतरगला से बच निकलने वाले लोग नौशहरा के पास पहुंच चुके थे। फिर भी उन के मन में कई प्रकार के विचार पैदा हो रहे थे। वे सोच रहे थे। कि यदि नौशहरा छावनी सुरिक्षत होगी तो बच जाएंगे नहीं तो होनी पता नहीं क्या रंग दिखाएगी, उन का साहस टूट चुका था विश्वास जाता रहा था। भगवान से प्रार्थना कर के भी वे थक चुके थे। अपने सगे सम्बंधियों के बिछड़ने के दुख से दुखी थे फिर भी किसी न किसी तरह नौशहरा पहुंचने की आस लगाए बैठे थे।

आखिर उन की किस्मत ने पल्टा खाया। उन के बुरे दिन खतम होने को आ गये।। वे २८ नवम्बर की शाम को अपनी मंजल पर पहुंच गये। नौशहरा स्तिथ डोगरा सैनिकों ने उन का भव्य सवागत किया। उन को भोजन खिलाया और उन से सारी कहानी सुनी। सैनिकों की सुहानुभूती से वे बड़े प्रभावित हुये और फूट फूट कर रोने लगे। उन की आंखों से अश्रुओं की धाराएं बहने लग पड़ीं। अपने सैनिक उन्हें भगवान का रूप दिखाई देने लगे। सैनिकों ने उन की ढारिस बंधाई और विश्वास दिलाया कि नौशहरा का सारा क्षेत्र अपने पास है अखनूर पर अपना अधिकार है। भारतीय सेनाएं पहुंच चुकी हैं। शत्रु से लड़ाई चल रही है और हम ने उसे हर कीमत पर अपनी मात्रीभूमी से निकाल कर ही दम लेने की प्रतिज्ञा कर रखी है।

बात चीत के दौरान उन्हों ने सैनिकों को बताया कि कबूतरगला के जंगलों के आस पास इस समय भी कुछ व्यक्ति छुपे बैठे हैं। यदि जल्दी उन की सहायता हो जाए तो कई जानें बचाई जा सकती हैं। यह सुनते ही वीर सैनिक नो बजे रात को मार्च कर गये। वे बड़ी सावधानी से आगे बढ़े। दूसरे दिन सवेरे कलाल के स्थान पर उन का शत्रु सेना से कड़ा मुकाबिला हो गया शत्रु ने आगे बड़ने के तमाम रास्ते बन्द कर लिये थे। यह जान कर हमारे जवान पीछे लौट आये और शत्रु से निपटने के लिये बड़े हमले की त्यारी करने में लग गये। उन के बाद भी कुछ लोग जंगल झाड़ों में छुप लुक कर बच निकलने में सफल हो गये थे।

देवा-वटाला कहे जाने वाले इलाके में लगभग ११० गांव और अनेक छोटे मोटे मोहड़े थे। वहां के लोग अपनी वीरता के लिये जम्मू कश्मीर और अंग्रेज़ी फौज में बड़े प्रसिद्ध थे। उन का मुख्य पैशा सिपाहगिरी था। वहां के रहने वाले मेहनती, साहसी और बहाबुर थे। उस इलाके को जम्मू कश्मीर की रीढ की हड्डी माना जाता था। उस इलाके पर १९४७ में क्या गुज़री ? उन के बचाव के लिये सरकार ने क्या किया ? उन को बचाया क्यों नहीं गया। सरकार इस इलाके के महत्व से अपरिचित थी या राजनीतज्ञ वहां की वीरता और परमप्राओं से भयबीत थे। वहां के लोगों को जीवत नहीं देखना चाहते थे और वे उस वीर उपजाऊ खण्ड की नसलकुशी पर तुले हुये थे ? हालांकि उस समय भारतीय सेनाएं भी पहुंच चुकी थीं। वहां के जीव जन्तु २३ नवम्बर से २९ ननम्बर

तक गोलियों से भूने जाते रहे। यह सब जानते हुये भी किसी प्रकार की सैनिक सहायता उपलब्ध न हो सकी। उस दौरान एक भी सिपाई न भेजा गया, न ही कोई टैंक रींघा, और न किसी हवाई जहाज ने उड़ाने भरी ? यह इलाका जम्मू शहर से केवल ५० मील दूर था। एक नहीं हजारों ऐसी बातें हैं जिन का उत्तर मिलना मुश्किल है। इस प्रश्न को मैं बुद्धिजीवियों की खोज के लिये खुला छोड़ता हूं, फिर भी मैं इतना लिखना जरूरी समझता हूं कि वह इलाका उस समय की घटिया राजनीती के कारण नष्ट हुआ। ऐसा करने वाले दूरदर्शी न थे। उन्हें देश से प्यार नहीं था। वे सब कुछ बदले की भावना से कर रहे थे। अगर वे दूरदर्शी और देश भक्त होते तो उस वीर उपजाऊ क्षेत्र को बड़ी आसानी से बचाया जा सकता था। वह इलाका अपने पास होता तो पाकिस्तान छम्ब पर कभी अधिकार न कर सकता। उस इलाके के लोगों को बार बार उजड़ने और शर्णार्थि कैम्पों में घटिया जीबन व्यतीत करने के लिये विवश न होना पड़ता। इस के अतिरिक्त पाकिस्तान के गुजरात और जहलम के क्षेत्रों में भारतीय सेनाओं की सदा के लिये सरदारी कायम रहती। इस तरह सदियों से आबाद 'देवा-वटाला' का अन्त होगया और देखते ही देखते वह नामी ग्रामी इलाका तबाहोबर्बाद हो कर देश की आज़ादी की भेंट चढ़ गया। कबूतरगले की तबाही देवा-वटाला बालों के लिये तीसरा साका सिद्ध हुई।

उजड़ने के बाद और पहले बसाव तक

वैसे तो वे उजड़े-उखड़े लोग २५ नवम्बर १९४७ को अखनूर पहुंचना शुरू हो गये थे। मगर नौशहरा के रास्ते आने वालों को पैदल चल कर आने में कई दिन लग गये थे। कबूतर गला की त्रासदी के शिकार तो और भी मुश्किलों से निकल कर आये थे। २७ नवम्बर तक तहसील अखनूर के अधिकतर लोग भी शत्रु के लगातार हमलों के भय से अपने घरों को छोड़ कर अखनूर शहर के आसपास आ गये थे। उजड़ने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही थी। एक समय ऐसा भी आ गया था कि लोगों के भारी बोझ को चिनाब नदी पर बना हुआ अखनूर का पुल उठाने के अयोग्य हो गया था और भीड़ के बोझ से डगमगाने लग पड़ा था। इस पर पुल की रक्षा का काम सेना को संभालना पड़ा था। सैनिक बारी बारी इतने लोगों को पुल पर से गज़रने की आज्ञा देते थे जितने आसानी से पार जा सकते थे। पुल पर ७२ घन्टे ऐसी हालत बनी रही थी। ज़रा अनुमान लगाईए। वह कितना भ्यान समय था जब लाखों लोग अपने अपने घरद्वार छोड़ कर कड़ी ठन्ड में भूके नंगे चिनाब नदी के पूर्वी तट पर भगवान के सहारे खुले आसमान के नीचे अपने बिछड़े हुये सगे सम्बंधियों को मिलने की आस लगाए बैठे हुये थे। जब की सैंकड़ों बूढ़े, रोगी और घायल उस प्रतिकूल वातावरण में प्राण छोड़ रहे थे और उन के जलाने के लिये लकड़ी आदी का अभाव था।

शैख मोहम्मद अबदुल्ला उस समय जम्मू कश्मीर के प्रधानमन्त्री बन चुके थे। शर्णार्थियों के लिये शेख सरकार कुछ भी न कर सकी थी। कई महीनों के बाद भारत सरकार की सहायता से उन के लिये प्रिंस आफवेल्ज़ कालज (गांधी मैमोरियल कालज़) रेशम घर और कम्पनीबाग में प्रवंध किया गया, मगर इतनी भारी संख्या के लिये वे स्थान काफी न थे। सिर छुपाने के लिये उचित स्थान न मिलने पर हज़ारों की संख्या में वे उजड़े उखड़े लोग सड़कों बाज़ारों और पेड़ों के नीचे कड़ी ठन्ड से ठिठरते रहे। उन दिनों खाने

खाने पीने की वस्तुएं बिल्कुल नहीं मिलती थीं यहां तक कि नमक भी नहीं मिलता था। आटा चावल की तो बात ही न थी। उन दिनों बकरे का मांस चार आने सैर जितना चाहो मिल जाता था। मगर सब लोग तो मांस खाने वाले नहीं थे और नमक के बगैर मांस खाया भी कैसे जा सकता था। पेट की आग भी बड़ी बुरी चीज़ होती है। मनुष्य की पेट की आग बुझाने के लिये कभी कभी ऐसे काम भी करने पड़ जाते हैं जिन की सम्भावना भी नहीं की जा सकती है।

उस समय के सरकार के अनुचित व्यबहार से तंग आ कर कुछ परिवार आस पास के ग्रामों में जा कर मेहनत मज़दूरी से अपना पेट पालने लग पड़े और कुछ पडोसी राज्य पंजाब के अलावा भारत के अन्य राज्यों में चले गये थे। जम्मू के छोटे छोटे कैम्पों में ठहराए हुये लोग भी बैचेन थे। उन से भी काफी लोग रियासत से बाहर बड़े शहरों में जा कर मेहनत कर के पेट भरने के इच्छुक थे। मगर क्या करते, उस समय बाहर जाने के लिये गाड़ियां नहीं मिलती थी। फिर भी कुछ परिवार पैदल चल पड़े थे। ऐसे चलने वाले लोगों को देख कर भारत सरकार ने निर्देश दे दिया था कि जम्मू से लौटती हुई सैनिक गाडियां शर्णार्थियों को बिठा लिया करें। इस प्रकार भारी संख्या में यह लोग रियासत से बाहर चले गये थे। अल्प समय के अन्दर वे गुरदासपुर, अनृतसर, जालन्धर, होशियारपुर आदि शहरों में फैल गये। कुछ और भी आगे बढ़ गये और लुधियाना, पटियाला, अम्बाला, मोहेन्द्रगढ़ और दिल्ली तक जा पहुंचे थे। लम्बे और दुर्गम मार्ग में उन को भारी कष्ट झेलने पड़े और उन में से काफी लोग पेट भर रोटी न मिलने और असमय की वर्षा से रास्ता चलते हुये ही प्राण त्याग गये थे।

उन दिनों पूर्वी पंजाब में पहले ही पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुये अनगणित लोग दुखि जीवन व्यतीत कर रहे थे। भारत सरकार ने पंजाब के कई शहरों में उन के लिये कैम्प खोल रखे थे जिन में मुफ्त रोटी और कपड़ा दिया जाता था। उन की स्वास्थ के लिये कई चिकिस्तालयों का प्रबंध कर रखा था। ऐसे कैम्पों में जम्मू कश्मीर के लोगों का प्रवेश निषेद था। वहां केवल पंजाब उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत, बिलोचिस्तान, सिंध या ऐसी रियासतों से आने वालों को रखा जाता था जो इस समय पाकिस्तान में चली गई थी।

थोड़े दिनों के बाद उस हुक्म में सुधार करके उन कैम्पों में जम्मू कश्मीर से गये लोगों को भी दाखिल किया जाने लग पड़ा था बलकि जम्मू कश्मीर वालों के लिये एक विशेष कैम्प होशियारपुर के पास नसराला में खोल दिया गया था। जो बाद में राम कालोनी भेज दिया गया था। उस कैम्प में रियासत के काफी लोग दाखिल हो गये थे जिन में देवा वटाला के भी कई परिवार शामिल थे। वह कैम्प दिसम्बर १९५० तक वहां रहा था और जनवरी १९५१ को जम्मू के सब से बड़े कैम्प नगरोटा में विलीन हो गया था। उस समय एकेले नगरोटा कैम्प में चालीस हज़ार से अधिक शर्णार्थि ठहरे हुये थे। वे सब मुज़फराबाद, पुन्छ, राजौरी, कोटली, नौशहरा, मीरपुर भिबर और देवा वटाला आदि क्षेत्रों से उजड कर आये थे।

उस समय इतने बड़े कैम्पों को चलाय रखने की शक्ति सरकार में नहीं थी। वह कैम्पों में बैठे हुये लोगों को अस्थाई तौर पर दोबारा बसाने की योजना बनाने में लगी हुई थी। वह शर्णार्थियों को ज़मीनें और थोड़ी आर्थिक सहायता देकर उन्हें अपने पेट पालने के योग्या बनाने की इच्छुक थी। सरकार समझती थी कि सीमा पर पडी जमीनें आबाद हो जाने से दुश्मन की घुसपीठ में कमी आ जाएगी और सरकार के सिर पर पड़ा हुआ भारी बोझ भी कम हो जायगा। कैम्पों में गुज़ारा करने वालों का बेकार जीवन भी समाप्त हो जाएगा। मगर केम्पों में रहने वाले उस समय आबाद होने को त्यार न थे। वे सीमा पर बसने से घबराते थे।

उन दिनों सरकार ने शर्णार्थियों के पुणर्वास के लिये एक समिति बनाई थी। जिसे जाइंट रिहेबलिटेशन बोर्ड के नाम से पुकारा जाता था। उस समिति में भारत सरकार और जम्मू कश्मीर के मिलेजुले प्रतिनिधि शामिल थे। उस पुणर्वास समिति के प्रधान भारतीय थल सेना के २६वीं डिविज़न के जनरल आफिसर कमांडिग इन चीफ मेजर जनरल तारा सिंह बल और मेजर गुलज़ारा सिंह सदस्य थे। उन के साथ रियास्ती सरकार की ओर से कर्नल बलदेब सिंह सैम्बयाल और कुवंर नरेन्द्र सिंह जम्वाल डिप्टी कमिशनर जम्मू शामिल थे। बोर्ड की पुणर्वास योजना के अनुसार जब अन्य क्षेत्रों के लोग सीमाओं पर बसने के लिये आनाकानी कर रहे थे देवा-वटाला के १६०० परिवारों ने रणबीर-सिंहपुरा की सीमा पर आबाद होना स्वीकार कर लिया था। उन परिवारों

को मार्च १९५१ में रणबीरसिंहपुर के कई गांवों में ८-१२ एकड़ भूमी प्रति-परिवार को दी गई थी। बसने वालों को नगरोटा कैम्प से सरकारी यानों द्वारा ला कर रंगपुरमोलाने, सतरायां, गूंदला और रठाना के चार अस्थाई कैम्पों में ठहराया गया था। जबकि शेष शर्णार्थि नगरोटा कैम्प में ही पड़े रहे थे। उस समय देवा के रहने वालों को पुनः देवा भेजने का फैस्ला हुआ था क्योंकि वह क्षेत्र भारतीय सेना ने पाकिस्तान से मुक्त करा कर सुरक्षिद बना लिया हुआ था। फिर भी वहां बसना कोई आसान काम न था। पहले पहल तो वहां जाने के लिये अधिकतर लोग घबराते रहे मगर धीरे धीरे हालात के सुधर जाने पर वे अपने अपने गांवों को चले गये थे।

उस समय देवा-वटाला के लोगों की बड़ी संख्या ऐसी भी थी जो कैम्पों से बाहर मेहनत मज़दूरी से अपना पेट पाल रहे थे। ऐसे लोगों को बसाने के लिये प्रश्न उठा, तो सरकार ने ज़ीमन की कमी को देखते हुये एक नया कानून बना डाला। इस के अनुसार उन तमाम परिवारों को जो कैम्पों के बाहर रह रहे थे ४-६ ऐकड़ ज़मीन गुज़ारे के लिये दिये जाने का फैस्ला हुआ था। इस प्रकार देवा-वटाला के सैंकड़ों परिवारों को अस्थाई तौर से बसा दिया गया। यह लोग अधिकतर जिला जम्मू में बसाए गये और कुछ परिवार कठुआ और राजोरी के ज़िलों में भी बस गये थे। इस तरह वटाला के लोग बिखर गये और वटाला के बहादुरों की प्राचीन एकता में दरारें पड़ गई।

बसाव के समय मुजफाराबाद और पुन्छ के पहाड़ी और बर्फानी इलाकों से आये हुये शणार्थियों की आबादकारी का काम लम्बा हो गया था क्योंकि वह लोग जम्मू के गर्म इलाके में बसने की बजाए कश्मीर घाटी में बसने के इच्छुक थे। सरकार ऐसा करने के लिये त्यार न थी। उन की एक न सुनी गई और उन का बड़ी देर तक उचित बसाव न हो सका।

उस समय वटाला के चार सौ परिवार रणबीरसिंरपुरा की तहसील के सतरायां गांव में अस्थाई तौर पर बिठाए गए थे। उस के बाद अपनी ब्रादरी की लालसा के कारण कुछ और परिवार भी आ गये। सतरायां में ठहराये गये लोगों को सतरायां खुर्द, सतरायांकलां, डोहाना अमनिपुर, सत्तोवाली, खुशहालपुर, भटिया, ढिलोबेचराग, भूर्मा, कोडेभेंस, लल्यांदी, कंग, चापापा, फत्तुचक, सदरे, ताले, मखदूम हरिपुर और अग़वान के सालम गांव अलाट हुये जबकि सोचेतगढ़, अबदाल, कपूरपुर, घराना, घरानी, चकरोही,

मूसा चक, ढींढे, मखनपुर गुजरां, बडियालकाजियां मोखे और सिद्धड में कुछ परिवारों को ज़मीनें अलाट हुई थीं। उसी इलाके के चिब, जट और कुछ हरिजन ४५० परिवारों को रंगपुरमौलाने के कम्प में ठहरा कर उन्हें रणबीर-सिंहपुरा की पश्चिमी सीमा पर सोचेतगढ़ से ले कर फतेपुर सलारियां तक आबाद किया गया था। उन को फतेपुर, खदेपुर, टौंकनि, सामका, रायपुर, बेरा, बेगा, चोगा, लाइयां, चन्दूचक, बिदिपुर, कोरोटाना कलां, कोरोटाना खुर्द, भोजपुर, कोटलीमीरदियां, बरसालपुर, रंगपुरमुलाने, बासपुर, कोलोएं, रखफलौरा, फलौरा, सन्दे, कन्ग, डेर और मोटे नाम के गांव अलाट हुये थे। इस आबादकारी से पाकिस्तानी घुसपीठ में कमी आ गई थी। आबाद होने के बाद थोड़े समय के अन्दर ही इन लोगों ने बड़ी मेहनत और लगन से कई बर्षों की गैरआबाद ज़मीनों को आबाद करके हरे भरे खेतों में बदल दिया था। गूदलां कैम्प में ठहराए गए शर्णार्थियों को गूदलां मगोवाली, सीर, बलाह, बाजेचक, चकवहावदीन, बोकड़ी हन्सा, माना, चकरोई डांगरे नाम के गांवों में बसाया गया था। बसाव के समय चौथा कैम्प रठाना गांव में लगाया गया था। उस कैम्प के लोगों को रठाना, चकबाला, भलेसर चकसलाम फिन्डर, जींदडमेलू कोटली अरायां आदी ग्रामों में ज़मीनें दी गई थीं। उन दिनों तमाम गांव गैर आबाद और विरान पड़े हुये थे। १९४७ के बाद खेत जंगल का रूप धारण कर चुके थे। जंली घास और झाड़ियां शत्रु के लिये बड़ी लाभप्रद सिद्ध हो रही थीं। इसी कारण सैनिक पहरे के होते हुये भी पाकिस्तानी पशु चुरा कर ले जाने के साथ साथ कई मनुष्य भी मार जाते थे।

वटाला के लोग ५७८.C के अनुसार जम्मू ज़िले की अन्य तहसीलों में भी आबाद किये गये थे। तहसील जम्मू में वे वर्ण, कैन्तोवाला, मरझाली, दोमाना, घोमन्हासा, आकिलपुर, तालाब लिल्लो, गुजराल, पलौडा, डिगयाना और लंगर में आबाद हैं। उन के अतिरिक्त कुछ राजकीय कर्मचारी या पैसे वाले परिवार गांधीनगर जम्मू में भी बस गये हैं। अखनूर तहसील में उस इलाके के लोग ज्योडियां, बकोर, मानचक, इन्द्री, रंगपुर, सजवाल, दयोरा, परगोवाल, दल्पतभोर, नढ़, चककरपालपुर, चककोरा, धौंचक, डडोरा, देरियां, हमीरपुर सिद्धड, गुढ़ा, तुकवाल, चकमलाल, तरोटी और नारायणा में बसे हुये हैं। कठुआ ज़िले में केवल दस पन्द्र परिवार ही बसे थे क्योंकि जम्मू से दूर होने के कारण लोगों ने उधर जाना पसन्द नहीं किया था।

राजौरी ज़िले की तहसील नौशहरा में भी कुछ परिवार आबाद हैं। देवा-वटाला के अच्छी खासी संख्या में लोग तहसील सांबा के नन्दपुर और रामगढ़ के क्षेत्र में कई गावों में आबाद हैं।

इन के अतिरिक्त देवा-वटाला के कुछ परिवार जो देश के वटवारे के समय पंजाब और पेप्सू में चले गए थे उन में से जट ब्राद्री के कई परिवार नारनौल, मोहेद्रगढ़, अम्बाला, जगाधरी और यमनानगर में ज़मीनें खरीद कर वहां स्थाई तौर पर बस गये हैं जबकि चिब ब्रादरी के कुछ घराने होशियारपुर ज़िले के कई ग्रामों के निवासी बन चुके हैं। उन के अलावा कुछ परिवार गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेख) और दिल्ली में भी रहते हैं। कुछ परिवार ऐसे भी होंगे जो मसीबत के मारे इधर उधर भारत भर में भटक रहे होंगे। सहालियां वाला के चौ० लेख राज ने जगाधरी के पास गदोली में बड़ा फार्म बना रखा है। उस के बड़े पुत्र चौ० राजेन्द्र कुमार यमुना नगर के बड़े ट्रांसपोर्टर हैं।

इलाका वटाला के लोगों के बसाव कार्या में सतरायां के ठा. गीटन सिंह रंगपुर के ठा. खजूर सिंह, सरदार ज्ञान सिंह, ठा. चैन सिंह, नम्बरदार एजल सिंह, फलौरा के सरदार फकीर सिंह रठाना के चौ. आसा राम मास्टर मैहगां राम, मगोवाली के चौ. सरदार चन्द सूबेदार गोजा राम और श्री बैसाखी राम के नाम उल्लेखनीय हैं। कर्नल मैथ्यु और मेजर गुल्ज़ार सिंह के नेतृत्व में वटाला के लोगों का अस्थाई बसाव पूर्ण होगया जबकि पुन्छ और मुजफ्फराबाद के लोगों ने सीमा पर बसना असविकार कर दिया था।

वटाला वालों के बसाव के समय जैसा कि पहले लिखा जा चुका है देवा के लोगों को पुणः अपने इलाके में भेज दिया गया था। पहले तो वे बेचारे उधर जाने में घबराते थे क्योंकि शत्रु प्रायः उन को किसी न किसी रूप में क्षति पहुंचाता रहता था। धोरे धीरे बे लोग आबाद होते गये। देवा के इलाके में दोबारा रौनिक आ गई। वीराने खेत फिर से लहलाने लग पड़े। छम्ब का साधारण गांव एक नगर में बदल कर भारत के मानचित्र पर उभर आया। सरकार ने भी उस क्षेत्र की सुरक्षा और पुनर्वसाव के लिये बहुत कुछ किया। वहां कई सरकारी भबनों का निर्माण हो गया। हर प्रकार की बड़ी बड़ी दोकानें खुल गईं। व्योपार में भारी बृद्धी हो गई और सारे इलाके में चेहल पेहल पैदा हो गई।

१९६५ का भारत पाक युद्ध

छम्ब गांव से शहर बन गया था। मुनावर जो किसी वक्त अपनी मिसाल आप था, मिट्टी का ढेर बन कर रह गया था। इन्कलाब ने अपना रंग दिखा दिया था। भारत आज़ाद हो गया। सरकार ने कई नये नये काम कर दिखाए। पाकिस्तान से उजड़ कर आये हुये शर्णार्थियों को भारत सरकार ने दोबारा बसा दिया मगर जम्मू कश्मीर के १९४७ के शिकार लोगों की आबादकारी अधूरी थी। चार पांच वर्ष बीत जाने पर किसी किसी ने कच्चे घर बना लिये थे जबकि आम लोग घास फूस की झोंपड़यों में रहते थे। वर्षों से खाली पड़ी ज़मीनों को पूरी तरह आबाद भी नहीं किया जा सका था। सरहद्दों ने चीखना बन्द नहीं किया था। सीमा पर नये आबाद होने वाले मेहनती लोग पूरी तरह ज़मीनों को आबाद करने में लगे रहते और रात को पाकिस्तानी चोरों से मुकाबिला करते रहते थे। पाकिस्तानी रात के समय पशु चोरी करने आते थे। उन के साथ कई बार कड़ी झडपें भी होती रहती थीं जिन में हमारे कई व्यक्ति मारे जाते थे।

इस तरह चार पांच वर्ष व्यतीत हो गये थे। लोगों का ध्यान काम करने और अपने घर द्वार बाने में लगने लगा था। अकस्मात जम्मू प्रान्त में चर्चा फैल गई कि २६ जनवरी १९५७ को पाकिस्तान भारत पर हमला करने वाला है। सरकार ने पहले तो इस ओंर ध्यान नहीं दिया। जब २६ जनवरी का दिन नज़दीक आ गया और सरकार ने मासूस किया की जनता के दिलों में यह बात पक्की बैठ चुकी है। लोग भयबीत हो गये हैं। हालात के अनुसार सरकार ने कई प्रतिबन्ध लगाए ताकि लोग भाग न जायें। मगर जनता कब मानने वाली थी। २६ जनवरी के पहले ही लोगों ने सीमा से अपने अपने बाल बच्चों के साथ पीछे भागना शुरू कर दिया। सरकार की सब योजनाएं विफल हो गईं। कठूआ से छम्ब तक सारे बार्डर पर बसने वाले कई कई मील पीछे भाग गए। लड़ाई झगड़े के बगैर सारी सरहद्दें खाली हो गईं।

भाग्यवश २६ जनवरी का दिन सकुशल गुजर गया। लोग इस के लिये पछताए और धीरे धीरे वह अपने ठिकानों को लौट गये। दोबारा बसने में उन्हें कई महीनें लग गए और भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

उस भागदौड़ के बाद एक बार फिर लोग अपने अपने काम काज में लग गये। फिर उन्होंने मेहनत मजदूरी से अपनी आबादकारी को सुदृढ़ बनाने के यत्न शुरू कर दिये। १९६२ में चीन ने भारत पर हमला कर दिया। उन दिनों भी कई अफवाएं उड़ीं मगर इस बार लोगों ने हौसला नहीं छोड़ा। वे अफवाहों के चक्कर में नहीं आये अपने अपने घरों में डटे रहे। १९४७ से भाग्य चक्कर में फंसे हुये लोगों पर से कई वर्षों के बाद भी ग्रहदशा नहीं बदली थी। १९४७ में जो उन के साथ बीती थी वह पहले लिखी जा चुकी है। १९५७ में वह दुखयारे अफवाहों का शिकार बन चुके थे। १९६२ में भी वह बड़े परेशान रहे थे चाहे उन्होंने अपने ठिगानों को नहीं छोड़ा था। वर्षों सीमाओं पर रहने और आये दिन के दुख झीलने के यह लोग आदि बन चुके थे। उन्हों ने विश्वास बना लिया था कि सीमाएं ही उन के भाग्य मैं लिखी हुई हैं। न चाहते हुये भी उन्हों ने हालात से समझोता कर लिया था। चाहे यह लोग पूरी तरह आबाद नहीं हो सके थे फिर भी वे अपने घर बनाने और ज़मीनों को आबाद करने में जी जान से जुट गये थे।

१९६४ के दिनों की बात है। हालात ने नया पल्टा खा लिया। पाकिस्तान सरकार की नियत बदलने लग पड़ी। एक दूसरे पर झूटे आरोप लगाए जाने लगे। सरहद्दों ने फिर चीखना शुरू कर दिया। गोलियों का तबादला होने लग पड़ा। मशीन गनों की जगह तोपें गर्जने लगीं। बड़ी मुश्किल से १९६४ का वर्ष बीता। १९६५ ने अपने मुबारिक चरण बढ़ाए। यह वर्ष भ्यानक मुंह खोले और आंखें फाड़े फाड़े हुये आया। हालात बिगड़ने लग पड़े। जन्ता घबराने लगी। प्रति दिन नई नई घटनाए घटने लगीं। आखिर वह दिन भी आ गया जब पाकिस्तान ने पूरी शक्ति से भारत पर ज़ोर दार हमला कर दिया। पाकिस्तानी सेनाएं छम्ब को रौंधती हुई काफी आगे बढ़ आईं। भारत सरकार को इतने बड़े हमले की संभावना नहीं थी। पाकिस्तान का यह हमला अचानक और भ्यानक था।

शत्रु के इस हमले को रोकने के लिये भारतीय सेनाएं भी मैदान में कूद

गई। पहले लिखा जा चुका है कि उस हमले को रोकने के लिये ४ सितम्बर १९६५ को भारतीय वायु सेना को भी हरकत में आना पड़ा था। निर्देश मिलते ही भारतीय वायु सेना के नैट विमानों ने छम्ब क्षेत्र में कई बार उड़ानें भर कर भारतीय थल सेना की स्थिति मज़बूत बनाने में कमाल कर दिखाया था। दो दिन के अन्दर ही वायु सेना ने शत्रु शक्ति को नष्ट कर के आगे बढ़ने से रोकने के अतिरिक्त उसे पीछे भागने के लिये विवश कर दिया था।

इस बार पाकिस्तान ने भारत को तबाह करने के लिये कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। उस ने सारी सीमाओं पर हमले करके आगे बढ़ने की कोशिश की थी। १९६५ की जंग बड़ी बेदिली और ज़ज्बात से लड़ी गई थी। दोनों ओर के वीरों ने कमाल कर दिखाया था। मगर भारत जैसे विशाल देश के आगे पाकिस्तान की दाल कहां गल सकती थी। भारतीय सेनाओं ने १८ दिन की इस जंग में पाकिस्तान की कमर तोड़ कर उसे सुलह करने के लिये विवश कर दिया था। ताशकन्द संधि के अनुसार दोनों देशों को जंग बंद करनी पड़ी थी। जगं के दौरान बड़ा भारी नुक्सान हुआ था। पाकिस्तान को विदेशों से मिला सारा दारू सिक्का भारत के अंदर फैंक दिया गया था। जिस से हजारों की संख्या में नागरिक और पशु मारे गये थे। लहलाते हुये खेत विरान हो गये थे। १८ दिन के उस युद्ध में सैंकड़ों सैंनिक बलिदान, हज़ारों घायल और अगंहीन हो गये थे कुछ सैंनिक और नागरिक ऐसे भी थे जिन का आज तक भी पता नहीं चल सका है।

पहले लिखा जा चुका है कि जम्मू कश्मीर में शर्णार्थियों की आबादकारी कठुआ से ले कर छम्ब तक की सीमा पर हुई थी। जंग में ज्यादा नुक्सान सीमा पर बसने वालों का ही होता है। १९६५ के भारत पाक युद्ध में लोगों का भारी जानी और माली नुक्सान हुआ था। ग्रामीन लोगों की सम्पत्ती पशुधन ही होता है। तोपों की दिन रात की धहाड़ में उन का कुछ पता नहीं चल सका था कि वह मर गये या कहा भाग गये थे। जो खाट बिस्तर उस दिन तक लोगों ने बनाये थे, सब खतम हो गये थे। बुरी हालत हो गई थी। बेचारे लोग जो पिछले अठारह वर्षों से दरबदर होते चले आ रहे थे उन के सिरों पर मसीबतों के पहाड़ टूट पड़े थे।

मरता क्या नहीं करता वाली बात हुई। जगं बन्द हो जाने पर यह दुखी लोग धीरे धीरे फिर अपने ठिकानों पर आने लग पड़े उन में से कुछ

रहने वाले लोगों ने सीमा से दूर पीछे अपने घर बना लिये थे। मगर निर्धन तो ऐसा कर कैसे सकते थे। वह बेचारे मरते जीते आ गये। आ कर वह फिर खेती के कामों में जुट गये। उस जंग में छम्ब क्षेत्र के हज़ारों लोगों को कैम्पों में ठहराय गया था। हालात सुधर जाने पर भी उन में से अधिकतर लोगों ने अपने पुराने घरों को जाने से इन्कार कर दिया था। सरकार उन्हें मजबूर न कर सकी और उन्हें जम्मू ज़िले में सई, रामगढ़ और नन्दपुर के सीमावर्ती क्षेत्र में थोड़ी थोड़ी ज़मीनें अलाट कर के बसा दिया गया था। इस अधूरे बसाव से सहमत न हो कर काफी लोग अपनी जन्मभूमी में अपने पुराने घरों को लौट गये थे। पाकिस्तानी फौजों ने उन के तमाम घर द्वार जला डाले थे। केवल ज़मीनें ही बच कर रह गई थीं। अपने इलाके में जा कर उन्होंने बड़ी मेहनत से एक दो वर्षों में अपने गुज़ारे के लिये कच्चे घर बना लिये, ज़रूरत के अनुसार पशु भी खरीद लिये और फिर खेती में जुट गये थे। अभी यह लौग पूरी तरह संभले भी नहीं थे कि फिर हालात बिगड़ने लग पड़े। सीमा पर हमले होने लग पड़े। गोलियां चलने लग पड़ीं और मसीबतों के बादल मंडराते हुये दिखाई देने लग पड़े। मरते जीत कुछ समय बीत गया। दिसम्बर १९७१ में पाकिस्तान ने फिर भारत के साथ जंग छेड़ दी। भारतीय बहादुरों ने थोड़े दिनों के अन्दर पाकिस्तानी हमले का मुंह मोड़ दिया। पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गये। बंगला देश दुनिय के मानचित्र पर नया स्वातन्त्र देश बन कर उभरा। पाकिस्तान को झुकना पड़ा। शिमला संधी के फलस्वारूप सुलह हो गई। दोनों देशों के बीच नई रेखा खींची गई जो कन्ट्रोल लाइन के नाम से पुकारी जाने लगी। नई रेखा के अनुसार कुछ इलाकों की ले दे हुई। उस ले दे में देवा और छम्ब का उपजाऊ और सैनिक दृष्टि से अति महत्वपुर्ण क्षेत्र सदा के लिये पाकिस्तान को दे दिया गया। पाकिस्तान की सीमा आगे बढ़ कर मुनावर तवी के पश्चिमी किनारे तक आ पहुंची। छम्ब क्षेत्र के हज़ारों लोग हमेशा के लिये शर्णार्थि बन कर रह गये। पहले तो उन्हें कुछ समय तक कैम्पों में रखा गया और फिर भारत सरकार की सहायता से उन्हें खढ़ों, नालों और सदियों पुरानी गैर आबाद और विरान ज़मीनों पर आबाद कर दिया

गया। इस प्रकार १९४७ से लेकर कई बार उजड़ने और बसने वालों का उजड़ना और बसना आगे के लिये बन्द हो गया और छम्ब क्षेत्र सदा के लिये पाकिस्तान को मिल गया।

१९७१ की जंग में उजड़ने वालों को कठुआ से लेकर पलांवाला तक अनेक स्थानों पर बसा दिया गया। इस प्रकार छम्ब के निवासियों का इकट्ठ टूट गया और यह भी बिखर कर रह गये।

देवा-वटाला के प्रतिष्ठत व्यक्ति

देवा-वटाला के विशाल क्षेत्र में कई गांव पडते थे। इस क्षेत्र की अपनी परमप्राएं थीं। यहां के रहने वाले बड़े दलेर, बहादुर और देश भक्त थे। उस समय पढ़ाई लिखाई का अभाब था फिर भी अच्छे लोगों की कमी न थी। उन के जीवन अनुकर्णीय थे। उजडने के बाद आज़ाद भारत में काफी बच्चे पढ़ लिख कर बड़े बड़े पदों तक पहुंच गये हैं। उस क्षेत्र के आज, इंजनियर, डाक्टर, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, हैडमास्टर, जज, वकील, ट्रासपोर्टर, फायनैन्सर, तहसीलदार, डिप्टी कमीशनर और सेना में कर्नल और ब्रिगेडियर बने हुये हैं। यहां तक कि ठाकुर राजेन्द्र सिंह चिब जम्मू कश्मीर सरकार के स्वास्थ मंत्री हैं। मगर में अपने इनिहास में केवल उन लोगों का ही जिक्र करने जा रहा हुं जो उस समय उस इलाके में जाने माने हुये लोग थे।

देवा-वटाला के मुख्य केन्द्र को जक्खर के नाम से पुकारा जाता था। प्राचीन काल से स्वातंत्र पंचायत का यह मुख्य स्थान चला आ रहा था। ठा० प्रभात सिंह ज़ैलदार सरपंच पंचायत, प्रजा सभा के सदस्य और आनरेरी लफ्टिनैन्ट का पद संभाले हुये थे। ठां० गीटन सिंह ग्राम पंचायत के सचिब थे। ठा० कृपा राम, चूहड सिंह, गुलदेब सिंह, देवी दास, ब्रीता राम, दम्मूं राम और फत्तू खां आदि गांव के नम्बरदार थे जबकि ठा० चर्ण दास इलाका देवा के ज़ैलदार थे। ठा० ब्राहदेव, खुशिया राम मुन्शी राम, सांई दास, गोपी राम, खुशहाल सिंह, चत्र सिंह, भगत सिंह, नवाब सिंह, ग्रीब सिंह, भरत सिंह, मघर सिंह और वरियाम सिंह यह सब सूबेदार थे। ठा० बेली राम उन दिनों सीमा सुरक्षा बल में इन्सपैक्टर के पद तक पहुंच चुके थे। आपात काल में उन्होंने विशेष कर अम्बडयाला की भीषन लड़ाई में सराहनीय भूमिका निभाई थी। ठा० बलवंत सिंह जो डी० एस० पी० का पद पा कर रिटायर हुये हैं। यह भी ठा० बेली राम के सहायक रहे थे। ठा० तेज सिंह, दोनों लुड्डन सिंह, दोनों दीवान सिंह, लोचन सिंह, सांई दास, ब्राह्मां सिंह, वोध राज दोनों

गुल्देव सिंह, ईशर दास, ओंकार सिंह, बलवान सिंह, बुद्ध सिंह, गिरधारी लाल, बारी मल, दुनि चन्द, सरदार खां, रवि सिंह और बिन्द्रर सिंह सब अध्यापक थे। ठा० गंडा सिंह, सांदकी राम, नत्था सिंह, गीगडा शाह चगर सिंह, बावा सुन्दर गिर, पं० दया राम, दुर्गा दास गोसांई, शम्मू मिसर, गंडू प्रोहित, रायजादा कर्म चन्द, मुंशी नाथ मियां नवाब खां, नेक मोहम्मद, मीरां बक्श सुनार, सुरेन्द्र मोहन शास्त्री, महाशा मेला राम, भगत सिंह, देवी दिता, हवेली राम, सरदार रांभू, सरदार सेवा सिंह, गोस्वामी हरि राम, चरण दास, ठाकर दास, मोहेन्द्र सिंह और विजय सिंह आदि सब अच्छे और सुल्झे हुये लोग थे। सुरेन्द्र मोहन शास्त्री हरिज़न होते हुये संस्कृत भाषा के पचंड विद्यवान थे। भाषीय ज्ञान के फलस्वारुप उन्हें जम्मू कश्मीर के प्रधान मन्त्री श्री गोपाल स्वामी आइंगर ने प्रजा सभा सदस्य मनोनीत किया था।

इन सब के शिरोमणि थे ज़ैलदार साधू सिंह जी। वे वड़े बुद्धिमान बुर्ज़ग थे। उन्होंने निरन्तर ५० वर्षों तक देवा-वटाला के जाबर और खुदसर इलाके को बड़ी अच्छी प्रकार संभाल रखा था। आंखें कमजोर हो जाने पर उन्होंने ज़ैलदारी का बोझ अपने दत्तक पुत्र ठा० प्रभात सिंह के हवाले कर रखा था। अवकाश के बाद वे अपना निवास अधिकतर अपने गांव दूहंगी में करते थे। उन्होंने लगातार पांच दशकों तक अपनी जन्म भूमी की सेवा करके बड़ी मानमर्यादा और प्रतिष्ठा पाई थी और नाम कमाया था। वे बड़े ज़मीनदार थे और सरकार की और से उन्हें जागीर अलाउंस मिलता था और उन्हें राइसे आज़म की उपाधी प्राप्त थी। दुर्भाग्यवश वे अपने घर पर अपनी पत्नी सहित शत्रु के हाथों मारे गये थे क्योंकि उस समय वे दोनों बिमार थे और गांव पर हमला हो जाने के कारण निकाले नहीं जा सके थे।

इलाका देवा के ज़ैलदार ठा० चरणदास थे। वैसे वह ऊपर वटाला में निवास करते थे। वह नवाबू अजीटन के सुपुत्र थे। पहले पहल उन्होंने जम्मू कश्मीर के घुडस्वार रसाले में सर्विस की थी। घर आने पर उन्हें देवा का ज़ैलदार नियुक्त किया गया था। आपत्त काल में उन्होंने जी जान से मात्री भूमी की रक्षा की थी। गांव बर्बाद हो ज़ाने पर वह ज़म्मू आ गये थे। उन्हें तालाब तिल्ला के पास गुजराल में ज़मीन अलाट है। इसी गांव में रहते हुये

उन का निधन हो गया था। वह सच्चे देश भक्त थे। उन की जैलदारणी और बच्चे उसी गांव में रहते हैं।

वटाला के मास्टर तेज़ सिंह भी अपनी मिसाल आप थे वे बड़े बुद्धिमान और पढ़ने पढ़ाने में वड़े तेज़ और निपुण थे। मैं (लेखक) उन्हें अपना गुरु मानता हुं। उन के द्वारा पढ़ाई गई विद्या और सिखाये गये सदाचार की अदभुत बातें प्राय आज की पीढी को सुनाता हुं। उन का जन्म जक्खर में ठा० चतर सिंह के घर हुआ था। मिडल पास कर लेने के बाद वे अध्यापक भरती हो गये थे। जहां कहीं भी रहे उन्होंने अपनी लगन और मेहनत से अपना नाम कमाया। उजड़ने के बाद वे भी अन्य लोगों के साथ सतरायां गांव में आ बसे थे। कुछ वर्ष पहले उनका निधन हो गया था। उन की पत्नी और बच्चे इसी गांव में निवास रखते हैं।

वटाला की तारीख में अगर मुन्शी जगन नाथ का ज़िक्र न हो तो इतिहास में एक कमी समझी जायेगी। मुन्शी जी पुराने पढ़े लिखे अनुभवी व्यक्ति थे। उर्दु, फारसी उन्हें खूब आती थी। वह गांव में सब से स्याने माने जाते थे। जीने मरने के सब कार्यों में लोग उन की सलाह लेते थे। मास्टर राम रतन उन के बड़े पुत्र थे। वह भी अपने पिता की तरह योग्य और गणित के विशेज्ञ थे। गांव के अनेक बच्चों को उन्होंने गणित विद्या से माला माल कर दिया था। मुन्शी जी अपनी आयु के अन्तिम दिनों में अंधे हो गये थे फिर भी अपनी योग्यता के बल द्वारा जनता की सेवा करते रहते थे।

पंडित गुरांदित्ता भी गांव की शान थे। वह अपने शरीर पर केवल एक चादर ओढते थे। उन की विद्युदता और त्याग से सब लोग बड़े प्रभावित थे। गांव वाले हरेक अच्छे काम में उन का आर्शीबाद लेते थे।

पंडित बैज नाथ गांव के निवासी और अपने गांव में ही पटवारी थे। अच्छे सज्जन परुष और देश भक्त थे। आपात काल में वे सदा लेखक के साथ रहते थे। उन के लिये पहले भी लिखा जा चुका है। देवा-वटाला की बर्बादी के बाद वे जम्मू आ गये थे। कोटली कालोनी जम्मू में उन्होंने अपना घर बना लिया था। वे नायब तहसीलदार के पद से रिटायर हुये थे। उन का स्वास्थ बिगडने लग पड़ा था। मामूली बिमारी के बाद उन का दहान्त हो गया था।

उन का बड़ा लड़का महाराज कृष्ण हिमाचल में प्रोफेसर है दूसरा नायब तहसीलदार और सब से छोटा अध्यापक है।

ठा० हंस राज, गार्ड के नाम से अधिक जाने जाते हैं इस लिये कि वह वण-विभाग में फारेस्ट गार्ड थे। आपात काल में अपनी जन्म भूमी की रक्षा के लिये उन का योगदान सराहनीय रहा था। पंडित प्रेम नाथ डोगरा की प्रजा परिषद में इन्होंने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था। इस के लिये इन्हें एक बर्ष जेल में रहना पड़ा था। इस समय वह चापापा के नम्बरदार हैं।

उन दिनों जैसा कि पहले लिखा जा चुका है। इस इलाके में ज्यादा पढ़े लिखे लोगों की बहुत कमी थी। समय के अनुसार मिडल पास कर लेना काफी होता था। फिर कुछ नौजवान पढ़ने लग पड़े थे ऐसे नौजवानों में ठा० बलवान सिंह और भगत सिंह के नाम भी काबिले ज़िक्र हैं। उस जमाने में इन दोनों ने बी० ए० पास कर लिया था। ठा० भगत सिंह तो डी० एस० पी० के पद से रिटायर हुये थे। रिटायर होने के बाद उन का निधन हो गया था जबकि ठा० बलवान सिंह सह-डी-ई-ओ के पद से रिटायर हुये थे और इस समय तालाब तिल्लो में अपने घर में अपना रिटायरड जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन के सब बच्चे पढ़े लिखे हैं।

सूबेदार जगत राम का पहले भी कई बार ज़िक्र आया है। इन्होंने बड़ी बहादुरी से कार्य किया था। उन की देखा देखी और भी कई नौजवानों ने बढ़ चढ़ कर अपनी सुरक्षा के लिये भारी बलिदान दिये थे। श्री जगत राम नमबरदार ब्रीता राम के सपुत्र थे। उन दिनों सेना से घर आ गये थे। उजड़ने के बाद वह वर्ण गांव में आबाद हो गये थे। यहां ही उन का देहान्त हो गया था। वह बेमिसाल देशभक्त और अदभुत वीर थे।

ठा० बाबू सिंह ने हर समय लेखक के साथ रह कर अपनी जान पर खेल कर सकंट काल में जन्म भूमी की सेवा की थी। वह सेना से नायब सूबेदार के पद से रिटायर हुये थे। उन का सतरायां में देहान्त हो गया था।

देवा के हर दो सूबेदार दया राम, जमादार ओंकार सिंह, मास्टर साहिब सिंह, मास्टर विजय सिंह, मास्टर गुरां राम, ठा० बिचित्तरू, रखेला शाह ठा० नानक सिंह, चौ० दुल्ला, बेलू शाह, सन्तू भजाल, मेंहगा समोत्रा, ठा० रुगल चिब, प्रागांवाला के ठा० रोहलू राम, हवालदार बलवंत सिंह और सूबेदार राम सिंह, मेरा जट्टां के स० जीवन सिंह, सूबेदार अमर सिंह,

बर्मिला के सूबेदार लछमन सिंह, ठा० भगत सिंह, कोरू राम और जति बक्श, नवां चक के भाई रंगील सिंह, सकराना के सरदार रूहड सिंह, जोगोवाला के लफ्टि० भोला सिंह, मुनावर के रायजादा हंस राज बाली, नम्बरदार चौ० हरिया राम, रला शाह भट्टे वाला, मास्टर छज्जू राम मोल्वी गुलाम नबी यह सब नामी ग्रामी लोग थे। मुनावर इलाका देवा वटाल का सब से बड़ा और खूबसूरत कस्बा था। वह एक शहर बनता जा रहा था। वहां की भूमि बड़ी शक्तिशाली और उपजाऊ थी।

बूडेजाल के चौ० रहमत खां ज़ैलदार, मोयल के चौ० मेला राम, राय पुर के ठा० संसार सिंह रोही के प्रसिद्ध गायक ठा० गोगडा सिंह, कोट जयमल के ठा० राम रखा, ठा० अमर सिंह, सरदार गुरदित्त सिंह, भंगाली के लेफ्टि० औंसा राम किला भडार के सूबेदार शेर सिंह, ठा० खेलाराम, बरनाला के कर्नल अबदल अजीज़ मास्टर अताइलाही और चौ० अबदल हक, मोहकडयाला के सूबेदार कर्म सिंह, ठा० चैन सिंह, ठा० ऐजल सिंह, बिचित्र सिंह तेज सिंह और फकीर शाह कुलियां के सूबेदार हरि सिंह, अम्बडयाला के श्री नानक चन्द शाह उन के भाई मुल्क राज शर्मा, सूबेदार कपूर सिंह, ठा० खज़ूर सिंह, डाक्टर परमा नन्द, मोलवी मोहम्मद आलम और मास्टर बिशम्बर दास मलोट के ज़ैलदार सोहबत अलि और मोहम्मद खां टम्हक के चौं० गुलाबा राम और कप्तान हरि सिंह सियारा के ठा० प्रताप सिंह, धमूली के ठा० अमर सिंह, कजंलूर के रामा कल्दन और साधू प्रोहत के नाम उल्लेखनीय हैं। इन के अलावा और भी कई अच्छे अच्छे लोग थे।

आपात कालमें निम्न व्यक्तियों ने अपने प्राणों का मोह त्याग कर जन्म भूमि की रक्षा की थी और साम्प्रदायक भाई चारा के लिये भरसक प्रयत्न किये और बलिदान दिये थे। उन दिनों देवा वटाला एक मात्र इलाका था जहां ९८% हिन्दू थे। ऐसा होते हुये भी उस इलाके के रहने बालों ने अदभुत मिसाल पैदा कर दिखाई थी। वहां हिन्दुओं के हाथों स्वाय मास्टर सरदार खां के पूरे परिवार के बहुत कम मुसलमान मारे गये थे। मास्टर सरदार खां और उस के परिवार के मारे जाने पर अनेक लोगों ने दुख प्रकट किया था। पाकिस्तान के इच्छुक सब लोगों को सीमा के उस पार सुरक्षित भेज दिया गया था। जो सीमा पार जाना नहीं चाहते थे वे उजडने के समय अन्य लोगों के साथ जम्मू आ गये थे और उन्हें जम्मू से पार भेज दिया गया था।

उस कत्लोगारित के ज़माने में ऐसा शायद ही किसी दूसरे इलाके में हुआ होगा।

जन्म भूमि की रक्षा के लिये जिन लोगों का भारी योगदान रहा और जिन्हों ने रात दिन एक कर के कई महीने पहरा देकर रक्षा की और शत्रु को एक इचं भी आगे नहीं बढने दिया था उन लोगों की सूचि में ज़ैलदार चरण दास का नाम सब से पहला था। उन का ज़िक्र बिस्तार से पहले आ चुका है।

वीरता के कारनामे दिखाने वालों में दूसरा स्थान सूबेदार कर्म सिंह को प्राप्त रहा था। वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक शत्रु से झूझते रहे और बहादुरी से लड़ते लड़ते वीरगति को प्राप्त हुये थे। उन के बारे में पहले भी लिखा जा चुका है।

जमादार जगत सिंह तीसरे देशभगत थे जिन्हों ने आपात काल में जी जान से मात्री भूमी की रक्षा की थी और शत्रु के सैंकड़ों लोगों को मार कर अपनी अदभुत वीरता का परिचय दिया था। वटाला पर हमला के समय जब सब लोग गांव छोड़ कर चले गये थे वह अपने घर से नहीं हिले थे। अन्ततः उन को भी विवश हो कर आना ही पड़ा था। उजड़ने के बाद वह बर्ण नाम के गांव में बस गये थें। वहां पर ही उन के जीवन का अन्त हो गया था। हवालदार वज़ीर सिंह भी उन के साथ रहते थे।

सूबेदार ग्रीव सिंह भी उन दिनों पैन्शन पर घर आ गये थे। उन्हों ने भी अपनी जन्म भूमी की रक्षा के लिये बहुत कुछ किया था। इधर आ कर वह घोमन्हासां में बस गये थे वहां ही उन का निधन हो गया था।

सूबेदार कृपा राम आज भी जीवत है और वह रणबीर सिंहपुरा के पास बासपुर नाम के गांव में प्रभु भगती करते हुये अपना आखरी समय व्यतति कर रहे हैं। उन्होंने भी बड़ी लगन और ज़िम्मेदारी से सीमा सुरक्षा के लिये भारी योगदान दिया था और सराहनीय काम किया था।

हवालदार बाशी राम ने तो उन दिनों कमाल कर दिखामा था। पीरमोंगा नाथ की त्रास्दी के समय वह वड़े जत्थे में शामिल थे जिस के सैंकड़ों नर नारी कत्ल हुये थे और शत्रु ने बन्दी बना लिये थे। उस जत्थे में यदि वह न होते तो हो सकता है कोई भी बचने न पाता। उन के पास अगर दारू सिक्का खतम न हो जाता तो वह कुछ और भी कमाल कर दिखाते। बारूद समाप्त

हो जाने पर उन्हें पीछे हटना पड़ा था। वह जीवत आ गये थे। इस समय वह जालन्धर छावनी में रहते हैं। इन के अतिरिक्त बटाला के सूबेदार नवाब सिंह, वरियाम सिंह चाडक और हवलदार वज़ीर सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं।

देवा के ठा० विचित्र सिंह मास्टर साहब सिंह मास्टर विजय सिंह, ठा० मियां सिंह अपने अन्य सैंकडों सहयगियों के साथ महीनों सीमा पर पहरा देते रहे थे। ठा० बिचित्र सिंह अपनी वीरता के लिये दूर दूर तक जाने माने व्यक्ति थे। उन की वीरत की कई कहानियां प्रचलत थीं।

इस प्रकार देवा से मुनावर तक के इलाके में जो सरहद के साथ साथ लगता था अनेक गांव पड़ते थे। उस समय हरेक गांव के रहने वाले स्तर्क हो कर सीमा सुरक्षा में जुटे हुये थे। बूडेजाल के ज़ैलदार चौ० रहमत खां का रौल भी अच्छा रहा था। उन दिनों सब-इन्सपैंक्टर तुरे खां ने उधम मचा रखी थी। उस का हौस्ला इस कदर बढ़ चुका था कि वह दिन दिहाडे पशुओं को हांक कर अपने साथ ले जाता था। उस का यह तमाशा बहुत देर तक नहीं चल सका और उसे और उस के साथियों को हमारे देश भक्तों ने गोलियों से भून कर अपनी धाक जमा ली थी।

अब मैं कुछ ऐसे अच्छे लोगों का ज़िक्र करने जा रहा हूं जिन के दम से उस इलाके की आबोताब थी। उन में से इस समय स्वाय ठा० सिधूरी सिंह कनर्ल लाभ सिंह और ठा० रघुनाथ सिंह के कोई भी जीवत नहीं है। वे सब लोग भगवान को प्यारे हो चुके हैं। मगर उन की जीवनियों से कई प्रकार की प्रेरण प्राप्त हो सकती है। इसी लिये तो इतिहास लिखे जाते है।

कुछ व्यक्तियों का किसी न किसी रूप में ज़िक्र आ गया है। इन के अतिरिक्त और भी कई गुमनाम देश भगत और शहीद होंगे जिन का पता किसी को भी मालूम नहीं है और जिन्हों ने पता नहीं किन हालात में शत्रु से झूझते हुये अपने प्राणों का बलिदान दिया होगा।

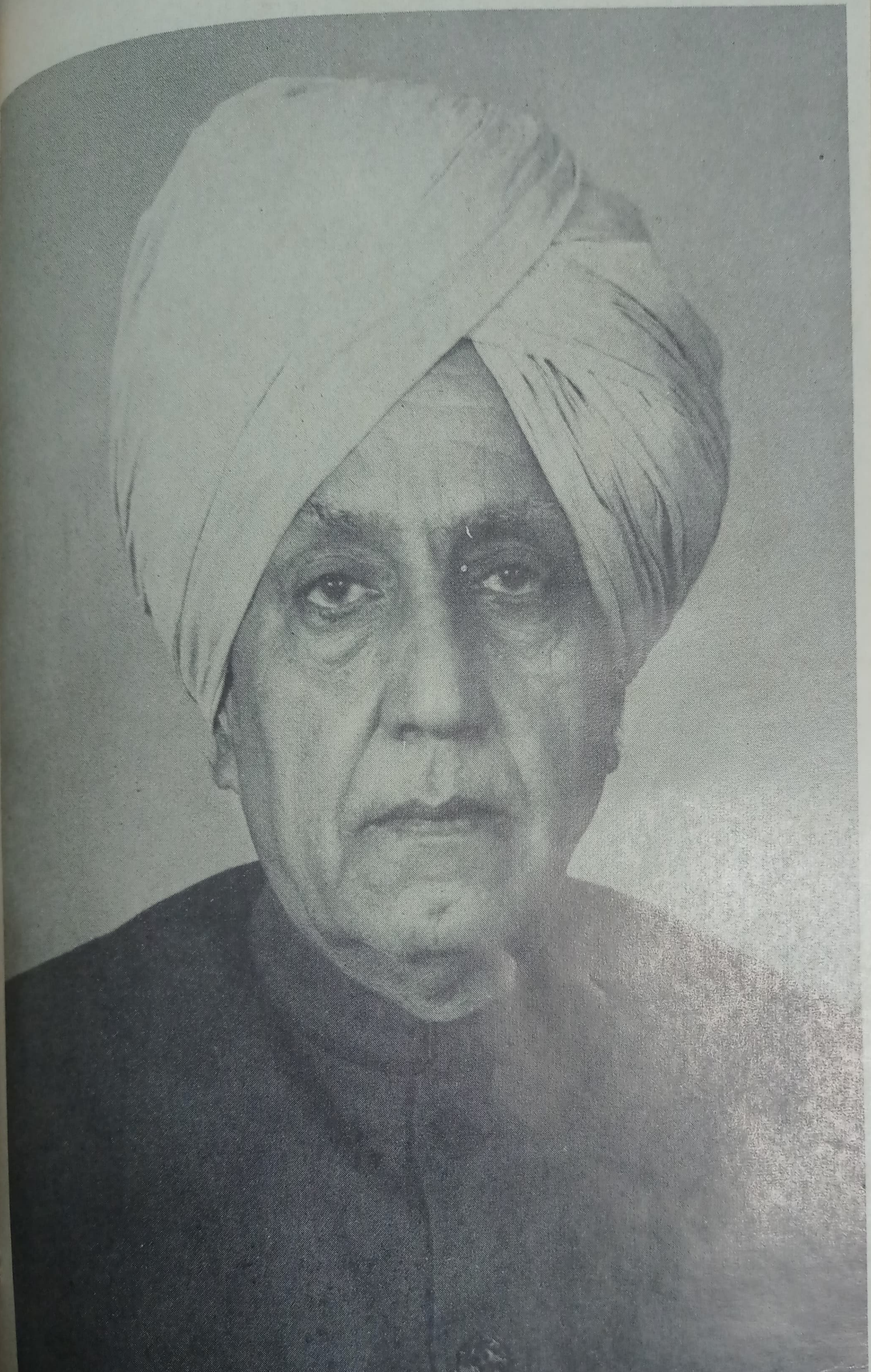
लेखक ने हर सम्भव प्रयत्न किये हैं कि कोई गांव और नाम ऐसा न रह जाये जिस ने उस संकट काल में किसी ना किसी रूप में अपनी जन्म भूमि की रक्षा के लिये दुख उठाए हुं या मुश्किलों से जूझते हुये अपना बलिदान दिया हो। इलाका बड़ा था अगर बेबसी से कोई भूल रह गई हो तो आप सब क्षमा करने की कृपा करेंगे। अंत में मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों का बिस्तार से ज़िक्र कर रहाहुं जो उस समय देवा बटाला के शिंगार थे।

रायबहादुर सूबेदार लद्धू राम

आम तौर पर देखा गया है कि दुनिया में वही लोग बढ़ते हैं और ऊपर चड़ते हैं जिन का जन्म धनवानों के घरों में होता है और जिन को जीवन की सब सुविधांए उपलब्ध रहती हैं। फिर भी कुछ ऐसी मिसालें देखने को मिल जाती हैं कि कुछ व्यक्ति अति प्रतिकूल वातावरण में पैदा होकर नंगे भूके रहते हुये भी अपने जीवन काल में ऐसे अदभुत काम कर जाते हैं जिन के फलस्वारूप उन का नाम सदा सदा के लिये अमिट हो जाता है और लोग उन्हें चिर काल तक याद करते रहते हैं। ऐसे लोगों में रायबहादुर सूबेदार लद्धू राम भी एक थे। उन का बचपन प्रतिकूल हालात में गुजरा था। उन्हें स्कूल और पाटशाला का मुंह देखना नसीब नहीं हुआ था। वह अपने कर्मो के बल द्वारा राय बहादुर की पदवी पा गये थे।

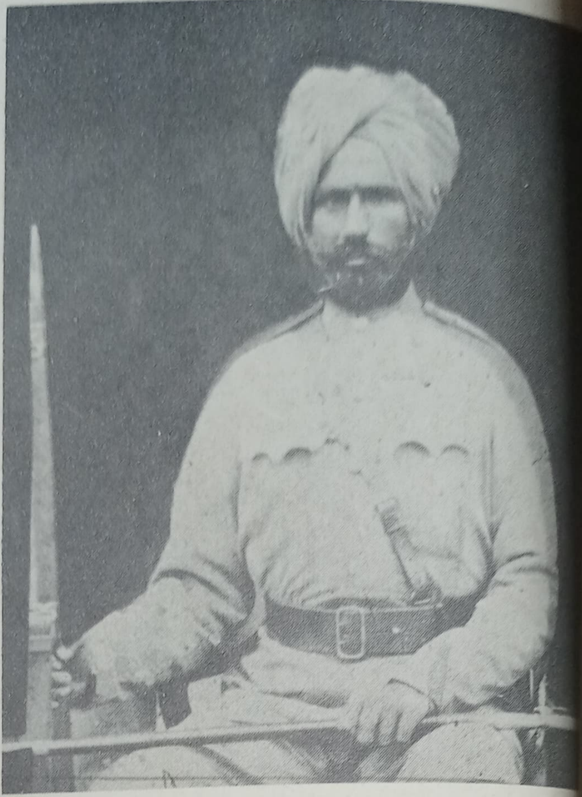
उन का जन्म मुनावर के पास एक छोटे सींगरी नाम के गांव में चौधरी लक्खा राम के घर हुआ था। जवान हो जाने पर वह उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के मालाकंद में खड़ी की जाने वाली जाट कम्पनी में १८७८ में सिपाई भरती हो गये थे। यह कम्पनी उन दिनों ३८वें डोगरा ग्रुप में नई नई खड़ी की गई थी। सेना में भरती होकर उन्हों ने मेहनत, लगन, पूर्ब जन्म के कर्मो और संस्कारो के फलस्वारूप बड़े बड़े अदभुत कारनामें कर दिखाये थे। मध्य पूर्ब के देशों में में लड़ी जाने वाली कई लड़ाईयों में उन्होंने अनुपम वीरता के जोहर दिखा कर अपना नाम बढाया था। सेना के विभिन्न पदों पर कुशलता पूर्वक कार्य करते हुये सूबेदार के पद को प्राप्न करके वह १९०८ में सेना से पृथक हो गये थे।

घर आने पर वह आराम भी नहीं कर पाये थे। उन की लड़ायां लड़ने की थकान भी नहीं उत्तरी थी कि १९१४ में पहला विश्व युद्ध छिड़ गया। उस समय की भारत सरकार को युद्ध से निपटने के लिये जवानों की भारी जरूरत थी। ऐसे संकट काल में सूबेदार लद्दू राम ने हज़ारों की संख्या में जवान भरती करवा कर सरकार की भारी सहायता की थी। उन की सेवाओं से खुश होकर सरकार ने कई प्रकार से सम्मानित किया और रायबहादुर की उपाधी देकर उन के काम की सराहना की और उन का

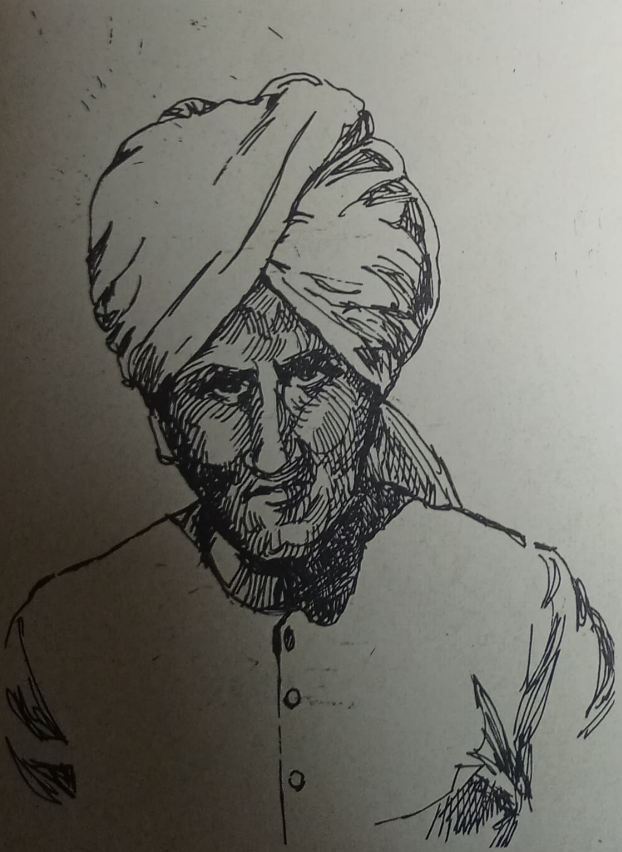


बलदेव सिंह चिब

लेखक



स्वर्गीय रायबहादुर लद्दूराम



स्वर्गीय ठाकुर प्रभात सिंह
सदस्य
प्रजा सभा, जम्मू व कश्मीर

...गान बढाया था। उन को रायबहादुर घोषित करने की पुष्टी वायसराय ने पहली जनवरी १९२० को कर दी थी।

Foreign and Political Department

NOTIFICATIONS

Delhi the ISI January 1920 No. 14-J-C HIS EXCELLENCY THE VICE ROY AND GOVERNOR GENERAL is pleased to confirm the title of 'RAI BHADUR' as a personal distinction.

x x x x x

Pensioner Subedar Ladhu Ram Late of 2 th Punjabee.

राय बहादुर बन जाने पर वह सरकार के प्यारे बन गये थे। हरेक स्थान पर उन की इज्ज़त बड़ी। सरकार दरबार में उन की सुनी जाने लगी। जंग बन्द हो जाने पर वह समाज सुधार के कार्यों में लग पड़े। वह दुनिया देख आये थे उन्होंने समाज में पाई जाने वाली कुरीतियों को खत्म करने का वर्षो प्रचार किया। उन्होंने बच्चों को पढ़ाने पर बल दिया और छोटी ऊमर की शादियों के खिलाफ अभीयान चलाया। वह अपने इस लक्ष्य में भी काफी सफल रहे। १९३९ के दूसरे विश्व युद्ध में भी उन्होंने पहले की तरह जवानों की भरती दे कर सरकार की सहायता की। उन की सेवाओं को दृष्टि गोचर रखते हुये उन्हें लाहोर ऐरिया ने ज़िला मीरपुर का असिस्टेंट रिक्रुटिंग आफिर नियुक्त किया और अग्रेंजी सरकार की सिफारिस पर पांच वर्ष के लिये उन की ज़मीन का लगान (मालिया) महाराजा सरकार ने माफ कर दिया था। १९४७ में उन को भी अपना घर छोड़ना पड़ा। दिसम्बर १९४८ में ८८ वर्ष की लम्बी आयु में उन का देहान्त हो गया।

उनके सूबेदार सील सिंह, अमर सिंह और दीवान सिंह तीन बेटे थे। उन के पोते सूबेदार जगत राम इस समय तहसील हीरा नगर के मथराचक गांव के निवासी हैं।

रिसालदार साधू सिंह

यूं तो देवा-वटाला की सरज़िमीन के कई अच्छे अच्छे देश भगत, बहादुर और प्रतिष्ठत व्यक्ति पैदा किये हैं। मगर रिसालदार साधू सिंह की बात निराली है। उन्होंने जिस ढगं से कुरीतियों को दूर कर के लोगों की सेवा की थी उसे भुलाया नहीं जा सकेगा। वे अपने समये के रोशन दिमाग और जन सेवक मानव थे। उन्होंने इलाके भर में फैली हुई पुरानी रसूमात को समाप्त करने और बच्चों को पढ़ाने के लिये घर घर घूम कर प्रचार किया था।

उन का जन्म ठा० विचित्र सिंह के घर १० मघर १९३८ बिक्रमी को वटाला में हुआ। मिडल पास कर लेने पर वे माल बिभाग में भरती होना चाहते थे मगर उन के मामा रिसालदार होशनाक सिंह चाड़क ने उन्हें अपने रसाले में भरती करवा दिया। भरती होने पर उन्होंने बड़ी लगन और मेहनत से काम किया और वे थोड़े समय के अन्दर ही एक योग्य शाहस्वार बन गये। वहां काम करते हुये उन की कई बार पदोन्नती होती गई और वे रिसालदार बना दिये गये। प्रथम महा युद्ध में वे तीन वर्ष तक अदन तथा अफ्रीका के देशों में रहे। कुछ समय के लिये वे फ्रांस भी गये। अपनी शानदार ३२ वर्षीय सेवा पूर्ण कर लेने पर और रिसालदार मेजर के पद को पा लेने के बाद वह मार्च १९२९ को पैन्शन ले कर घर आ गये थे। उन की सराहनीय सैनिक सेवाओं के लिये उन्हें पैन्शन के अतिरिक्त ४० ऐकड़ ज़मीन आरिफवाला तहसील पाकपटन ज़िला मोन्टगुमरी (पाकिस्तान) में मिली हुई थी।

विदेशों में रहते हुये वे वहां के वातावरश से बड़े प्रभावित हुये थे और उन्हों ने घर आ कर पढ़ाई के प्रचार और प्रसार के लिये प्रनत्न शुरू कर दिये थे। वे सफेद धोती कुर्ता पहने, सिर पर बादामी रंग की पगडी सजाये, गले में पर्णा डाले और हाथ में छड़ी घुमाते हुये प्रति दिन किसी न किसी मोहल्ले या मोहड़े मे बच्चों को पढ़ाने के प्रचार के लिये चले जाते थे। उन का पक्का विश्वास था कि विद्याहीन किसी प्रकार की भी उन्नति नहीं कर सकता है। उन्हें आते देख कर लोग इक्ठे हो जाते थे। वे लोगों को पढ़ाई

लिखाई के लाभ बड़ी साधा मीठी भाषा में समझाते थे। लोग भी उन की निष्काम सेवा के लिये उन का बड़ा आदर करते थे। उन के प्रचार के फलस्वारूप गांव के स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ने लग पड़ी थी। अगर वे ऐसा न करते तो अन्य पढ़े लिखे लोगों के अतिरिक्त इस कहानी को लिखने वाला भी कोई दूसरा होता। क्योंकि लेखक को स्कूल में भरती कराने के लिये उन्हें कई बार पिता जी के पास आना पड़ा था। यह सच है कि उन के प्रयत्नों के फलस्वारूप ही लोगों में पढ़ने लिखने का शौक पैदा हुआ था और गांव के बच्चे स्कूल जाने लगे थे।

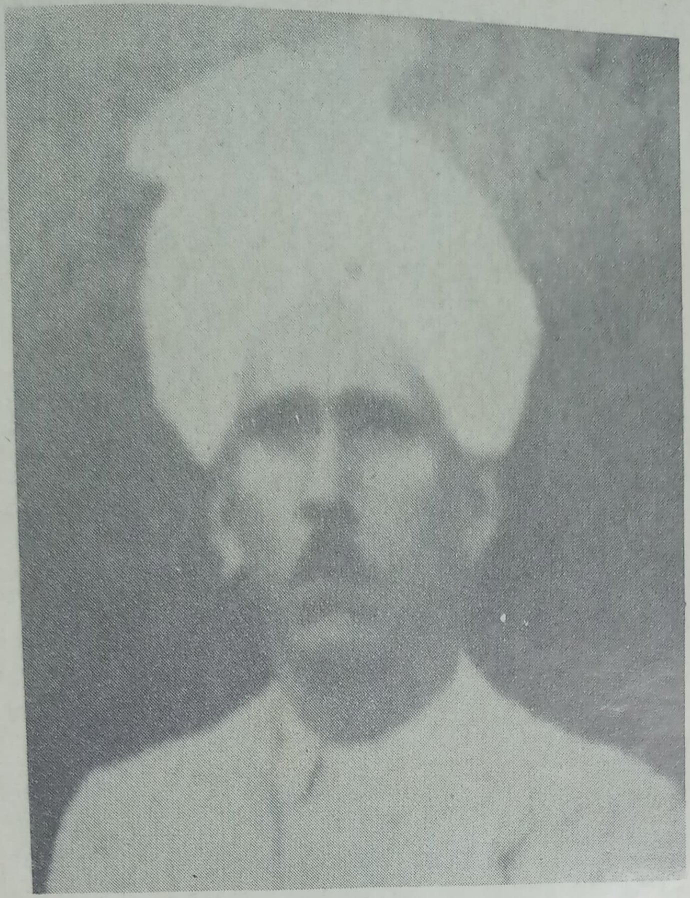
जम्मू कश्मीर की प्रजा सभा (विधान सभा) बनने के समय रिसालदार साधू सिंह की लोक प्रियता, समाज सेवा और प्रतिष्ठा को दृष्टि गोचर रखते हुये महाराजा जम्मू कश्मीर ने उन्हें देवा-वटाला के प्रतिनिधित्व के लिये प्रजा सभा का सदस्य मनोनीत किया था। प्रजा सभा में जा कर उन्होंने अपने इलाके की मुश्किलात को सरकार के सामने रखा और उन के समाधान के लिये बल दिया था। पीने के पानी की मांग को उन्होंने विशेष ढंग से उभारा था। इस के अतिरिक्त उन्होंने अपने इकाके के प्राकृतक फलों आम, आमिला और बैरों आदी से मासूल चुंगी सदा के लिये समाप्त करा डाली थी।

प्रजा सभा के अधिवेशन से अपने घर लौटने के बाद वे मामूली बिमारी के साथ अपनी धर्म पत्नी, पांच बेटे और तीन बेटियां पीछे छोड़ कर २० अक्टूबर १९३८ को स्वर्ग सुधार गये थे।

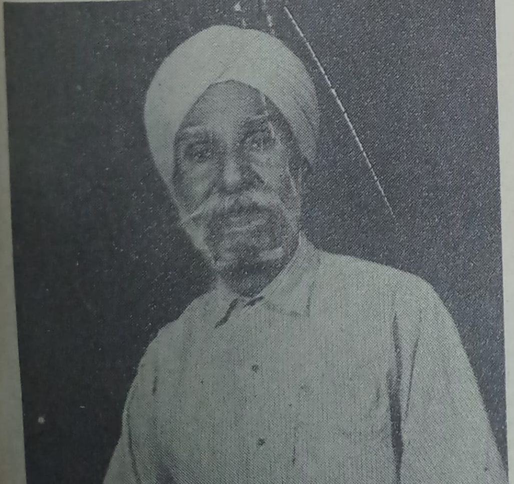
मास्टर मेजर सिंह

अकसर कौमों और ब्रादरियों को ऊपर उठाने वाले उन में पैदा होने वाले लोग होते हैं। ईश्वर के नियमों के अनुसार जब किसी कौम या ब्रादरी के अच्छे दिन आते हैं तो उन में कुछ ऐसे लौगों का जन्म होता है जो अपनी योग्यता और गुणों के कारण एक पथ परदर्शक की हैसियत तक पहुंच जाते हैं। इलाका देवा वटाला मैं बसने वालों को वैसे तो विशेष स्थान प्राप्त था। वह लोग बहादर, दलेर साफ दिल, जवान के पक्के और देश भगत होते थे, मगर एक बात सच है कि वे पढ़े लिखे नहीं थे। इस का कारण यह था कि यह इलाका चारों ओर से दुश्मनों से घिरा हुआ था। उस इलाके के लोगों को अपना अस्तित्व कायम रखने के लिये हर समय चौकस और स्तर्क रहन पड़ता था। ऐसे हालात में उस इलाके के रहने वालों के लिय लिखना फढ़ना मुश्किल ही नहीं असम्भव था। प्रतिकूल वातावर्ण में भी वहां कुछ अच्छे लोगों का जन्म हुआ, जिन के कारण उस क्षेत्र का नाम चमक उठा था। एसे व्यक्तियों में एक मास्टर मेजर सिंह चिब भी थे। उन्होने अपने पूर्व जन्म के संस्कारो के बल द्वारा अपने विचारों को दूर दुर तक फैलाया। वे अपने इलाके के पहले बच्चे थे जिन्हों ने मैट्रिक पास किया था। जवानी में पैर रखते ही उन के मन में अपने पूर्वजों के इतिहास की खोज करने कें विचार पैदा हो चुके थे। उस ज़माने में सरकारी मुलाजिम होते हुये उन्होंने इतिहास की खोज की और घटनाओं को इकट्टा कर के तारीख चिब्भाल के नाम से लिखा और छपवाया। किताब लिखना और छपवाना आज भी बड़ा कठिन काम है। हैरानी आती है कि उस दृढ़ संकल्प बूजर्ग ने उस जमाने में इतना मुश्किल काम कैसे किया होगा। मुझे यह भी झटका मासूस होता है कि उस ज़माने में उनकी किताब को कितने लोगों ने खरीदा होगा। जैसे कैसे उस दूरदर्शक महापूरुष

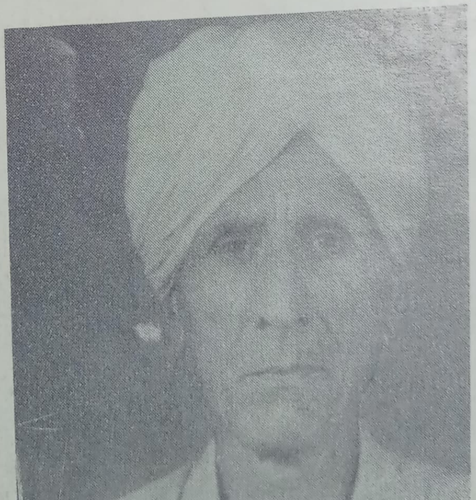
इतना महान कार्य कर दिखाया। अपने जीवन काल में वह कार्य कर गये जिसे भुलाथा नहीं जा सकेगा। उन्हों ने मेहनत और लगन से इलाका चिब्भाल का इतिहास लिखते हुये हज़ारों मुश्किलों का सामना किया होगा। इतिहास की कड़ी को कड़ी से जोड़ने के लिये उन्हों ने कई किताबों का अध्यन किया होगा। इस के अतिरिक्त उन्हों ने घर, घर, गांव, गांव जाकर स्कूल से छुट्टि लेकर अपनी जेब से खर्च कर के ब्रादरी को तारीख



स्वर्गीय ठाकुर मेजर सिंह
लेखक
चि. बाल इतिहास



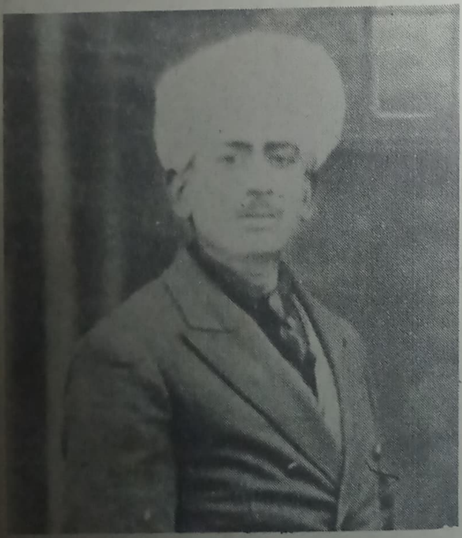
कैप्टैन हरि सिंह



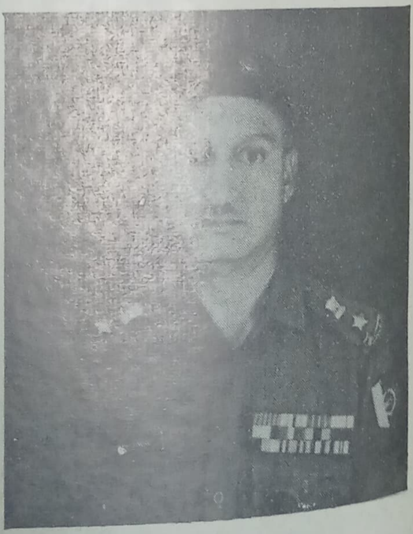
ठाकुर सिंधूरी सिंह



स्वर्गीय ठाकुर सहदेव सिंह
आई.ए.एस.



चौधरी मेला राम



कर्नल लाभ सिंह

चिब्भाल" के रूप में वह अमूल्य उपहार दिया था और सेवा की थी इस की जितनी भी ज्यादा तारीफ की जाये वह कम होगी।

मास्टर जी का जन्म वटाला के ठाकुर फूला सिंह के घर १५ बैसाख १९४६ बिक्रमी में हुआ था। उन का परिवार इलाका भर में जाना माना और प्रतिष्ठत था। महाराजा प्रताप सिंह के देहरक्षक पृथु कुमेंदान मास्टर जी के ताऊ थे। अपने गांव के स्कूल से मिडल पास करने के बाद उन्हों ने जम्मू के प्रसिद्ध रणवीर हाई स्कूल में प्रवेश किया और वहां से १९१२ में अच्छे नम्बरों के साथ मैटरिक पास किया था। कार्णवश कालज में नहीं जा सके और १९१३ में अध्यापक भरती हो गये। उस के अगले वर्ष वह नायब तहसीलदार के पद के लिये चुने गये मगर विद्या के प्रेमी उस नौजवान ने तहसीलदारी से अध्यापक रहना ही पंसद किया। अपनी सेवा के दौरान वह अनेक स्थानों पर कार्याशील रहे जिन में गुडासलाथियां, अखनूर राम नगर, भिबर, पंजेडी और वटाला उल्लेखनीय हैं। वह कई बर्ष अपने गांव के स्कूल के मुख्य अध्यापक रहे। उन्होंने पढ़ाई के लिये लोगों में प्रचार किया जिस के फलस्वारूप जनता में बच्चों को पढ़ाने का शौक पैदा हो गया और लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिये स्कूलों में भेजने लग पड़े। मास्टर जी ने बच्चों की पढ़ाई के साथ उन्हें सदाचारी बनाने के लिये भी कई योजनांए बनाई थीं। वटाला से उन्हें भडडू भेजा गया और वहां से उन की तबदीली मिडल स्कूल समाहनी में हो गई थी। उस वर्ष गर्मियों की छुट्टियों में उन की पुरानी हर्निया की बिमारी ज़ोर पकड़ गई और कुछ समय बिमार रहने के बाद वे २२ असूज १९९७ बिक्रमी को स्वर्गवास हो गये।

मास्टर जी साहित्यक रूची रखते थे। अपनी रूची के फवस्वारूप ही उन्होंने वटाला की अदबी लहाज से बंजर सरज़मीन में पैदा होकर "तारीख चिब्भाल" की रचना का महाकार्य किया जो सदियों तक उन की याद को कायम रखेगा। उन की बेवक्त मोत को सुन कर सारे इलाके में मातम छा गया था। वह अपने पीछे ओंकार सिंह देव पाल सिंह और रवि सिंह तीन बेटे प्रकाशी और सोमां दो बेटियां, नम्बरदार दम्मू सिंह भाई और तरलोक सिंह भतीजा छोड़ गये थे। वे एक अच्छे कवि भी थे। उन्होंने कई अच्छी अच्छी कविताएं भी लिखी थीं।

कप्तान हरि सिंह

देश भक्त और समाज सेवी कप्तान हरि ने २३ अप्रैल १८९९ में चौधरी गुलाब सिंह के घर टमहक गांव में जन्म लिया था। बरनाला से मिडल पास करने के बाद वह भिबर हाई स्कूल में पढ़े। वहां से उन्होंने १९१७ में मैट्रिक की परीक्षा पास की और उसी वर्ष वह भारतीय सेना में कलर्क भरती हो गये। ११३७ में उन्हें यूनियर कमिशन मिला और १ दिसम्बर ११४२ में उन का पद बढ़ा और वह सूबेदार हैडकर्लक बन गये। ११ दिसम्बर १९४५ को उन्हें एमर्जन्सी कमीशन मिला। सेना के कई पदों पर कार्य कर के वह ३० वर्ष ४ महीने सैनिक सेवा के बाद २५ अगस्त १९४७ को घर आ गये। दुर्भाग्यवश तीन महीने के अन्दर नवम्बर १९४७ को उन्हें अपनी जन्म भूमि छोड़नी पड़ी।

घर द्वार लुट जाने के बाद वह अपने परिवार सहित तहसील जघाधरी के तिलाकुर नामक गांव में आ गये। २४ अप्रैल १९४८ को उनके नारनौल पहुंचने पर वहां की जट ब्रादरी ने उन का हार्दिक स्वागत किया और उन्हें अपना प्रधान चुन लिया। वह १९४८ से १९६९ तक अपने पद पर आसीन रहे. उन के पहले लेफ्टिनेंट शेर सिंह प्रधान थे।

अपने पद को संभालने पर उन्होंने ब्रादरी के उत्थान के लिये कई प्रयत्न किये। उन्हें जमीन दलवाई। ३५००/- प्रति घर Ex-gratia grant दलवाई और इस के अतिरिक्त समाज सुधार के कई कार्य किये।

वह गरुद्वारा सिंह सभा नारनौल के प्रधान, सोलजर बोर्ड, मारकट कमेटी, ऐजुकेशन बोर्ड के सदस्य और भारत सेवक समाज के सचिब रहे। अच्छे काम करने के कारण उन का नाम चमका और ब्रादरी उन का साथ देने लगी। जिला के सब अफिसर भी उन की बात को सुनतें और उन की कदर करते थे।

१९६९ में वह अपने परिवार के पास फिर जगाधरी आ गये। स्वास्थ बिगड जाने पर उन्होंने १९७८ में सब काम काज छोड़ दिये। उन का स्वास्थ बिगडता गया और वह १८ अक्टूबर १९८२ को स्वर्गवास हो गये। वह अपने पीछे बड़ा फूलता फलता और खुशहाल परिवार छोड़ गये हैं।

कप्तान हरि सिंह एक नेक दिल और धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। मोहल्ला इस्लाम पुरा नारनौल के सूबेदार राजा सिंह उन के विशेष सहयोगियों में से एक हैं। वह भी उन के दिखाए हुये पथ पर अग्रेसर हैं।

ठाकुर सिधूरी सिंह

जन्मभूमी से प्यार रखने वालों में ठाकुर सिधूरी सिंह भी एक है। बालावस्था से उनके विचार सराहनीय रहे हैं। अपने गांव के स्कूल से आठवीं तक पढ़ने के बाद वह जम्मू के रणबीर हाई स्कूल में दाखिल हुये। जम्मू में पढ़ते हुये ब्रादरी को दो ग्रुपों में बंटे हुये देख कर उन के दिल में दुख पैदा हुआ। वह राजपूत कुमार सभा के सदस्य बन गये। सदस्यता के बाद उन्होंने ग्रुपबन्दी के खिलाफ ज़ोरदार आवाज़ उठाई। कई सम्मेलनों में भाषण दिये। ऐसे कार्यों के फलस्वरूप उन का नाम ब्रादरी के अन्य लोग जानने लग पड़े।

उन का जन्म वटाला गांव के ठाकुर कालू सिंह के घर १८९८ में हुआ था। वह अपने सब बहन भाइयों में बड़े हैं। उन्हों ने जम्मू के रणबीर हाई स्कूल से १९२१ में मैटरिक की परीक्षा पास कर ली थी। १९१९ में होने वाली शहर की कमेटी के चुनाव के खिलाफ लोगों ने जोरदार प्रोटेस्ट किया था। प्रोटेस्ट करने वालों के मुख्य नेताओं में ठाकुर जी भी एक थे। १९२३ में उन्हों ने रियासत के युवराज महाराजा हरि सिंह जी से भेंट की थी जो उस समय सीनियर फार्न मैम्बर (Senior Foreign member) के अतिरिक्त सेना के कमाडर-इन-चीफ भी थे। भेंट के समय उन्हों ने अपने लोगों तथा इलाके भर की कठि-नाइयों को विस्तार से युवराज के सामने रखा था। इस के साथ साथ उन्हों ने चनौती भी दी थी कि उस इलाके के अधिकतर नौजवाव इन्डियन मिलिट्री में भारती होने लगे हैं क्योंकि रियास्ती फौज में उन के साथ भेदभाव से काम लिया जाता था। उन दिनों इतनी दलेरी से युवराज से नौजवानों का प्रतिनिधित्व करना कोई आसान काम यहीं था। ठाकुर जी को न चाहते हुये भी नौकरी करनी पड़ी। पहले पहल वह डायरैक्टर इन्डस्टीज के दफतर में लगे। उस के बाद उन्हें कई विभागों में काम करना पड़ा था। १९५६ में वे रणबीर प्रेस के हैडक्लारक नियुक्त हुये और वहां से वह १५ मई १९५८ को रिटायर हो गये। अवकाश ग्रहण करने के बाद वह ठाकुर लछमन सिंह चाडक के अनुरोध पर कई वर्ष तक भारत सेवक समाज के जम्मू कार्यालय में कार्यशील रहे।

अपने गांव से शहर में आ जाने के बाद वे ब्रादरी और समाज सुधार के कामों में बड़ी दिल्चस्पी लैंने लगे थे। बचपन में वह कुमार राजपूत सभा के कार्यकिरता रहे। जवान होने पर वह श्री अमर राजपूत सभा के रूह रवां बन गये थे। १९२६ से १९८५ तक वे श्री अमर राजपूत सभा की कार्याकारिणी के सदस्य रहे। ९० बर्ष की आयु में भी वह सभा कार्यों में नौजवानों से बढ़ कर समय की पाबन्दी के साथ कार्यारत्त रहते हैं।

ठाकुर जी को जम्मू कश्मीर के प्रसिद्ध स्वातन्त्रता सैनानी कामरेड धनवन्त्री जी का सहपाठी होने का सुभाग्य प्राप्त है। धन्वन्त्री जी उन के साथ दिली प्यार रखते थे और भाईयों जैसा व्यवहार करते थे। वह उन को आला सियासी पद पर आसीन देखने के इच्छुक थे। अगर धन्वन्त्री जी कुछ समय ज़िन्दा रहते तो ठाकुर जी भी किसी उच्चपद पर आसीन हो जाते। ठाकुर जी के राजनीतक जीवन में निरवार पैदा होने की उमेद जुलाई १९५३ में धन्त्रन्त्री जी के जीवन के अन्त हो जाने के साथ समाप्त हो गई थी।

वटाला से उजड़ने के बाद ठाकुर सिंधूरी सिंह पलौडा गांव के स्थाई निवासी वन गये हैं। उन के तीन बेटें और एक बेटी निर्मिला है। उन का वड़ा बेटा कुवंर कर्ण सिंह हरि सिंह हायर सैकन्डरी स्कूल का प्रिंसिपल है दूसरा करतार सिंह और सब से छोटा कृष्ण सिंह बैंक में कार्यारत्त है। ९० वर्ष की आयु में वह आज भी स्वास्थ और ठीक हैं।

ठाकुर प्रभात सिंह

लेखक को स्वर्गीय ठा० प्रभात सिंह जी ज़ैलदार के साथ काम करने का सुभाग्य प्राप्त रहा है और उन का पैतरिक प्यार प्राप्त रहा है। लेखक उन दिनों बच्चा ही था। वे बड़े थे फिर थी मैं उन का वड़ा विश्वास पात्र बन चुका था। वे हरेक अच्छे बच्चे को देख कर बड़े प्रसन्न होते थे। उस की मदद करते थे। देश के विभाजन के दिनों बाहर से आने वाले शर्णार्थियों की उन्हों ने हर सम्भव सहायता की थी।

ठाकुर जी का जन्म १९ सितम्बर १८९८ को ठा० चूहड सिंह चिब के घर हुआ था। १० वर्ष की आयु में ईन्हें राइसे देवा-वटाला ज़ैलदार साधू सिंह ने अपनी गोद में ले कर अपना दत्तकपुत्र बना लिया था। ठाकुर साधू सिंह उन के ताऊ थे। अपने गांव के स्कूल से उन्हों ने मिडल की प्रीक्षा पास की और १९१६ में वे अपने स्कूल में ही अध्यापक बन गये थे। १५ वर्ष की राजकीय सेवा के बाद उन्हों ने त्यागपत्र दे कर अपने पिता का कार्यभार संभाल लिया था। ठाकुर साधू सिंह के अस्वास्थ होने पर १९४२ में बे देवा-वटाला के ज़ैलदार बन गये थे।

प्रजासभा के सदस्य रिसालदार साधू सिंह के निधन के बाद देवा-वटाला के महान क्षेत्र के प्रतिनिधित्व के लिये महाराजा हरि सिंह जी ने उन्हें प्रजासभा का सदस्य मनोनीत कर लिया था। अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे इस पद पर शोभामान रहे थे।

१५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हो गया। आज़ादी के साथ ही पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर को हडपने की कोशशें शुरू कर दी थीं। देवा-वटाला पर भी हमले होने शुरू हो गये। हालात के अनुसार महाराज बहादुर ने ठाकुर जी को अवैतनिक लफ्टिनेन्ट का पद प्रदान करके देवा-वटाला के क्षेत्र की सारी जिम्मेदारी उन को सौंप दी थी। इस पर उन्हों ने अपने इलाके के वीरों के सहयोग से कई महीनों तक शत्रु को अन्दर घुसने से रोके रखा और अनेक लड़ाइयों में शत्रु को भारी क्षति पहुंचा कर उसे नाकाम बना दिया था। आखिर २३ नवम्बर १९४७ की शाम को पाकिस्तानी सैना ने बड़ी

संख्या में देवा-वटाला पर हमला किया जिस के सामने लोगों की कोई पेश न चली। उन को अपनी जन्म भूमि को सदा के लिये छोड़ना पड़ा और उस हमले में हज़ारों लोग मारे गगे थे। उन में बजुर्ग ज़ैलदार साधू सिह भी शामिल थे जो उस समय बिमार थे और निकाले नहीं जा सके थे।

गांव छोडने पर पहले दो दिन ठा० प्राभत सिह पलौडा स्कूल में रहे और उस के बाद एक सप्ताह तक जम्मू शहर में विश्राम करने के पश्चात पठानकोट चले गये थे। १५ दिन पाठनकोट व्यतीत करने के बाद वे हिमाचल प्रदेश के एक छोटे गांव सिरित चले गये। वहां रहते हुये उन पर पीलिया का हमला हो गया। इलाज के लिये जम्मू लाये गये। स्वर्गीय पन्डित प्रेम नाथ डोगरा ने उन का इलाज बड़े अच्छे ढंग से कराया। थोड़ा आराम आने पर वे लिर सिरित चले गये। गांव में जाते ही उन्हें निमोनिया हो गया। काफी इलाज कराया गया मगर वे बच नहीं सके और १६ जून १९४८ को उन का निधन हो गया। उसी गांव में उन का दाहसंस्कार कर दिया गया। वहां उन के परिवार के सदस्यों के सवाए दूसरा कोई न था।

महान क्षेत्र के महान नेता की मृत्यु पर वहां कोई दो आसूं बहाने वाला भी अपना न था। वे अपने पीछे फकीर सिंह, कृष्ण सिंह, करतार सिंह और एक मात्र बेटी फकीरो देवी और धर्मपत्नी छोड़ गये। एक कवि के अनुसार—"मारा दयारे ग़ैर में अपने वतन से दूर"। वह जीवन भर अपने इलाके और उस में बसने वालों के उत्थान के लिये लगे रहे। उन्हों ने वटाला और बरनाला में हाई स्कूल बनवाये। उन्होंने महाराजा हरि सिंह जी को अपने सारे इलाके का दौरा करवाया और इलाके की कठिनाइयों को दूर करने के लिये भरसक प्रयत्न किये। उन की सेवाए हमेशा याद रहेंगी। लाख कोशशों पर भी लेखक को उन का चित्र न मिल सका इस बात भारी खेद रहा है।

ठाकुर सहदेव सिंह

ठाकुर सहदेव सिंह का जन्म अपने पिता ठाकुर नानक सिंह की मृत्यु के तीन महीने के बाद हुआ था। वह अपनी माता पिता की एक मात्र सन्तान थे। उन का लालन पालन उन के चाचा रिसालदार साधू सिंह ने अपने बेटों की तरह किया था। अपने गांव से मिडल की प्रीक्षा पास करने के बाद उन्हों ने जम्मू के रणबीर हाई स्कूल में प्रवेश किया और वहां से मार्च १९२५ में अच्छे नम्बारों के साथ मैटरिक के बाद उच्च शिक्षा के लिये प्रिंस आफ वेल्ज़ कालज में दाखिल हो गये थे। पढ़ने में वह बड़े तेज़ थे। कालज में पढ़ते हुये भी उन्हों ने बड़ी मेहनत की और १९२९ मैं वह बी० ए० पास कर गये। बी० ए० करने के बाद वह श्री प्रताप मैमोरियल राजपूत हाई स्कूल जम्मू में अध्यापक बन गये। वहां तीन वर्ष तक काम करते रहे। १९३४ में वह नायब तहसीलदार के पद के लिये छांटे गये। रेविनियू ट्रेनिंग हासिल करने पर वह मीरपुर, बसोहली और हीरानगर के नायब तहसीलदार रहे। १९४० में उन की पदोन्ती हुई और उन्हें तहसीलदार का पद दिया गया। उस पद पर उन्हों ने मीरपुर, राजौरी, भिंबर, लेह और अस्कर्दू में कार्य किया। २२ अगस्त १९४७ को उन्हें असिस्टेन्ट गवर्नर बना कर गिलगित भेजा गया। गिलगित पर पाकिस्तान का कब्ज़ा हो जाने पर उन्हें बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार वह १-११-४७ से १४-९-४८ तक पकिस्तान की कैद में रहे। उस समय उन की धर्मपत्नी श्रीमती शन्ती देवी भी उन के साथ थीं। पाकिस्तान की कैद के दौरान रैविन्यू असिस्टेन्ट राजा नूर अलि खां चिब मोहम्मद शफी चिब और नायक सरदार खां चिब ने उन की बड़ी हमदर्दी के साथ सेवा की थी। हिन्द पाक बात चीत के अनुसार गवर्नर गिलगित का तमाम अमला १८ अक्टूबर १९४८ को लाहौर के रास्ते भारत पहुंच गया। वह भी उन के साथ सकुशल स्वादेश लौठ आये थे। आने पर उन्हें ऊधमपुर में तहसीलदार लगाय गया। फिर वह रणबीर सिंहपुरा में तहसीलदार रहे। उन दिनों उन्हों ने देवा-वटाला के लोगों को इकट्ठा बसाने की कोशश की थी मगर वह सफल नहीं हुये थे क्यों कि उन दिनों सीमा पर आबाद होने के लिये कोई भी त्यार नहीं था। अगर देवा-वटाला से आये लोग उस समय ठाकुर साहब की बात मान लेते तो उन्हें आर्थिक लाभ के साथ राजनीती में भी विशेष स्थान प्राप्त हो जाता। रणबीर-

सिंहपुरा से वह रामनगर भेजे गये और फिर उन्हें कठूआ लगाया गया। वहां भी उन्होंने बड़ा अच्छा काम किया और नाम कमाया। वह एक इमानदार और सच्चे अफिसर थे इस लिये उन की हरेक स्थान पर प्रशंसा होती रही और बेइमान और बदमाश उन से हमेशा डरते और घबराते रहते थे। कठूआ से उन्हें तहसीलदार जम्मू लगाया गया। यहां वह तहसीलदार के होते हुये जम्मू म्युनिसपल कमेटी के प्रधान पद को भी संभाले रहे। उन दिनों भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के जम्मू पधारने पर जम्मू के शहरियों की ओर से एडरेस पैस करने का सोभाग्य भी उन्हें प्राप्त रहा था। पदोन्ती होने पर उन्हें असिस्टेन्ट कमिशनर ऊधमपुर लगाया गया। वहां काम करते हुये उन का पुणः पद बढ़ा और वह वहां के डिप्टी कमिशनर बना दिये गये। ऊधमपुर से वह पुंछ गये और फिर कठूआ तवदील कर दिये गये। कुछ समय वहां कार्य करने के बाद उन्हें जम्मू का डी० सी० लगाया गया। वहां से वह ३१ वर्ष तक महकमा माल की अद्वितिय सेवा के बाद ६ अप्रेल १९६५ को रिटायर हो गये थे। अभी उन को रिटायर हुये थोड़ा समय गुज़रा था कि भारत पाकिस्तान जंग छिड़ गई। उन की शानदार प्रशासनिक सेवाओं को दृष्टीगोचर रखते हुये सरकार नें जंग से प्रभाबित लोगों को संभालने के लिये उन को दोबारा बुला लिया और उजड़े हुये लोगों का प्रबंध हो जाने पर वह घर आ गये थे।

ठाकुर सहदेव सिंह को देवा-बटाला के अच्छे लोगों की सूची में प्रथम स्थान प्राप्त रहा है। इस हलाके की तमाम ब्रादरियों के लोग उन के नेक कामों और उच्च जीवन के लिये उन से प्यार करते थे उन का कहना मानते थे। जम्मू कश्मीर के मुख्य मन्त्री स्वर्गीय बक्शी ग़ुलाम मोहम्मद भी उन की इमानदारी और सूझ बूझ से बड़े प्रभावित थे। वह कई प्रशासनिक और कानूनी उलझनों के समय उन्हें निजि प्रामर्श के लिये बुला लिया करते थे। अपनी ब्रादरी में भी उन को प्रथम स्थान प्राप्त था। वह बड़े शान्त सुभाव और सब से प्यार करने वाले बज़ुर्ग थे।

ठाकुर साहब शान्त चित हो कर अपनी कोठी २१० ए० गांधीनगर में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे कि अचानिक बिमार हो गये और थोड़े समय के अन्दर वह २ मई १९८५ को स्वर्ग सुधार गये। उन की एक मात्र सन्तान विजय लक्ष्मी है जो कुंवर मिलखा सिंह सलाथिया डी० एफ० ओ० से विवाही है। उन की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ती देवी अपनी पुत्री के साथ अपनी कोठी में निवास करती हैं।

चौधरी मेला राम

ग़रीब और साधनहीन घर में पैदा होने वाले बच्चे भी पिछले जन्म के संस्कारों के फल स्वारूप इस जन्म में बड़े काम के लोग बन कर देश और क़ौम के लिये बड़े लाभप्रद सिद्ध हो जाते हैं। यही स्तिथि चौधरी मेला राम की थी। उन्हों ने भी मेहनत लगन और दृढ निश्चय से उच्च शिक्षा प्रप्त की और फकीराना जीवन व्यतीत करते हुये आजीवन सेवा रत्त रहे।

उन का जन्म तहसील भिंबर के एक छोटे गांव मोयल में चौ० हाकिम चन्द के घर १२ मई १९०६ में हुआ था। वटाला मिडल स्कूल से ८वीं पास करने पर वह अपने भाई भागा राम के पास लायलपुर चले गये। वहां वह उस की सहायत से धनपतमल ए० एस० हाई० स्कूल में दाखिल हुये और १९२५ में उन्होंने बड़े अच्छे नम्बरों के साथ मैंट्रिक की प्रीक्षा पास कर ली। पढ़ने के साथ साथ वह मेहनत मज़दूरी भी करते थे।

अपनी योगिता के बल द्वारा उन्हें लायलपुर कृषि कालज में दाखिला मिल गया। उस कालज से उन्होंने दो बर्षीय प्रशिक्षण पास किया और वह सफल होने वाले सहपठियों में पांचवें स्थान को प्राप्त कर गये। ग़रीबी के कारण वह आगे नहीं पढ़ सके। कालज छोड़ने के समय वहां के प्रिंसिपल ने उन की कार्यकुशलता और अनुशासन पर खुश हो कर निम्न शब्दों में सराहना की थी।

This is to Certify that Ch. Mela Ram S/o Ch. Hakam Chand has this year passed the two year leaving Certificate Course at the Punjab Agriculture College Lyallpur standing 5th in the list of successful candidates.

Through out his stay in the college he impressed his teachers as a youngman who was devoted to his studies and who was anxions to please those under whome he was placed. He was a very hard working and obedient student and showed keen interest in all that he was asked

to do. His conduct both in the College and Hostel was good and I hope he will be able to utilese the Agriculture Training he has received in this institution.

I wish him all success.

Dated : 10-8-1928

Signed
Principal
Punjab Agriculture College
Lyallpur.

लायलपुर से लौटने पर वह उसी वर्ष श्रीनगर में एग्रीकल्चर असिस्टेट के पद पर भरती होग ये। उन्होंने १९२८ से १९६२ तक बड़ी लगन और मेहनत से विमिन्न पदों पर ३४ वर्ष तक विभागीय सेवा की। ८ नवम्बर १९६२ को नन्दपुर कृषिफार्म में उन का देहान्त हो गया। ग्रीबों के साथ उन का आजीवन प्यार बना रहा। वह ग्रीबी को कभी नहीं भूले और उन्हों ने सादगी और मेहनत का दामन नहीं छोड़ा।

वह बागबानी के विशेषज्ञ माने जाते थे। उन्होंने कई प्रकार के फलदार पौदों पर रिसर्च की और उन की तरह तरह की नई किस्में बनाने में वह सफल रहे। उन का एक मात्र बेटा चौ० ओम प्रकाश ट्रासपोर्टर है और वह जम्मू शहर में निवास करता है।

जमादार प्रकाश सिंह चिब विक्टोरिया क्रास

वह डोग्रा सिपाई जिस ने दूसरे विश्वयुद्ध में जापानियों को बर्मा फ्रंट पर खदेडने के लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी और बेमिसाल बहादूरी का अदभुत नमूना कर दिखाया था। उस वीर को हम भुला चुके हैं।

वह थे जमादार प्रकाश सिंह चिब। उन्हों ने अपने जीवन की अन्तिम घडी तक जिस जवां मर्दी और बहादुरी से लड़ते हुये वीर गति पाई थी उसे देख कर उस समय की अंग्रेज़ी सरकार ने उन्हें फौजी बहादुरी का सब से बड़ा परूस्कार विटोरिया क्रास देकर सम्मानित किया था। यह पदक भारत के वायसराय लार्ड वेवल ने लाल किले की शाही प्रेड में अपने हाथों से शहीद की विधवा श्रीमति ज्ञानो देवी को भेंट किया था।

उस समय वह १३ फ्रंटियर ग्रुप की १४वीं बटालियन में पलाटून कमांडर थे। १६/१७ फरबरी १९४५ की रात के गयारह बजे जापानियों ने तोपों, मार्टरों और मशीनगनों के ज़ोरदार हमला कर दिया था। उस हमले का सब से ज्यादा दबाव जमादार प्रकाश सिंह की पलाटून पर रहा था। लड़ाई लड़ते हुये जमादार प्रकाश सिंह साढे गयारह बजे सख्त जख्मी हो गये और चलने फिराते के अयोग्य होगये। यह देख कर उन के कम्पनी कमांडर ने उन्हें युद्ध क्षेत्र से बटालियन हैडक्वार्टर में ले जाने और मरहम पट्टी करने का हुकम दिया। घायल होने पर भी प्रकाश सिंह युद्ध क्षेत्र छोड़ने से इन्कार करते रहे। पट्टी हो जाने पर उन की वीरता ने फिर जोश मारा और वह कोहनियों के बल रींघते हुये मैंदाने जंग में भूझ पड़े। अपने मरे हुये जवानों का दारूसिक्का इकट्ठा कर के उन्हों ने अपनी पलाटून को कुछ समय और लड़ने के काबिल बना डाला। उस समय पलाटून के अधिकांश जवान मारे जा चुके थे और शेष होस्ला हार बैंठे थे। इसे देख कर वीर पलाटून कमांडर ने ब्रेनगन खुद संभाल ली और शत्रु से लोहा लेने लग पड़े। उन्हों ने फार्यारिंग खुले मैंदान से जारी रखी क्योंकि घायल होने के कारण वह मोर्चे के अन्दर नहीं बैंठ सकसे थे। इस बार उन की दोनों टांगें भी मशीनगन की फार्यारिंग से जख्मी हो गईं और वह दूसरी बार घायल हो कर ज़मीन पर गिर पड़े। इतना हो जाने पर भी वह मैंदाने जंग से पीछे नहीं हटे। १ बजकर ४५ मिन्ट

पर जमादार प्रकाश सिंह तीसरी बार गोलियों का निशाना बने। भगवान को उन से अभी और काम लेना था। अधिक लहु बह जाने के कारण वह उठने के भी अयोग्य हो गये। लेटे हुये भी वह ललकारते रहे और जवानों की ढारस बंधाते रहे। उन के होस्ले को देख कर जवानों का भी उत्साह बढ़ा। उन्हों ने कमाल कर दिखाया और शत्रु को भागने के लिये विवश होना पड़ा।

इस के थोड़ी देर बाद जमादार प्रकाश सिंह चौथी बार बुरी तरह घायल हो गये। उन की छाती जापानी ग्रेनेड ने छल्नी कर दी। मरते समय उस वीर ने अपने कम्पनी कमांडर को कहा "मेरी चिन्ता न करना मैं ने अपने कर्तव्य का पालन किया है?

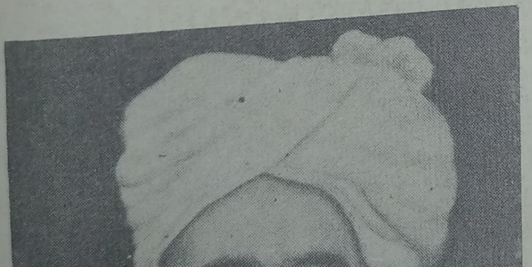
वह गयारा बजे रात से ढाई बजे सवेरे तक तोपों, मार्टरों, मशीनगनों की आग में झूझते हुये दम तोड़ गये। इस दौरान उन के अदम्य साहस, नेतृत्व और अनुकरणीय कर्तव्य परायणता से उन के जवानों को प्रेरणा मिली और शत्रु को युद्ध क्षेत्र छोड़ कर पीछे भागना पड़ा। इस बेमिसाल वीरता के लिए जमादार प्रकाश सिंह को विकटोरिया क्रास से सम्मानित किया गया।

जमादार प्रकाश सिंह की बहादुराना अमरगति पर महाराजा हरि सिंह जी ने कहा था "मेरी रियासत के एक निवासी की अदभुत वीरता और अनुपम बलिदान से मुझे फखर मासूस होता है"। उन्हों ने स्वर्गीय वीर की पत्नी को संवेदना संदेश के साथ ५००/- रुपये भेज कर दुःखी विधवा की ढारस बंधाई थी। इस के अतिरिक्त भारत सरकार की ओर से उन्हें राजबाग़ में ५० एकड ज़मीन भी दी गई थी।

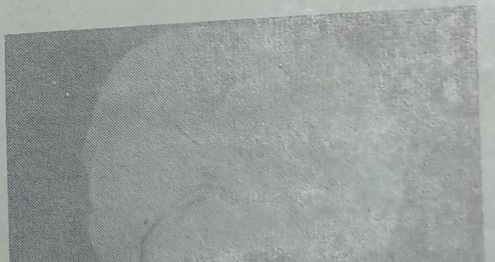
जमादार प्रकाश सिंह का जन्म हीरानगर तहसील के काहनाचक गांव में ठा० ऊधम सिंह चिब के घर हुआ था। ठा० ऊधम सिंह के दादा जसरोटा राज्य में सैनिक थे। इस प्रकार यह परिवार वटाला से आ कर इधर ही बस गया था। स्वर्गीय प्रकाश सिंह कि विधवा आज भी जीवत है और उन का एक मात्रा बेटा मुल्तान सिंह जम्मू कश्मीर पुलिस विभाग में इन्सपैक्टर के पद पर आसीन है।



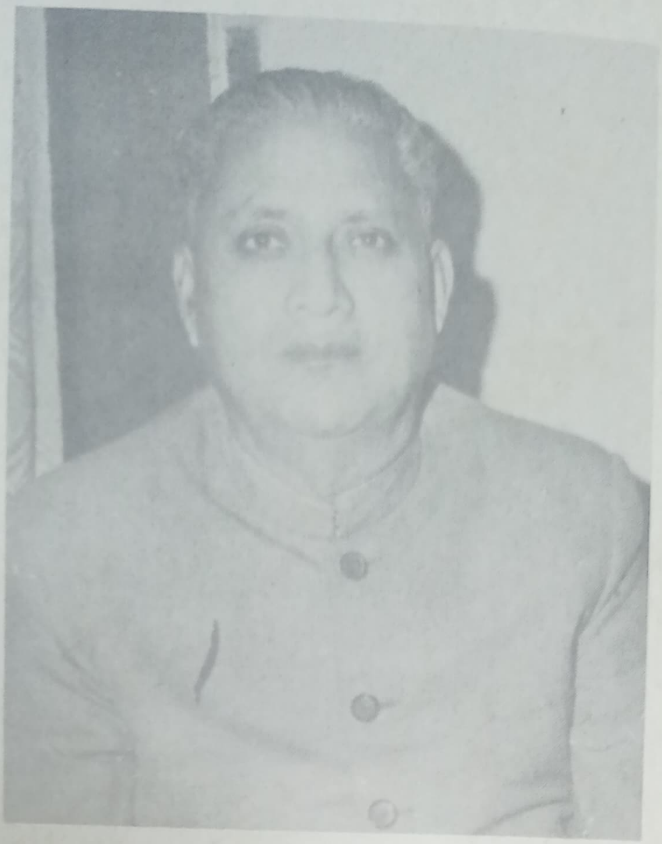
नाईब सूबेदार स्वर्गीय प्रकाश सिंह
विक्टोरिया क्रास



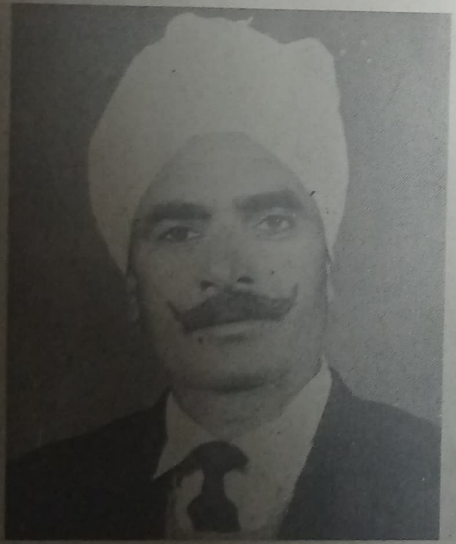
स्वर्गीय मास्टर तेज सिंह



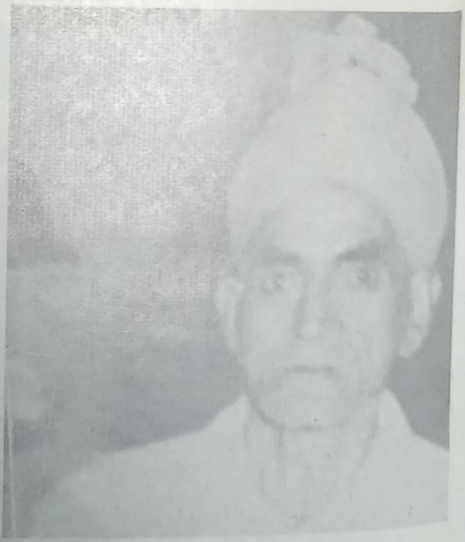
स्वर्गीय ठाकुर चरण दास
जैलदार



ठाकुर रघुनाथ सिंह
आई.ए.एस.



सूबेदार कृपा राम



स्वर्गीय ठाकुर बेली राम
इंस्पैक्टर पंजाब पुलिस

लैफ्टिनेन्ट कर्नल लाभ सिंह चिब

कर्नल लाभ सिंह का जन्म १९ अगस्त १९२० को हवलदार अमर सिंह के घर बटाला में हुआ था। मिडल पास करने के पश्चात वे हाई स्कूल भिंबर में दाखिल हुये। वहां से उन्होंने १९३८ में मैट्रिक की प्रीक्षा पास की और उच्च शिक्षा के लिये प्रिंस आफ वेलज़ कालज जम्मू चले गये। वह एफ० ए० में पढ़ रहे थे कि जून १९४१ में रियासती फौज के लिये कैडिट चुने गए। दो वर्ष वाद जून १९४३ को उन्हें कमिशन मिला और वह सैकिन्ड लैफ्टिनेन्ट बनाए गये। द्वितिय महायुध्य में उन्होंने जनवरी से अगस्त तक बर्मा में भाग लिया और कई वीरता के कार्य कर दिखाए।

अपने जीवन को संवारणे और वीरता का परिचय देने का अवसर उन्हें २२ अकटूबर से ६ नमम्बर १९४७ के सोलहा दिनों के लिये मिला। उस दौरान उन्होंने वीरता, धैर्य, दृढ संनल्म और बलिदान के अनुपम कारनामे कर दिखाए। उन के द्वारा किये गए कार्य जम्मू कश्मीर के सैनिक इतिहास में सदा के लिये स्वर्ण अक्षरों में लिखे रहेंगे। उनको पढ़ने वाले जानने के प्रयास में रहेंगे कि ऐसे बहादुर ने किस पिता के घर और कौनसी ब्रादरी में जन्म लिया था। उनकी यह कहानी लिखने में मुझे समय लगेगा। मगर पाठकों के लिये यह बड़ी लाभदायक और प्रेरणा का स्रोत रहेगी। कर्नल लाभ सिंह के बारे में "जम्मू एण्ड कश्मीर आर्मज़" "Jammu and Kashmir Arms" के विद्यवान और प्रसिद्ध इतिहासकार भारतीय सेना के मेजर जनरल डी० के पालत इस तरह लिखते हैं।

"जब कश्मीर में शत्रु की गति विधियां ज़ोर पकड़ गई और कुछ स्थानों पर शत्रु को इच्छा अनुसार निकल भागते के लिये छोड़ दिया गआ था। उस समय कोहाला बर्साला क्षेत्र के दक्षिनि भाग पर लैफ्टिनेन्ट लाभ सिंह ने एक डोगरा कम्पनी थोडी पुलिस और कुछ हिन्दू सिख देहातियों के साथ शत्रु के सैंकडों आदमी मार कर सुरक्षा स्तिथि को मज़बूत किया और बड़ी मात्रा में दारू-सिक्का अपने अधिकार में ले कर अपनी सेना को एक सप्ताह तक शत्रु से लोहा लेने के काबिल बना कर वह हज़ारों शणार्थियों के साथ बाग (पुन्छ) की ओर बढ़े और वे ८वीं जम्मू कश्मीर रैजिमेन्ट के कमांडिग आफिसर

हिफाज़ती दस्ते से जा मिले थे। चौथी जम्मू कश्मीर बटालियन की बिल्कुल सच्ची और आश्चर्यजनक घटनाओं और कर्नल मलूक सिंह के भेजे हुये वीरता के अदभूत कारनामों से भरी पडी है। उसे पढ़ने के बाद पाठकों को पता चल सकेगा कि एक बहादुर अफिसर ने कितने साहस और दलेरी से प्रतिकूल हालात का मुकाबिला करते हुये अपने सैनिकों के अतिरिक्त हज़ारों शर्णार्थियों को भी सुरक्षत स्थान पर पहुंचाकर उन की प्राण रक्षा की थी।

२२ अक्टूबर दिन के ढाई बजे मुज़फ़फराबाद में गैरिज़न पुलिस के साथ शत्रु से हुई मुठभेड का पता लगा और उस के बाद बटालियन हैडक्वर्वाटरस से वायरलैस द्वारा उस घटना की पुष्टि भी हो गई थी। वायरलैस संदेश में कबाइलियों के अचानक हमले और कत्लेआम का संकेत भी था मगर उस में कमांडिंग आफिसर की ओर से "ए" कम्पनी के लिये कोई विशेष हुकम न था। उस घटना के बाद तीन दिन तक 'ऐ' कम्पनी का क्षेत्र बिल्कुल शान्त रहा जब कि मुज़फ़फराबाद और दोमेल को हथियाने के बाद पाकिस्तानियों ने बड़ी संख्या में कबाइलियों को बसों और लारियों में भर कर जेहलम श्रीनगर सड़क के आस पास स्थानीय पाकिस्तानी सहायकों की मदद से हमला कर के वहां के हिन्दू सिखों की मार काट शुरू कर रखी थी, मगर 'ऐ' कम्पनी को उन घटनाओं का कुछ भी पता न था। २४ अक्टूबर की शाम को पाकिस्तानी फौज का एक अंग्रेज ब्रिगेडियर और एक कर्नल कोहाला चौकी आए और लफिटनेन्ठ लाभ सिंह से मिले। बातों बातों में उन्होंने लाभ सिंह को बताया "छः हज़ार कबालियों ने आगे बढ कर वारामूला पर कब्जा कर लिया है। महाराजा और उस की सरकार खत्म हो गई है। इस लिये आप भी अपने तमाम हथियार हमारे हवाले कर दो ताकि हम आप को सुरिक्षत रावलपिन्डी तक पहुंचाने का प्रबन्ध कर सकें"। यह सुनते ही वीर लाभ सिंह ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया और इतना कहा "साहब मैं तो हथियार डालने से मरना पसन्द करूंगा" जब वे दोनों अफिसर जाने लगे तो जमादार सूरज प्रकाश ने जो उस समह वहां मोजूद था गुडवाई कहते हुये कहा "साहब अगर हम जीते रहे तो फिर मिलेंगे" यह सुनते ही अंग्रेज ब्रिगेडियर ने सटपटा कर कहा "तुम किसी सूरत में भी बच नहीं सको गे मेरी ओर से विश्वास रखो"। लेफ्टि लाभ सिंह ने अंग्रेज अफिसरो से हुई बात चीत और

अपने फैसले को अपने सैनिकों को सुनाया। अपने कमांडर की दलेरी पर सब खुश हुये और उन्होंने भी आतम समर्पन की बजाये अपने जीवन की अन्तिम घडी तक लड़ते रहने की शपथ ली। उसी शाम के साडे आठ बजे पाकिस्तानी कानवाई तेज रौशनी के साथ कोहाला की ओर आते हुये देखी गई। इस पर "ए" कम्पनी की कोहला पुल पर तैनात गार्ड ने सूचित किया कि कुछ संदिग्ध सशस्त्र व्यक्ति सीमा के अन्दर आते हुये देखे गये हैं। हिन्दू सिख शणार्थियों ने भी ऐसे लोगों के आने की पुष्टी के साथ यह भी बताया कि बड़ी संख्या में आक्रमनकारियों ने उत्तर की ओर से हमला करके गांव पर कब्जा कर लिया है। वे गांव निवासियों को पाकिस्तान में हाक कर ले जा रहे हैं। २५ अकटूबर सवेरे कोहाला पुल के दक्षिण में शत्रु के प्रवेश की सूचना मिली और यह भी पता चला कि वे हिन्दू सिखों के घरों को लूटने के बाद जलाते जा रहे हैं। यह सुन कर लाफिट० लाभ सिंह को मालूम हो गया कि शत्रु कम्पनी को घेरणे की कोशिश में लगा हुआ है। दुश्मन उत्तर, दक्षिण और पूर्व में फैल जाना चाहता था जबकि पश्चिम की ओर से पाकिस्तानी सेना जेलहम नदि को पार करने ही वाली थी। उस के बाद दोमेल शत्रु के पास चले जाने का समाचार भी मिल गया और साथ ही जम्मू कश्मीर की थौथी बटालियन के मुसलमान सैनिकों के विश्वासघात की खबर भी उन तक जा पहुंची थी। दोमेल से बच कर आने वाले गैरिजन पुलिस कर्मियों से यह भी पता चल गया कि चौथी जम्मू कश्मीर इन्फैन्ट्री बटालियन के कमाडिंग अफिसर कर्नल नारायन सिंह भी अपने ही मुसलमान सैनिकों के हाथों मारा गया है। इन बातों को ध्यान में रखते हुये लाफिट० लाभ सिंह ने शत्रु का घेरा तोड़ कर किसी सुरिक्षत स्थान पर चले जाने का विचार बना लिया क्यों कि उस समय वह कम्पनी दोनों ओर शत्रु के घेरे में फंस चुकी थी। यह सब कुछ होता देख कर लाभ सिंह ने अपनी कम्पनी को दक्षिण पश्चिम को पुन्छ की ओर पीछे हटाने का आदेश दिया। तप्पश्चात चार पलाटून की ओर जो उस समय बगला गांव में तैनात थी से सूचना मिली कि हजारों की संख्या में हिन्दू सिख शणार्थि पाकिस्तानी आक्रमनकारियों के भय से डरते हुये अपने घरद्वार छोड़ आये हैं और शत्रु बडे हमले के लिये आगे बढता आ रहा है। यह सुनते ही लाफिट० लाभ सिंह ने तुरन्त पलाटून

नम्बर २ को पलाटून नम्बर ४ की सहायता के लिये हुक्म दिया। चुंकि उत्तर कि ओर दबाव को बढते हुये देख कर कमांडर लाभ सिंह ने कम्पनी को एक जगह इकट्ठा हो कर बगला गांव के समीप पाकिस्तानी फौज के साथ निपटने का आदेश दिया। साढे पांच बजे तक पूर्ण त्यारी हो चुकी थी। दुर्भाग्यवश शत्रु ने निश्चित समय के पहले ही लम्बे चौडे क्षेत्र पर कब्ज़ा कर के टोपा ढलवान और दानागलि में मोर्चे संभाल लिये थे। बगला की ओर से सफलता असम्भव बन चुकी थी। इस तरह कमांडर लाभ सिंह ने अगले दिन प्रातः पहाड़ी चोटियों को विजय करने का फैस्ला किया। इस कठिन कार्य के लिये उन्होंने सब पलाटून कमांडरों को रात के समय बुला कर हमला करने का हुकम दे दिया। उन्होंने कहा तोपा पहाड़ी के लिये पलाटून नम्बर १ और ४ बढेगी जबकि दानागलि को गैरिजन पुलिस की पलाटून नम्बर २ हासिल करेगी।

अगले दिन प्रातः दो बजकर पंद्रा मिन्ट पर सेना हमला के लिये चल पड़ी। यह बहादुर धीरे धीरे चुपचाप रैंघते हुये पौफटने तक शत्रु के नज़दीक पहुंच गये। उस समय शत्रु दिन भर की लूटमार और मारकाट के बाद थकामांदा रज़ाइयां ओढ़े हुये निश्चिन्त हो कर एक संत्री के सहारे सो रहा था। गैरिज़न पुलिस के नायक मक्खन सिंह ने रैंघते हुये पलाटून नम्बर ४ के जवानों से आगे बढ़ कर दुश्मन के संत्री का काम तमाम कर दिया। उस के बाद सैनिक शत्रु पर बुरी तरह टूट पड़े और थोड़े समय के अन्दर ही टोपा पहाड़ी पर कब्ज़ा कर लिया। पलाटून २ को दाना गलि को विजय करने के लिये भारी मुश्किलात से दो चार होना पड़ा था कियोंकि वहां शत्रु सतर्क हो चुका था और हमले की सफलता के लिये तीन इंच दहाने की मार्टरों को प्रयोग में लाना पड़ा था। बड़ी मुश्किल के बाद दानागलि हमारे हाथ लगी थी। उस हमले में एक नायक शहीद और पांच सैनिक घायल हो गये थे। मरने वालों के अतिरिक्त दुश्मन का एक घायल सूबेदार और आठ सिपाई हमारे हाथ लगे थे। वहां से बड़ी मात्रा में दारू सिक्का और पठानी रायफिलें भी मिली थीं। पूछने पर घायल सूबेदार ने बताया था "मैं बलोच रैजिमेन्द का पैन्शनर सूबेदार हूं। मैं दोबारा मुस्लिम लीग नैशनलगाडं में भरती हो चुका हूं। मुझे इस के लिये कुछ समय पहले बुलाय गया था। मैं ३०० पठानों,

पंजाबियों और कश्मीरी मुसलमानों का कमांडर हुं। हमें पाकिस्तान सरकार
ने हथियार देकर कश्मीर पर हमला करने के लिये भेजा है" उस समय
लैंफ्टि० लाभ सिंह के साथ तीन हजार शणार्थी भी फौज के सहारे चल रहे
थे। वह रात उन्हों ने अवेरा नाम के गांव में काटी थी। उस के दूसरे दिन
कमांडर लाभ सिंह को पता चला कि मंधरी गांव में हिन्दू सिख शणार्थियों का
एक बड़ा भारी इकट्ठ हो चुका है और पाकिस्तानी उन पर हमला करने ही
वाले हैं। यह सुनते ही लैंफ्टि० लाभ सिंह ने एक फौजी टुकडी को तुरन्त
वहां भेज दिया और खुद भी शणार्थियों को साथ ले कर ढाई बजे वहां पहुंच
गया। वहां तीन हजार शणार्थी मौत की घडियां गिन रहे थे। शाम ढल आई
थी, इस तरह २७ अक्टूबर की रात उसी गांव में व्यतीत करने का फैसला
हुआ। फौज और उस के साथ चल रहे शर्णार्थियों की एक मात्र आशा "बाग़"
थी मगर वहां तक जाने का रास्ता बिल्कुल बन्द हो चुका था। यह जानते हुये
भी बहादुर लाभ सिंह ने होस्ला नहीं छोड़ा और उस ने चकार से हो कर बाग़
पहुंचने का मन बना लिया। चलने से पहले उस ने गर्ज कर कहा था "हमें
बाग़ पहुंचना है जो कोई भी हमारे रास्ते में आएगा हम उस से निपट लेंगे"।
लगतार तीन दिन तक वह सब लोग नाणः प्रकार की कठिनायों को झीलते हुये
शत्रु के हमलों को रोकते, गोलियों से बचते चकार में डेरे डाले हुये शत्रु को
चीरते, गिरते पड़ते २९ अक्टूबर सवेरे बाग से ८ मील दूर नंगा पर्वत की
ढल्वानों पर पहुंच गये थे। उस खतरनाक भाग दौड़ में सेना तथा शर्णार्थियों
का भारी माली और जानी नुकसान हुआ था। ऐसा होना कुदरती था।
वहां इकट्ठे उन लोगों ने खाना बनाने की योजना बनाई। सैनिकों का विचार
था कि भोजन त्यार होने तक शणार्थियों का वह लम्बा काफिला एक स्थान पर
इकट्ठा हो जाएगा। पहाड़ों पर चरती हुई भेड बकरियां उन का भोजन बनीं।
भोजन त्यार होने ही वाला था कि शत्रु को घेरा डालते हुये देखा गया। फौज
संभलने भी न पाई थी कि शत्रु ने हमला बोल दिया। लड़ाई शुरू हो गई
मगर बिफरे हुये डोगरों के आगे शत्रु की कोई पैश न चल सकी और उस की
गनों के मुंह बन्द हो गये। फार्यरिंग बन्द होने तक दो डोगरा सैनिक बलिदान
और कुछ घायल हो गये थे। उन के अतिरिक्त कई शणार्थी भी मरे और
घायल हुये थे। उस के बाद रात के समय शत्रु ने छुप कर दो बार हमले किये
जिन्हें बहादुर डोगरों ने विफल बना दिया था। २९ अक्टबर सवेरे तमाम

पलाटून कमांडरों ने शत्रु के बढ़ते हुये दबाव और दारू सिक्का के अभाव के बारे में अपने कमांडर को अवगत कराया। अभी यह बात चीत चल रही थी किसी ने झूठी खबर उड़ा दी कि सैनिकों के पास दारू सिक्का समाप्त हो चुका है और फौज शणार्थियों को भगवान के हवाले कर के भागने ही वाला है। यह सुनते ही काफिले के अधिकतर लोगों ने अपनी औरतों और जवान बेटियों को मुसलमानों से बचाने के लिये अपने हाथों से काटना शुरू कर दिया। यह सुनते ही सैनिक उस घृणापूर्वक कार्य को रोकने के लिये घठना स्थल पर जा पहुंचे। उस समय तक लगभग ४०० अबलाओं का बलिदान हो चुका था। आखिर ऐसा समय भी आ गया जब लफिट० लाभ सिंह के लिये दक्षिण की ओर ज़ोरदार हमला बोल कर दुश्मन का घेरा तोड़ कर उसे तित्रबित्र कर देना ही एक मात्र हल था। दूसरी ओर पाकिस्तानियों को यक़ीन हो चुका था कि डोगरों की सारी शक्ति समाप्त हो चुकी है। वह जानते थे कि हमला करने की बात ही नहीं वह तो अपनी सुरक्षा के भी अयोग्य हो चुके हैं। उन का यह विचार बिल्कूल सच था। यहां यह लिखना भी ज़रूरी है कि सैनिक अन्तिम सीमा तक पहुंच चुके थे। बर्सला को छोड़ने के बाद किसी ने कुछ भी खाया पिया न था। वे भूक से बुरी तरह निढहाल हो चुके थे। उन का बारूद लग-भग समाप्त हो चुका था। इतना कुछ होने पर भी कमांडर लाभ सिंह अन्तिम दाव लगाने का दृढ निश्चय किये हुये थे। उन्होंने सारी मॉटरों को फैंक देने और अपनी कम्पनी के तमाम जवानों को शणार्थियों की रक्षा करने और हमला बोलने के जिये इकट्ठा कर लिया। ३० अक्टूबर सवेरे 'ए' कम्पनी के ६० जवानों ने भारी जत्थे की सहायता से जंगी नारे लगाते हुये शत्रु पर सीधा हमला बोल दिया। पलाटून नम्बर एक की मशीनगन भी अपनी शक्ति के अनुसार फायरिंग करती रही। बहादुर डोगरे मरते जीते आगे बढ़ते गये। उन के बलिदानी हमले से भयबीत हो कर शत्रु अपने बड़ी संख्या में सैनिक और लुटेरे मरवा कर मैदान से भाग गया। इस हमले में ४ पलाटून के २ सैनिक शहीद और दो घायल हो गये थे जबकि कुछ शणार्थी भी मारे गये थे। शत्रु के भागने पर शणार्थियों ने दूर तक दुश्मन का पीछा किया था। कुछ समय तक मार काट चलती रही। उस समय तक कमांडर लाभ सिंह ने तीनों पलाटूनों को पहाड़ी की तीनों ओर तैनात कर के शणार्थियों की सुरक्षा को सुदृढ बना लिया था। कमांडर को मालूम था कि दुश्मन प्रतिशोद

के लिये दोबारा हमला करेगा। ठीक ऐसा ही हुआ। रात के ग्यारह बजे गोलियां चलना शुरू हो गईं। सर्दियों की सख्त ठन्ठी रात का अंधेरा, घने जंगलों से भरा पडा पहाडी रास्ता, हजारों की संख्या में शस्त्रहीन शर्णार्थियों का काफिला, थोडी और वह भी निहत्थी फौज, चप्पे चप्पे पर धुश्मन की घात और फायरिंग क्या कुछ और कहां तक लिखा जाए। मगर शाबाश! बहादुर कमांडर तेरे हौस्ले में ज़रा भी कमी न आई, तेरा साहस अडिग रहा, तेरा मनोबल नहीं डोला। ऐ सलारे काफिला तु सब अपत्तियों और वाधाओं को पार करता हुआ बनिपंसारी गांव में आ पहुंचा और तेरी मंजल बाग केवल तीन मील दूर रह गई। बनिपंसारी गांव में एक लम्बी दाढ़ी बाला व्यक्ति एक अजनबी मोहम्मद याकूब को कमांडर लाभ सिंह ने पास लाया। उस ने कमांडर से कहा "वह गांव का नम्बरदार है महाराजा हरि सिंह का वफादर है। इस लिए वह अपने गांव में रह रहा है जबकि अन्य सब लोग गांव छोड़ कर पाकिस्नान को चले गए हैं। उस ने बातों बातों में यह भी बताया कि कुछ दिन पहले डोगरा फौज बाग में मोजूद थी मगर इस समय बाग़ पर शत्रू का कब्जा हो चुका है यह बिल्कुल सच है"।

शाम ढल चुकी थी। अंधेरा बढ़ रहा था। घायल और बिमार शर्णार्थियों की दशा बिगड़ती जा रही थी। भूख प्यास से सभी व्याकुल होते जा रहे थे। इस लिए कमांडर लाभ सिंह ने वह रात वहां रहने का निश्चय कर लिया। रात १० बजे कमांडर लाभ सिंह ने पलाटून कमांडरों की कांफ्रस बुला कर उन्हें कुछ गुप्त अदेश दिए। उधर उस नम्बरदार ने शर्णार्थियों को आटा चावल वांटते हुये समझा दिया कि यदि वह कुछ रुपये पठानों के नेता को भेंट कर सकें तो वह उन को बाग़ तक ले जाने की सहायता प्रदान कर सकता है। विवश और मायूस शर्णार्थियों ने उस की यह बात मान कर अल्प समय में ही कुछ रुपये इकट्ठे कर लिये और २००० रुपये एक शर्णार्थी लीडर शत्रु क्षेत्र में जा कर पठान नेता को भेंट चढ़ा आया। पठान लीडर की चिकनी चुपड़ी बातों में आ कर उस शर्णार्थी ने उसे वह सव गुप्त बातें भी बता डालीं जिन का उसे ज्ञान था।

उस ने उसे यह भी बता दिया कि डोगरा सैनिकों के पास बारूद बिल्कुल समाप्त हो चुका है। सैनिकों की संख्या ५०/६० से अधिक नहीं है और उन में से कुछ सैनिक शस्त्रहीन हो चुके हैं। यह सुन कर पठान लीडर बड़ा

प्रसन्न हुआ। पठानों ने पाकिस्तान सेना के साथ रातोरात सारा इलाका घेर लिया। दिन चढ़ने पर कुछ गोलियां चला कर पठान लीडर ने अन्य ६० साथियों के साथ गांव में बड़ी शान से प्रवेश किया और गर्ज कर कहा "महाराजा के फौजिओ हथियार डाल दो"। उसे इस बात की बिल्कुल खबर न थी कि पास की झाडियों में डोगरे वीर भूके शेर की तरह छुपे बैठे थे। पठान लीडर के यह अनुचित शब्द सुनते ही कमांडर लाभ सिंह के अर्दली को जोश आ गया और उस ने अपनी रायफल की पहली गोली से उसे मार डाला। लीडर के गिरते ही अन्य सब लोग भाग निकले। भागते हुये पठानों पर फायरिंग की गई जिस के फलस्वारूप १० व्यक्ति मारे गये और शेष भाग गये। इस के अतिरिक्त जमादार सूरज प्रकाश अपनी पलाटून के साथ दुश्मन पर जा गिरा। डोगरों की तेज झपट के सामने शत्रु दम नहीं मार सका और पीछे भाग गया। उसी समय बाग से चली हुई एक सैनिक टुकड़ी भी आ मिली और तमाम पहाड़ियां हर हर महादेव के नारो और तालियों से गूंज उठीं। उन्हें ८वीं जम्मू कश्मीर इन्फैन्ट्री के कमांडिंग अफिसर कर्नल मलूक सिंह ने कमांडर लाभ सिंह की सहायता के लिये भेजा था। इस प्रकार कमांडर लाभ सिंह ने ३१ अक्टूबर को दिन के ढाई बजे अपने लक्ष्य बाग में हज़ारों हिन्दू सिखों की जानें लेकर बड़ी शान से प्रवेश किया। वहां आकर भी उस बहादुर आफिसरेन ६ नमम्बर तक कई लड़ाइयों में सराहनीय काम कर के अपने नाम को जीवत कर लिया और शत्रु पर धाक बिठा दी।

कमांडर लाभ सिंह की वीरता की कहानी को सुन कर महाराजा हरि सिंह जी बड़े खुश हुये और उन्होंने नौजवान अफिसर को उस की अदभूत बहादुरी के लिये कई अफिसरों को छोड़ कर पदोन्ती कर के उसे कप्तान बना दिया था। उस पद के बाद वह निरन्त्र उन्नति करते गये। वह जिस स्थान और पद पर रहे उन्होंने बड़ी मेहनत और निश्काम भाव से कार्यशील रह कर नेक नामी हासिल की है। २९ वर्षीय शानदार सैनिक सेवाओं के बाद वह अगस्त १९७० को अवकाश ग्रहण कर गये। अब वह तलाब तिल्लो जम्मू में अपने बंगले में प्रभु भक्ति में लीन रहते हुये अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनकी चारों सन्तानें बेटियां हैं।

ठाकुर रघुनाथ सिंह आई० ए० एस०

जन्म जन्मांत्र के शुभ कर्मों के फलस्वारूप कई व्यक्ति पिछड़े इलाकों और वर्गों में जन्म लेकर भी बड़े लोगों में शामिल हो जाते हैं और अच्छा नाम कमा जाते हैं। ऐसे लोगों में ठाकुर रघुनाथ सिंह का नाम भी गिना जा सकता है, जिन का जन्म अति पिछडे इलाके में हुआ था।

उन का जन्म ठाकुर शंकर सिंह चिब के घर ७ जुलाई १९२२ को हुआ था। अपने गांव के स्कूल से मिडल पास करने पर वह भिबर हाई स्कूल में दाखिल हुये। वहां से १९३८ में उन्होंने मैंट्रक की प्रीक्षा पास की और उच्च शिक्षा के लिये जम्मू के प्रिंस आफ वेल्ज कालज़ में भरती हो गये। बी० ए० पास कर लेने पर वह कानून सीखने के लिये लखनऊ चलेगये। वहां से १९४५ में प्रथम डवीजन में एम० ए० एल० एल० बी० कर के वह देवा-वटाला के सब से अधिक पढ़े लिखे नवयुवक बन गये। घर आकर उन्होंने समाज सुधार की ओर ध्यान दिया। नौजवान सभा की स्थापना कर के नौजवानों का मार्गदर्शन किया। अपने पिछडे इलाके के प्रतिनिध्तव के लिये उन्हों ने १९४६ में राज्य विधान सभा का चुनाव लड़ा। जन्ता ने उन का साथ तो दिया मगर वह हार गये। १९४७ में स्वर्गीय महाराजा हरि सिंह जी ने देवा-वटाला का दौरा किया। इस दौरान वे नौजवान रघुनाथ सिंह की उच्च शिक्षा को देख कर बड़े प्रसन्न हुये और उन्होंने श्री रघुनाथ सिंह को अपना पी० ए० नियुक्त किया। इसी वर्ष परगोवाल निवांसी ठाकुर गंधर्ब सिंह मन्हास की पुत्री कुमारी माया देवी से उन का शुभ विवाह हो गया। राजकीय सेवा में उन की अनेक बार पदोन्ती होती रही। उन्हों ने अपनी सेवा के दौरान, अन्डर सक्रेट्री, डिप्टी सक्रेट्री, सक्रेट्री, कस्टोडियन, पी० आर० ओ०, डायरैक्टर सोशलवैल्फेयर, सक्रेट्री स्टेट एसम्बली आदी महतवपूर्ण पदों पर कार्य किया। १९७३ में उन्हें आई० ए० एस० करार दिया गया। उस के बाद वह डी० सी० ऊधमपुर लगाय गये। जुवाई १९८० में वह डी० सी० फूड सप्लाई के पद से रिटायर हो गये।

राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त कर लेने पर भी वह चुप नहीं बैठे।

वह कांग्रेस (ई) में शामिल हो गये। राजनीती में आ कर उन्हों ने मेहनत और लगन से काम किया। अन्ततः वह जम्मू कश्मीर प्रदेश कांग्रेस (ई) कमेटी के उप-प्रधान चुने गये। इस समय भी वह अपने पद पर आसीन हैं। उन के देश वीर कुल्बीर और महावीर तीन बेटे और नीलम और कुसम दो बेटियां हैं। वह अपनी कोठी नम्बर १८-सी० सी० गांधी नगर में निवास करते हैं।

पूर्ण सत्य

★ भगवान के स्वाय दूसरा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है।

★ यहां लहु का एक कतरा भी गिरे वहां देबताओं का आगमन असम्भव है।

★ प्राणियों पर दया करना सब से बड़ा धर्म है।

★ ग्रीबों को दिया ही उत्तम दान होता है।

★ देश और धर्म हित मरने वालों की समाधियां बनाई जाती हैं।

★ वह मनुष्य जीवत भी मुर्दा है, जो अपने लिये जीता है, अपने लिये सोचता है और अपने लिये ही करता है।

★ देवता सुगंध के भूके होते है दुर्गंध के नहीं।

★ मनुष्य के अपने कर्म ही मित्र और शुत्र होते हैं।

★ प्राणियों के प्राण लेकर उन का मांस खाना सब से बड़ी अमानवता है।

देवा-वटाला के शहीद

नवम्बर १९४७ की तबाही और बर्बादी के बारे में पहले विस्तार से लिखा जा चुका है। वहां कितने लोग शहीद हुये थे और उन के नाम और गांव क्या थे। उन के लिखे बिना यह इतिहास पूर्ण नहीं कहा जा सकता था। इस लिये उन सब के बारे में बड़ी खोज की गई है। इस कार्य के करने में कई महीने लगे थे। बड़ी महनत और मुश्किल के बाद जो कुछ मिल सका है उसे लिखा जा रहा है ताकि अपनी जन्म भूमी की बलिवेदी पर बलिदान होनेवाले शहीदों के नाम कुछ समय तक जीवत रह सकें। यही मेरी (लेखक) उन शहीदों के लिये श्रद्धांजली रहेगी। शहीदों की सूचि से पाठकों को भली प्रकार स्पष्ट हो जायेगा की कई परिवारों के तो कुछ लोग मारे गये थे और कुछ परिवारों का नामोनिशान मिट गया था।

ऊपर वटाला

जगना सपुत्र फफो चिब
सीता पत्नी जगना ,,
तोती विधवा गौपी ,,
लछमन सपुत्र गोविन्द पीरमोंगा
घुलो परोहित
मेंहतो विधवा बखतावर रोही
ठाकरी विधवा शिवो ,,
तेज सिंह सपुत्र शिवो ,,
जयदेवी विधवा लक्खू ,,
गुजरी विधवा सरूपा पीरमोंगा
घसीटू सपुत्र धन्नु ब्राह्मन ,,
शिव राम सपुत्र बिंद्रू ,, ,,
लछमी पत्नी बिंदरू ,, ,,
मालन विधवा ज़ोरावर चिब ,,
जमना विधवा राज़ू ,, ,,
हरि राम पुत्र गूहडा ,, ,,
पारो विधवा डफू मन्हास ,,
संसार सिंह मन्हास ,,
बैन्ती पत्नी संसार सिंह ,, ,,
शान्ती पुत्री ,, ,, ,, ,,
निक्की पत्नी बेली राम ,, ,,
हौशनाक पुत्र बारी ,, ,,
बादामो विधवा लोजर ,, ,,
बूवां ,, कक्कु ,, उपर टालवा
कृपा पुत्र गुलाबू ब्राह्मन पीरमोंगा
संसार चन्द पुत्र कृपा ,, ,,
चूहड़ा पुत्र बुदां ढोक
बेलू पुत्र केसर ,,
इन्द्र पुत्र काहना भाऊ ,,
गुरां ,, हरनाम प्रोहित
लक्खी ,, हरनाम ,,
खडकू ,, लखमी ,,

ज्ञान ,, लखमी ,,
खुशिया पुत्र धमाका ,,
कौशल्या पुत्री बकील भाऊ ढोक
कुत्तु पुत्र चूहड़ा मदराना ,,
निक्की पत्नी कुत्तु ,, ,,
काका पुत्र कुत्तु ,, ,,
लुडन पुत्र सोहनू चिब ,,
संगतू ,, धल्ला मेघ आमलियां
शंकर ,, जगतू मेघ ,,
चेतू ,, मखतूला चिब रोही
देवकी पत्नी बारी चिब रोही
नरायण पिता का नाम नहीं मिला
बीरबल पुत्र नामालूम झिवर
चतरू ,, फ़कीर सिंह चिब
कुल्लू पुत्र फ़कीर सिंह ,,
मैरी विधवा नामालूम ,,
गन्डू पुत्र गुलावा चिब
ओंसू ,, ठैणा ,,
ससांरू ,, निहालू मन्हास
कौशल्या पुत्री संसारू ,,
सौलखनि पत्नी संसारू ,,
राधी विधवा माडू राम रोही

जक्खर

लाढा राम पुत्र मोती चिब
शिव राम ,, ,, ,,
हस्सू राम ,, ,, ,,
ठाकरी पत्नी लाढा राम ,,
बु देवी पुत्री ,, ,,
भगो पत्नी कृपा राम ,,

साईं दास पुत्र नत्थू चिब
नत्थू ,, ठैना ,,
सावन ,, ठैना ,,
गंडू प्रोहित ,, प्रभू
मैंहगा ,, ,, शामू
बृजू ,, ,, कृपा
रानों पुत्री ठाकरदास
तारा चन्द पुत्र गुरांदित्ता भोग
कर्म देवी विधवा गुरांदित्ता भोग
कर्म चन्द पुत्र कालू राम वैद्य
सम्भू पुत्र गंडा मिसर
माया पत्नी सम्भू मिसर
कृष्ण लाल पुत्र ,, ,,
सोमां पुत्री ,, ,,
निर्मिला ,, ,, ,,
काकू पुत्र ,, ,,
कीडू पुत्र सुदामां चिब
लछो ,, ,, ,,
निक्का ,, ,, ,,
चंचल ,, ,, ,,
बाज सिंह ,, विचित्र ,,
पारबति विधवा कीडू ,,
सीला पुत्र रत्ना ,,
नरातू विधवा निहंग ,,
धन सिंह पुत्र रसिया ,,
शंकर सिंह ,, गडू ,,
रामा ,, शंकर सिंह ,,
रसालू ,, गडू ,,
नानकी पत्नी रसालू ,,

भौकूं पुत्र बूडा चिब
रानी पत्नी भौकूं ,,
छैलो पुत्र सीला ,,
जमना पत्नी छैलो ,,
रानी पुत्री छैलो ,,
गुड्डी ,, ,, ,,
बसन्त सिंह पुत्र मोती मन्हास
औमकारा ,, रंगील चिब
मुन्शी ,, नेत्र ,,
कारतू पत्नी नत्थू ,,
मालन विधवा ठैना ,,
पारो ,, बिचित्र ,,
महतो ,, बिशना सूबेदार
मैंगा पुत्र मैय्या झीवर
माया पत्नी गड़ू ,,
चूहडा पुत्र गगूं ,,
मीरां बक्श पुत्र साहब दीन तरखान
राबयां पत्नी मक्खन जट
शफि पुत्र भाग जट
महम्दू पुत्र मक्खन जट
दामोदारी विधवा गगूं मेव
पारवति विधवा दया राम गोसाईं
कृष्णा पुत्री दया राम गोसाईं
फकीर चन्द पुत्र जसपत ,,
भगतू पुत्र बाशा चमार
प्रेमी पत्नी भगतू ,,
फाना ,, रीजा ,,
सरूपा पुत्र सूंको ,,
गुरांदित्त पुत्र जसोधा पीरकँमला
बीली पुत्र लछमन ,,
लछमन पुत्र गड़ूं ,,

जैन्ती पत्नी बेली राम चिब
बैन्ती ,, भुल्ला राम ,,
नारायणू पुत्र गुनां ढूंहगा
पुन्न ,, ,, ,,
धमूली ,, ,, ,,
सुर्गो विधवा गोपी ,,
रामदास पुत्र जोती ,,
हरि सिंह ,, हाकू ,,
शिगारा पुत्र चन्दू ढूंहगा
प्रकाश पुत्र शिगारा ,,
रानो पुत्री ब्राहमां सिंह ,,
भोगड पुत्री ,, ,, ,,
लददू राम पुत्र काला राम ,,
शिगारा पुत्र पतिया ,,
सुतो पत्नी घन्सारा राम ,,
गुड्डो पुत्री धर्म सिंह मन्हास
भगत सिंह पुत्र आतमा राम गदल्लेवाली
राजो पत्नी भगन सिंह ,,
मघर सिंह पुत्र ,, ,, ,,
रिषी ,, ,, ,, ,,
कृष्णा पत्नी बसन्त सिंह ,,
सत्या पुत्री रिषी राम ,,
रानो ,, ,, ,, ,,
राज सिंह पुत्र बसन्त सिंह ,,
दीवान सिंह पुत्र सर्बन सिंह ,,
पारो विधवा ,, ,, ,,
ऊधो पुत्र जोरावर सिंह ,,
लछमी विधबा ,, ,, ,,
चतरु पुत्र किष्णा ,, ,,
सौलखनी विधवा मुन्शी राम ,,

रूडी विधवा शीकां तरोटा
विचित्र पुत्र ,, ,,
जमना पत्नी नत्थू ,,
सोमां पुत्री ,, ,,
गुड्डी ,, ,, ,,
पसिन्दा पुत्र जगीसा ,,
मिल्खी ,, पसिन्दा ,,
घुन्हा ,, बिहारा ,,
नवाबू ,, पसिन्दा ,,
लद्दू पुत्र रत्ता लम्मी
कोरु ,, गोपाला ,,
काबल ,, नानकू कुकड
क्रिष्ण चन्द पुत्र देवी दित्ता
भुल्ला ,, बीरबल
ससांर सिंह ,, भुल्ला (शहीद)
देवकी पत्नी कोरु राम ,,
भंडू राम पुत्र मेहर सिंह चियाडी
कृपा राम पुत्र सोह सिंह ,,
रानो पत्नी हज़ारी सिंह मन्हास
बिक्रम सिंह पुत्र कृपा राम चिब
संत राम पुत्र सोह सिंह ,,
गुल्लां देवी पत्नी संत राम ,,
सुमित्री पुत्री संत राम ,,
रत्न सिंह पुत्र ,, ,, ,,
बलवंत सिंह पुत्र लम्भू राम ,,
प्रकाशी पुत्री ,, ,, ,,
दया राम पुत्र बुध्द सिंह ,,
गोमती पत्नी तरलोक सिंह ,,
बाबू राम पुत्र औंसू राम पढार
गन्धर्ब सिंह पुत्र बलदेव सिंह ,,

जल्ही पत्नी गन्धर्ब सिंह
बुआ देवी पत्नी बलदेव सिंह ,,
गुरां पुत्र बीरबल ठंगर ,,
निक्कू पुत्र गुरां
चतरु पुत्र घसीटू ,,
इशरी पत्नी चतरु राम ,,
गन्धर्ब सिंह पुत्रसांई दास ,,
रानो पुत्री गन्धर्ब सिंह ,,
गौरी सिंह पुत्र अमरसिंह ,,
कत्यालू पुत्र खोजू राम ,,
बज़रदेव पुत्र खोजू राम ,,
रामी पत्नी हीरा सिंह ठंगर
मघर सिंह पुत्र मौलू राम चम्बा
ज़ोरावर सिंह पुत्र गणपत ,,
चूनी ,, चिराग़ ,,
घसीटू ,, जट्टू ढांग्री
गीटन सिंह ,, गुंजारा ठंगर
मेंहगा ,, सोहनू ढांगरी
चेतू ,, सोहनू ,,
इन्द्री पत्नी रत्ता ,,
बूई पुत्री हाकिम सिंह ,,
सरस्वती पुत्री हाकिम सिंह ,,
तारो ,, लब्बू ,,
गुरां पुत्र मस्तू ,,
भंडू ,, दर्शन ,,
करतारू ,, फल्लू ,,
लछमी विधवा साधु ,,
गर्बा पुत्र वंगू ठोठो वाली
लब्बू पुत्र बंगू ,,

अभय सिंह पुत्र गर्बा ठोठो वाली
दयाल सिंह ,, शकंर ढांगरी
करनैल सिंह ,, मिल्खी राम ,,
झंडू ,, गोपी राम ,,
बलदेव सिंह ,, अनन्तू ,,
रानो पुत्री बलदेव सिंह ,,
बिचित्रु पुत्र मीहूं ,,
डिपटी ,, अनन्तू ,,
माया देवी पुत्री ठाकर दास ,,
लहनूं पुत्र मीहूं ,,
सोजान सिंह पुत्र चंचल ढूहंगा
लच्छो पत्नी चन्दू चिन्याडी
जसोदां विधवा गोपाला ,,
मीरी पुत्र नामालूम ,,
गुलाबी विधवा खडकू ,,
कास्तू विधवा नत्थू ,,
गुज्ज़र सिंह पुत्र नत्थू ,,
वबरू विधवा जलौर ,,
नन्दा पुत्र फौलादी तरोटा
मालन विधवा ,, ,,
भगवान सिंह पुत्र कालू ,,
महेन्तो विधवा सरदार ,,
मीरां विधवा मुलताना ,,
कास्तू विधवा खैरू खान कल्लर
गोपाला पुत्र काशो ,,
घसीटू ,, इच्छू ,,
नानकी पुत्री ,, ,,
राजदेवी पत्नी एजल ,,
रछपाल सिंह पुत्र इन्दरु ,,
भगवति विधवा कालू ,,

चूनी पुत्र रसिया कल्लर
अमरु ,, जोती जट ढांगरी
सेवा ,, जल्हा जट ,,
रामचन्द ,, बंगाली जट ,,
बलदेव राज पुत्र रामचन्द ,,
गुरो पत्नी रामचन्द ,,
शिवदेवी पत्नी बलदेवराज ,,
लेखराज पुत्र रामचन्द ,,
करतारो पुत्री रामचन्द ,,
रामदास पुत्र बेली राम ,,
मेजर ,, मोहरां सूजोवाला
सतं राम ,, ,, ,,
मेय्या ,, ,, ,,
जोरी ,, घनेशा ,,
अंवो ,, ,, ,,
मल्ही ,, चेतू ,,
पारो विधवा अम्बो ,,
गोपी पुत्र मंगा ,,
दम्मू ,, गन्डू किला छप्पड
सांई दास पुत्र गंडू किला छप्पड
मगंत राम ,, घसीटा राम ,,
लाजां पत्ती मगंत सिंह किला छप्पड
कमल सिंह पुत्र दीबानां किला छप्पठ
ब्रीता ,, जागर सिंह ,,
काला सिंह ,, रखा किला छप्पड
अमरो पुत्री धमू सिंह किला छप्पड
इच्छरो ,, महन्तू किला छप्पड
गोमती ,, दीना नाथ किला छप्पड
कृष्ण सिंह पुत्र राम सिंह ब्रोडछप्पड
मेजर राम ,, बिचित्रु लोहार ,,

गुल्लु राम पुत्र बिचित्रू लोहार ब्रोडछप्पड
लाजवन्ती पत्नी मेजर लोहार ,,
सीता पुत्री मेजर लोहार ,,
रामलाल पुत्र मेजर लोहार ब्रोडछप्पड
भाइयां पुत्री मेजर लोहार ब्रोडछप्पड
कारतू विधवा वकील सिह डोब
माडू राम पुत्र मलताना डोब
सुलखनी विधवा मलताना जट ठंगर
फकीर चन्द पुत्र चेतु जट ठंगर
नाहपो विधवा साधू राम ठंगर
लद्धा पुत्र जोती जट ठंगर
संसारू ,, पन्नू जट ठंगर
प्रकाश ,, कांशी जट ठंगर
सिहा ,, कांशी जट ठंगर
काकू ,, कांशी जट ठंगर
हरबंसो पुत्री कांशी जट ठंगर
प्रेमी विधवा कांशी जट ठंगर
जोती पुत्र गंडा जट ठंगर
मोतां पत्नी जोती जट ठंगर
हरि चन्द पुत्र राजू मुगलांवाला
बीरो पत्नी मघर मुगलांवाला
नाहपा पुत्र अत्तरा मुगलांवाला
कहर सिह ,, अत्तरा मुगलांवाला
गोरां देवी पत्नी कहर सिह मुगलांवाला
हरो पत्नी देवी दित्ता मुगलांवाला
नाहमो पुत्री देवी दित्ता मुगलांवाला
सन्ती ,, देवीदित्ता मुगलांवाला
सन्ता राम पुत्र नन्दू राम मुगलांवाला
सेवा राम ,, नन्दू राम मुगलावाला
खेला राम ,, नन्दू राम मुगलांवाला

वेला राम पुत्र नन्दू राम मुगलांवाला
परस राम ,, नन्दू राम मुगलांवाला
राहदी पत्नी झण्डू राम मुगलांवाला
शाहनी पत्नी रोहलूराम मुगलांवाला
चन्नो देवी पुत्री रोहलूराम मुगलांवाला
बीरो देवी पत्नी झण्डू राम मुगलांवाला
प्रकाशो देवी पुत्री रोहलू राम ,,
मसाँ विधवा गुलाब राम मुगलांवाला
सावन राम पुत्र गुलाब राम ,,
धर्मी पत्नी सावन राम मुगलांवाला
पारो देवी पत्नी पन्नू राम मुगलांवाला
कमला राम पुत्र गुलाबा राम ,,
काका राम ,, पन्नु राम ,,
मंगा राम ,, मथरा दास ,,
मेला राम ,, भुल्ला राम ,,
शिबो देवी पुत्री रामूं राम ,,
बूटा राम पुत्र मिट्ठू राम बनदी
मक्खन राम ,, गोबिन्द राम बनदी
राम सिह ,, मिट्ठू राम मोहला
प्यारा सिह ,, मिट्ठू राम मोहला
वरियाम चन्द ,, मिट्ठू राम मोहला
हरनाम सिह ,, मिट्ठू राम मोहला
प्यारी देवी पुत्री मिट्ठू राम मोहला
वज़ीरो देवी पत्नी बुद्ध सिह मोहला
कृष्ण सिह पुत्र बुद्ध सिह मोहला
वन्ता राम ,, बुद्ध सिह मोहला
प्रकाशो देवी पुत्री बुध्द सिह ,,
माडू राम पुत्र ठैना राम पढार
बूबां विधवा खेला चिब पढार
गुलाबी ,, चत्र सिह पढार

बस्सो विधवा चडतू पढार
गोपाल सिंह पुत्र विजय सिंह पढार
माल्तू विधवा बलदेव सिंह पढार
गंधर्ब सिंह पुत्र ,, ,, ,,
जलही पत्नी ,, ,, ,,
गोगी विधवा बूटा राम ,,
राजो पत्नी जीवन सिंह ,,
रहीमू पुत्र माऊलू ढूंहगी
मीरा बक्श पुत्र ,, ,,
खिजरु ,, गफूरा ,,
अमरु ,, खिजरु ,,
नूर हुसेन ,, मीरा बक्श ढूंहगी
सहारा पुत्र मथरा रोही
लच्छो देवी पत्नी जगत राम रोही
भगत राम पुत्र कालू राम रोही
संत राम पुत्र गोसांई कोटजैंमल
स जां पत्नी संत राम ,,
रूप लाल पुत्र संत राम ,,
धन्नों देवी पत्नी रूप लाल ,,
बन्तो पुत्री रूप लाल ,,
गोपाल दास पुत्र रूप लाल ,,
प्रकाशो देवी पुत्री रूप लाल ,,
रानो देवी ,, रूप लाल ,,
दयाल सिंह पुत्र रामदित्ता ,,
गुरी देवी पत्नी दयाल सिंह ,,
कर्मो देवी पुत्री दयाल सिंह ,,
झण्डा सिंह पुत्र रामदित्ता ,,
शाहनी पत्नी झण्डा सिंह ,,
लाहमो पुत्री झण्डा सिंह ,,
कर्मा पुत्र झण्डा सिंह कोटजैंमल

भगत सिंह पुत्र खुशिया राम कोटजैंमल
जगत सिंह ,, खुशिया राम ,,
बलवंत सिंह ,, जगत राम ,,
साधू सिंह पुत्र रामदित्ता कोटजैंमल
रानो देवी पुत्री साधू सिंह कोटजैंमल
धर्म चन्द पुत्र लब्दू राम कोटजैंमल
शाहनी पत्नी धर्म चन्द कोटजैंमल
धर्मो देवी पत्नी ज्ञान चन्द कोटजमल
गोपी राम पुत्र मोती राम कोटजमल
मोता सिंह ,, माड़ू राम कोटजैंमल
लाल चन्द ,, माडू राम कोटजैंमल
इन्द्र सिंह ,, माडू राम कोटजैंमल
वीरो देवी पत्नी माजू राम कोटजैंमल
राम पुत्र सोनक्खा प्रोहत कोटजैंमल
पुच्चां पत्नी राम प्रोहत कोटजैंमल
शान्ती पुत्री राम प्रोहत कोटजैंमल
सुलक्खनी विधवा हरि सिंह कोटजैंमल
रोशन लाल पुत्र राम लाल कोटजैंमल
गंडा ,, हीरा लाल कोटजैंमल
पाला राम पुत्र रूप लाल कोटजैंमल
जुम्मा ,, छांगां कोटजैंमल
अमर सिंह ,, भंगी कोटजैंमल
पुन्नु राम ,, नत्थू राम कोटजैंमल
मेवा देवी विधवा चूहड़ सिंह ,,
भुट्टी देवी पत्नी अमर सिंह कोटजैंमल
केसरी देवी पत्नी पन्नू राम कोटजैंमल
बैन्ती देवी पत्नी गंधर्व सिंह ,,
रछपाल सिंह पुत्र वरियाम सिंह ,,
रानो देवी पुत्री अमर सिंह ,,
कृष्णा देवी ,, अमर सिंह ,,

सुमित्री देवी ,, वरियाम सिंह कोटजैमल
भगत सिंह पुत्र हरि सिंह जट ,,

देवा

विजा पुत्र मेहंगा चिब
हरि भगत पुत्र रामकौर ब्राहमन
पन्नू ,, नरोतम ,,
कलाधर ,, नरायण ,,
साधू राम ,, प्रभ दयाल ,,
शिव देवी पत्नी साधू राम ,,
भगत प्रोहित पुत्र देवी सहाये ,,
बू देवी पत्नी अज्ञात सहाये ,,
सदरो देवी पत्नी गोगी ब्राहामन
बग्गी पत्नी सिल्लू चमार
रूगल पुत्र रीहज़ा चमार
आत्मा राम पुत्र नागर प्रोहित
भाग देवी विधवा बतारा चिब
साधू राम नम्बरदार पुत्र मकन ,,
मंहगा पुत्र भगत राम चिब
मैय्या ,, फते चन्द चिब
बस्सो विधवा मल्लू जट
पुन्नू पुत्रदामोदर चिब
गोकली पत्नी कमला
रोहलू पत्नी बुछदू भगत
बकोरी पत्नी सोहना चिब
दया राम पुत्र गोकल चिब
काका ,, लक्खू चिब
रोहलू ,, सोहना जट
शौकां ,, रूगल चिब
गंडा ,, गोपाला चिब

शिव राम पुत्र पृथि चौकिदार
किड्डू ,, जालौर चिब
फंगी ,, सोहना जट
चेतू जट ढोक
चूहड सिंह पुत्र गोपी ढोक
भगत राम ब्राहमन थलियां
दया राम ,, चकला
मूला राम चिब नाह
सुनीत सिंह चिब नाह
पारवति पत्नी सुनीत सिंह नाह
सुनीत सिंह चिब नाह
पारवीत पत्नी सुनीत सिंह नाह
प्यार सिंह चिब नाह
प्रभात सिंह चिब खरजाला
मालो देवी विधवा अमर लाल बर्मला
फ्रंगी चिब ,,
निक्का मेघ ,,
अमरू नाहद ,,
जोती चिब ,,

सहालिंवाला

पुन्नु राम पुत्र मोती राम जट
वरियाम चन्द पुत्र पुन्नु राम ,,
शेरू राम पुत्र पुन्नु राम ,,
शिवा ,, वरियाम चन्द ,,
काको पुत्री शेरू राम ,,
सर्वन राम पत्र जवाहर ,,
दुल्हां पत्नी सर्वन राम ,,
थोडू राम साला सर्वन राम ,,
भागो पुत्री सर्वन राम ,,

जगतु पुत्र कौडा राम
चूहड़ा ,, जगतु
धमाली ,, बंगाली
सहाई ,, धमाली
जीवन ,, धमाली
माही ,, धमाली
मुन्शी राम पुत्र धमाली
प्रभा राम ,, लाजा राम
कास्तु पत्नी प्रभा राम
जिओ पुत्री प्रभा राम
चमन पुत्र प्रभा राम
भजन ,, प्रभा राम
आत्म सिंह ,, भाग सिंह
अमर कौर पत्नी आत्म सिंह
प्रेम सिंह पुत्र भाग सिंह
प्रीतो पत्नी प्रेम सिंह
पुन्ना पुत्री महेलू राम
लब्दा पुत्र अज्ञात
सरदार चंद ,, बग्गा
कृष्ण सिंह ,, रूपा
लब्बू ,, रीजा
पारो पत्नी लब्बू
पुन्ना पुत्री मंगतू

कंजलूर

भगत राम पुत्र गुलाब सिंह
मैंहगा राम ,, कक्कू राम
कलिया ,, चिरागा
ऐजल ,, सावन
पुन्नू ,, सावन
सावन पुत्र किष्णा
दौला राम ,, गुणया
मूला ,, सीला राम
बारी ,, मूला राम
वरियाम चन्द पुत्र मूला राम
गहना ,, फफो
खियाली ,, फल्ला
सरदारी ,, नज्जू
आसा सिंह ,, लोजर
वरियाम सिंह ,, सत्गुन कुल्यन
देवी दित्ता ,, गणूं
गल्होदू राम ,, बेलू राम
चन्ता राम ,, घसीटू राम
अमी चन्द ,, हस्सन
हंस ,, सीला
हरि ,, सीला
बुध्दू ,, कालू
कत्थू ,, गोपी
गुरां दित्ता ,, बुतला
प्यारा ,, मूला
राम चन्द ,, फल्लू राम
अमि चन्द ,, फल्लू राम
माया देवी पत्नी बेला सिंह
करतार चन्द पुत्र बेला सिंह
कृष्णा देवी पुत्री बेला सिंह
रोहलू राम पुत्र जुरा राम
राजी पत्नी गंगू राम
पोहली पत्नी बांका राम
सांई दास पुत्र बांका राम
संत राम ,, बांका राम
भाइयां पत्नी सांई दास

बीरो पत्नी संत राम
रामकृष्ण पुत्र सांई दास
प्यारी पुत्री सांई दास
चेतू राम पुत्र गंगू राम
मेवां पत्नी चेतू राम
लाल पुत्र चेतू राम
बेन्ती देवी पुत्री चेतू
लेखू राम पुत्र गंगू राम
शाहनी पत्नी लेखू राम
करतारो पुत्री लेखू राम
भागने ,, लेखू राम
देवी दित्ता पुत्र गंगू राम
धन्नों देवी पत्नी देवी दित्ता
गोपाल पुत्र देवी दित्ता
मैना विधवा लध्दा राम
भाइयां पुत्री बचन लाल
चूहडा ,, रूडा राम
संत राम ,, अज्ञात
माहना ,, गूहडा राम
जगतू राम पुत्र रूहडा राम
सदरो पत्नी जगतू राम
शंकर पुत्र अज्ञान
कास्तू पत्नी शंकर
जलाली पुत्र अज्ञात
गुलाबो पत्नी जलाली
नदं लाल पुत्र साहदू राम
तोषी पुत्री ,, ,,
बेला सिंह पुत्र अज्ञात
छागां राम ,, दम्मूं
सदरो विधवा कत्थू

संतो विधवा चूहडा राम
अमियां पुत्र अज्ञात
पुन्नां देवी पत्नी मूल राम
खजाना पुत्र खियाली
संतो पत्नी फग्गू राम
धर्मों ,, वयिाम चन्द
वीरो ,, बाशी राम
बुद्धू राम पुत्र कुन्डा राम
,, ,, ,, मेहलू राम
सुन्दर सिंह पुत्र लाबा राम
मसां पत्नी सुन्दर सिंह
फोटियां विधवा बाशू राम
हरि चन्द पुत्र चेत राम
कैंसर सिंह ,, चडतू
भाइयां पत्नी कैसर
बैंन्ती पत्नी नामालूम
सैंन्ती ,, ,,
सन्ता पुत्र केसर
बन्ता ,, केसर
बीरो ,, केसर
लहना ,, चडतू
दुनिचन्द ,, ,,
बूध्दू राम पुत्र ,,
पुन्नां पुत्री चडतू
वीरो ,, दुनिचन्द
रुकां ,, मूला राम
जियां ,, मंगता
पन्नू ,, सरुपा चमार
कस्तूरी लाल पुत्र पुन्नू चमार
गौरी पुत्र गंडू चमार

फग़न पुत्र गूरां राम
मेलो विधवा सरुपा
राधी विधवा लब्भू राम
हरो ,, फल्ला राम
बागू पुत्र शामा राम
फकीर ,, बिस्सो
शाहनी विधवा फकीर
कस्तूरी पुत्र मंगतू
चंचल ,, फल्लू राम
पुन्नं राम पुत्र फल्लू राम
भगत सिंह ,, ,, ,,
कृष्ण देवी पत्नी हरिया
राम चन्द पुत्र खेली राम
ज्ञान चन्द ,, राम चन्द
कृष्ण चन्द ,, राम चन्द
तेजू ,, गोपी राम
मथरी पत्नी गोपी राम
फरंगी पुत्र मोती राम
बिशन चन्द पुत्र तामालूम
मसां पत्नी बिशन चन्द
हरि राम पुत्र बिशन चन्द
धर्म चन्द ,, गुरां दित्ता
हरो पत्नी ककुराम
दुनिचन्द पुत्र मोती राम
मसां पत्नी दुनिचन्द
दीवान चन्द पुत्र दुनिचन्द
वीरो दई पत्नी आशा राम
जगत राम पुत्र दित्तू राम
हरि चन्द ,, ,, ,,
प्यारी पुत्री हरि चन्द
दीवान चन्द पुत्र बेली राम
बेला सिंह ,, फज्जू राम
कंसरो पत्नी फकीर जट
सेया पुत्र फकीर जट
देवा ,, ,, ,,
सोहनू पुत्र अतरा जट
सांई ,, नामालूम जट

भगवाल

फरंगी पुत्र गोपी राम जट
नाहमो पुत्री फरंगी राम ,,
कांशी राम पुत्र लालू राम जट
दर्शन लाल पुत्र कांशी राम जट
गुलाबी पत्नी ,, ,, ,,
कत्थू पुत्र मलोका जट
मथरो विधवा ,, ,,
गुरिया पुत्र बागू राम जट
बेलू ,, गीलू राम जट
फेरु राम पुत्र बेलूराम ,,
खीलो राम पुत्र सोहना राम जट
भगत राम पुत्र खीलो राम जट
धन्नो देवी विधवा शेरु राम ,,
जगन नाथ पुत्र ,, ,, ,,
कृष्णा देवी पुत्री ढेरु राम ,,
बूहडा पुत्र सोहना राम ,,
लध्दा राम ,, बूहडा राम ,,
वज़ीरो पत्नी लध्दा राम ,,
लक्खो पत्नी संतू राम ,,
गल्होदू राम पुत्र सोहना राम जट
जोधा ,, गल्होदू जट

बस्सो विधवा जोधा जट
अमरो पुत्री जोधा जट
बलदेव राज पुत्र जोधा जट
धन्नो देवी पुत्री जोधा जट
रनिया राम पुत्र गल्लोदू जट
इच्छरो पत्नी रनिया जट
जीवा देवी पत्नी रनिया जट
जीतराज पुत्र रनिया जट
कौशल्या पुत्री रनिया जट
गुरो देवी पत्नी कृपा राम जट
पूर्ण देवी पुत्री कृपा राम जट
संत राम पुत्र ,, ,, ,,
जोती राम पुत्र दाला राम जट
खज़ाना ,, जोती राम जट
जागीर ,, खज़ाना जट
हरवंसो पुत्री खज़ाना जट
गुड्डी ,, गज़ाना जट
गडू पुत्र सोहना जट
बस्सो देवी पत्नी गंडू जट
इन्द्र पुत्र गंडू जट
संतोख सिंह पुत्र इन्द्र राम जट
मल्हू ,, मोती राम जट
गुरदेवी पत्नी मल्हू राम जट
सुध्दी पत्नी मोती राम जठ
बिष्णो विधवा जल्हू राम जट
कांशी राम पुत्र बग्गा राम जट
पारो देवी पत्नी काशी राम जट
भाइयां पुत्री ,, ,, ,,
खैरु पुत्र काशी राम जट
आसा राम ,, गंगू राम जट

संता राम पुत्र आसा राम जट
हरि सिंह ,, कड़ा राम जट
देवां पत्नी अमर नाथ जट
महेन्द्रो पुत्री अमर नाथ जट
हर देवी पत्नी बेला जट
नत्था पुत्र मेहर सिंह जट

अम्बडयाला

सुन्दर पुत्र मोती तरखान
कौशल्या पत्नी सुन्दर तरखान
हुकमी ,, ,, ,,
बारी राम पुत्र गोपी ,,
गुड्डू ,, बारी राम तरखात
गुड्डी पुत्री बारी राम
हिजात मोहम्मद पुत्र मोहम्मद नाई
अला बीवी पत्नी जान मोहम्मद नाई
जम्मां पुत्र अलि मोहम्मद नाई
भाग ,, सीतू मिरासी
भागवंती पत्नी सीतू मिरासी
फातमां पुत्री मीरां बक्श
रानी विधवा दित्तू तरखान
हस्सी पत्नी बग्गा तेली
भुल्लू पुत्र हाकू चिब
संसार ,, भूल्लू चिब
सैंती पत्नी ,, ,,
गुड्डी पुत्री ,, ,,
बिन्द्राबन पुत्र नारायण दास उप्पल
गुड्डी पुत्री बिन्द्राबन उप्पल
पप्पी (जल्हा) पुत्र नरायण दास
महम्मदू पुत्र चिराग़ तेली
जगदीश ,, बालमकुंद ब्राहमन

बालमकुंद पुत्र ठाकुर मोहन
परमा ,, दुनिचन्द ब्राहमन
सीता राम ,, संत राम ,,
सुनीत राम ,, तुल्सी राम ,,
दर्शना पुत्री अमर नाथ ,,
हंस राज पुत्र लब्भू शाह पुरी
वेद ,, ,, ,, ,,
गुल्शन ,, ,, ,, ,,
रिखी ,, भगत ब्राहमन
भुल्ला ,, भगवान दास ,,
सीता विधवा श्रीनिवास ,,
बिशन पुत्र गंगा राम ,,
नन्द लाल ,, नामालू ,,
मूल राज ,, ,, ,,
बद्री नाथ ,, ,, ,,
हाको विधवा सुन्दर दास
हंस राज पुत्र नन्द वाल ब्राहमन
दीना नाथ ,, नन्द लाल ,,
किष्णो पत्नी नन्द लाल ,,
देव राज पुत्र दीना नाथ ,,
दीवान चन्द ,, चर्णदास सुनार
खोजू राम पुरी
जमना देवी पत्नी कांशी राम पुरी
कृपा राम मल्होत्रा
दीवान चन्द पुत्र काहना सलोत्रा
सावन मल ,, ,, ,,
सतपाल ,, सीता राम सलोत्रा
जगदीश पुत्र सीता राम सलोत्रा
रानी पत्नी सीता राम ,,
बद्री पुत्र दीवान चन्द ,,

बद्री सिंह पुत्र बुधि सिंह चिब
धनपति पत्नी बुधि सिंह चिब
संत राम पुत्र रोहलू लोहार
बिद्रू पुत्र मोती तरखान
रूगल ,, मोदी चिब
मक्खनी विधवा दलीप सिंह
कास्तू विधवा दयालू चमार
गल्होदू पुत्र सावन चमार
ज्यूनि विधवा गल्होदू चमार
बस्सो ,, निहालू चमार
इन्द्रू पुत्र चन्नू चमार
शीलो पुत्री बद्रीनाथ ब्राहमन
सुभद्रा पत्नी विशनदास ,,
रानी पुत्री जगननाथ मल्होत्रा
बद्री नाथ पुत्र दीवान चन्द ,,
पप्पू पुत्र बद्री नाथ सलोत्र
बैन्ती पत्नी हरि राम उपल
कृष्ण लाल पत्र हरि राम उपल
जमना पत्नी दुनि चन्द ब्राहमन
मुल्क राज पुत्र गुरांदित्ता पुरी
गुंगी पत्नी राम सरण
सतपाल पुत्र राम सरण
राम सरण ,, हाकू उप्पल
नन्द लाल ,, रामसरण ब्राहमन
कालू राम ,, ,, ,,
सरवन राम ,, रामसरण ,,
जगदीश ,, नंद लाल ,,
प्रतूल जन्द ,, नंद लाल ,,
पप्पू पुत्र सरवन ,,
मालन पत्नी बालमकुंद ,,

गुड्डी पुत्री राम सरण ब्राह्मन
वासदेव पुत्र बावा नारायणदास
विश्व नाथ ,, राधा कृष्ण उप्पल
राधा कृष्ण ,, मथरा उप्पल
दया राम ,, ,, ,,
कृपा राम ,, घसीटा ,,
गुजरी पत्नी नत्थू झीवर
प्रेमी पुत्री नत्थू झीवर

मोहकडयाला

मोहेन्द्र पुत्र कृपा राम चिब
जाठंधर ,, ,, ,, ,,
बसंतु ,, प्रीता राम चिब
माडू ,, शिवो राम चिब
पंजाबा ,, मलहू चिब
हाकिम ,, हरि सिंस चिब
मुन्शी राम पुत्र हरि सिंह चिब
तेज सिंह ,, सांई दास चिब
सांई दास ,, मेहंगा चिब
गन्धर्ब सिंह ,, इन्द्र सिंह चिब
बिचित्र सिंह ,, ,, ,, ,,
ऐजल सिंह ,, ,, ,, ,,
बली राम ,, ,, ,, ,,
दुर्गी देवी पत्नी बिचित्र सिंह चिब
ओकांर सिंह पुत्र बिचित्र सिंह चिब
कृपि पुत्री बिचित्र सिंह चिब
सीता देवी पुत्री बिचित्र सिंह चिव
गेंडी सिंह पुत्र ऐजल सिंह चिब
मोहेन्द्र सिंह पुत्र ,, ,, ,,
पूर्ण देवी पुत्री सीता राम ,,

बलवन्त सिंह पुत्र सूखम मन्हास
दुर्गा सिंह ,, मिर्जा
शेर सिंह पुत्र मिर्जा ,,
अन्नत सिंह पुत्र ,, ,,
गुड्डी पुत्री अनन्त सिंह मन्हास
पूर्ण सिंह पुत्र शेर सिंह ,,
जगत सिंह ,, साहब सिंह ,,
राज कुमारी पुत्री बलवंत सिंह मन्हास
धन्नी पत्नी बारी मन्हास
पोई ,, पृथी ,,
गुल्लां पुत्री पृथी ,,
रानो ,, ,, ,,
लच्छो विधवा चतरु मन्हास
बन्ती पत्नी रोहलू ,,
खेडा पुत्र रोहलू ,,
रानी पुत्री बारी राम ,,
गुड्डी ,, बारी राम ,,
चेतू राम पुत्र लक्खा चिब
जमादार पन्नू राम पुत्र सीला राम चिब
सुबेदार कर्म सिंह ,, बिष्णा चिब
घसीटू पुत्र प्रतापा चिब
कपूर सिंह ,, प्रतापा चिब
गल्होटू ,, प्रतापा चिब
चेतू पुत्र निहाला चिब
संतो ,, नामालूम तरखान
द्रोपति पत्नी संत्तू तरखान
जियां पुत्र नामालूम चमार
खोजू ,, मियां सिंह
सरसा ,, गणेषा
भगत राम पुत्र गणेषा

रानो पत्नी संसार सिंह
धन्नो पत्नी जनक राज
रानो पुत्री दुनि राम
सुन्दर पुत्र गोकल तरखान
इन्द्रो पत्नी सुन्दर तरखान
बिकरु पुत्र ,, ,,
टिकरु ,, ,, ,,
मगंल ,, ,, ,,
साहदू ,, सोहनू ,,
गोरी पत्नी साधू तरखान
इच्छर पुत्र ,, ,,
सीता पत्नी चैन सिंह चिब
पूर्ण सिंह पुत्र चैन सिंह ,,
सुमित्री पुत्री ,, ,, ,,
काकू पुत्र ,, ,, ,,
सदरो विधवा हरि सिंह ,,
बूई गंजी विधवा जैमल सिंह चिब
पारो विधवा गोपाल सिंह चिब
सुखदेव सिंह पुत्र सावन सिंह
मेहंगा पुत्र जगतू राम
अंबो ,, करम सिंह
माया विधवा करम सिंह
गुल्लो देवी पुत्री करम सिंह
सीतो पुत्र मियां सिंह
सुमित्री पत्नी सीतो राम
मियां सिंह पुत्र देविया
सरसा ,, बागू राम
रानो पुत्री हंस राज
तितरी पुत्र दित्तू तेली
ढेरू ,, तितरी तेली

शुक्कर पुत्र ढेरू तेली
दूला ,, सीतू मिरासी
मसां पत्नी भगतू चमार
मंगतू पुत्र जय सिंह
मरो पुत्री भगत राम
सिंधोरो देवी पत्नी सांई दास
धन्नो पत्नी भण्डू राम
सुनीता पुत्र सावन
रामो पत्नी कैंसर दास
जानकी पत्नी तेजा

सरालियां

फैरू राम पुत्र अर्जन डौर जट
संता सिंह ,, फैरु राम जट
तेजा ,, ,, ,, ,, ,,
वरियाम सिंह पुत्र जबाहर सिंह जट
गुरि पत्नी वरियाम सिंह जट
गंगा राम पुत्र मोती राम जट
कर्म देवी पत्नी गंगा राम जट
राम प्यार पुत्र गंगा राम जट
राम लुभामा पुत्र गंगा राम जट
गोपी पुत्र डाला राम जट
कक्को पत्नी सिंगारा राम जट
मेलो देवी पुत्री ,, ,, ,,
देवी दास पुत्र हरि चन्द जट
संसार चन्द ,, हरि चन्द जट

कुंडरा

प्रेम चन्द पुत्र बाग जट
सदरो पत्नी बाग जट

झण्डू राम पुत्र सोहना जट
वरियाम चन्द पुत्र सोहना जट
ढिल्लां पत्नी सोहना जट
गुड्डी पुत्री चन्दु जट
हरदेवी पत्नी राम चन्द जट
जैमल सिंह पुत्र बागू जट
महेन्द्रो पुत्री जनक सिंह जट
गोपाल सिंह पुत्र ठाकुर सिंह जट
बिशन दास ,, फरंगी जट
सुखदेवी पत्नी बिशन दास जट
तोतु राम पुत्र फंगी जट

जालपी

कंसर पुत्र बूढा राम जट
कालिया ,, जहाला जट
जयदेवी विधवा मोती जट
जट्टी ,, जवाला जट
मोतां ,, चड्तू ,,
बूदां पत्नी कक्कू जट
कक्कू पुत्र जस्सा जट
बागू ,, मीरा जट
ढिल्ला पुत्र ,, ,,
बाशी ,, तोतू जट
कर्मा ,, फल्लू जट
देस राज पुत्र कर्मा जट
मीरु पत्नी ,, ,,
काकू पुत्र ,, ,,
साधू ,, लोजर जट
लक्खो पत्नी साधू ,,
वीरो पुत्री साधू ,,
भोला सिंह पुत्र फतह सिंह जट

बन्त कौर पत्नी राजा सिंह जट
प्रीतो पुत्री राजा सिंह जट
झण्डा सिंह पुत्र मोती राम जट
चूहड ,, पुत्र झण्डा सिंह ,,
ढिल्ला पुत्र नामालूम जट
मेलू राम पुत्र ढिल्ला राम जट
वधावा राम ,, ,, ,, ,,
हरिया राम ,, नालूम जट

भडानी

देवकू विधवा गोपी जट
सरुपा पुत्र रूडा ,,
हरो पत्नी सरुपा जट
करतारो पुत्री कौडू ,,
मेला पुत्र जगता जट

गुलबहार

करतार सिंह पुत्र बान सिंह (शहीद)
जयमल ,, मथुरा जट
रुक्कां पत्नी जयमल जट
शेरू पुत्र हरिया जट
साधू ,, हरिया जट
बागो पत्नी चांदी जट
मेजर पुत्र खीलो जठ
वरियाम चन्द पुत्र पन्नू राम
गोपाल ,, सोहनू राम
मोहेन्द्र सिंह ,, गोपाल सिंह
संतू पुत्र मूला राम
बन्ती देवी पत्नी शेरू राम
बैसाखी पुत्र निहाला जट

कृष्णा पुत्री शेरू राम
प्यारी ,, शेरू राम
फत्ता पुत्र मथरा जट
कर्मों पत्नी काह्ना
हीरो पत्नी मंगतू
चांदी पुत्र निहाला
खिन्दू ,, गंगा
कैसर ,, खिन्दू
राहदू ,, मताबा
दलीप सिंह पुत्र सोहन सिंह
संता ,, दलीप सिंह
धर्मा ,, दलीप सिंह
बाजा सिंह ,, रायज़ादा
हरो विधवा हरिया
शंकर पुत्र हरिया
बन्ती पत्नी शंकर
नाहमो पुत्री ,,
काकी ,, शंकर
संतोख सिंह पुत्र गोपाला
टोरी पत्नी फीलो राम
मेजर राम पुत्र फीलो राम
मंगो ,, डाली
गुलाबी विधवा डाली
हरनामां पुत्र मंगू
वरियाम ,, पन्नू
धन्नो पुत्री पन्नू
हरि चन्द पुत्र ठाकुर ब्राह्मन
कृष्णा पुत्री हरि मिसर
चन्दू पुत्र मोहना चमार
टोडर ,, वज़ीरा ,,

लब्भू पुत्र महुवा चमार
भाइयां पत्नी लिस्सां ,,
मनो विधवा रसीला ,,
प्रमो पत्नी तितरी चमार
मुन्शी पुत्र ,, ,,

गलोटा

लद्धू पुत्र चेतू जट
लच्छो पत्नी लद्धू ,,
साधू पुत्र अज्ञात ,,
सोहना ,, ,, ,,
सुन्दर ,, ,, ,,
मलूका ,, अत्ता ,,
लद्धू ,, चेतराम ,,
बचन ,, लद्ध ,,
बाबू ,, ,, ,,
भंगी राम ,, रूडा ,,
हरिचन्द ,, भंगी राम ,,
ज्ञान चन्द ,, भंगी राम ,,
फ्रंगी राम ,, रूडा राम ,,
कत्था सिंह ,, फ्रंगी राम ,,
नत्था ,, ,, ,, ,, ,,
सरदार ,, ,, ,, ,, ,,
कर्म ,, ,, ,, ,, ,,
चेत राम ,, रूडा राम ,,
लब्भू राम ,, चेतराम ,,
कलियाराम ,, ,, ,,
अमर नाथ ,, कलियाराम ,,
लच्छमी पत्नी लब्भू राम ,,
सोहना राम पुत्र तोतू राम ,,

सदरो पत्नी सोहना राम जट
जीवां पुत्री सोहना राम ,,
झण्डो देवी पत्नी राम चन्द जट
करतार चन्द पुत्र ,, ,, ,,
सरदार चन्द ,, ,, ,, ,,
ओम प्रकाश ,, ,, ,, ,,
गडू राम ,, जलाली राम जट
दुनि चन्द ,, ,, ,, ,,
मंगा राम ,, अज्ञात ,,
लच्छो देवी पत्नी दुनि चन्द ,,
बस्सन राम पुत्र अज्ञात ,,
कास्तू पत्नी बस्सन राम ,,
कीडू राम पुत्र अज्ञात ,,
धमू राम ,, कीडू राम ,,
वीरो देवी पत्नी धमू राम ,,
बग्गी देवी ,, कीडू राम ,,
ठाकुर दास पुत्र फंगी राम ,,
धर्मो पत्नी ठाकुर दास ,,
साधू राम ,, अज्ञात ,,
मथरो ,, साधू राम ,,
भगत राम पुत्र अज्ञात ,,
जीवन ,, हीरा ,,
शिव राम ,, जीवन ,,
हरि चन्द ,, हीरा ,,
चूहडा राम ,, हरिचन्द ,,
सुन्दर दास ,, हीरा ,,
भाइयां पत्नी सुन्दर दास ,,
दुल्लां ,, हीरा ,,
बाज़ पुत्र बागू ,,
हरो पत्नी अज्ञात ,,

परस राम पुत्र अज्ञात जट
मिलाप ,, हीरा ,,
रुक्कां पत्नी जीवन ,,
भुल्ला राम पुत्र तोतू राम ,,
तोती पत्नी हरिया राम ,,
जन्कार पुत्र हरिया राम ,,
बलकार ,, हरिया राम ,,
नाहपा ,, हीरा राम ,,
मेहरी पत्नी भगत राम ,,
गुल्लां ,, फूला राम ,,
लच्छमी ,, राम दित्ता ,,
राम दित्ता पुत्र अज्ञात ,,
मोहनो पत्नी कर्म चन्द ,,
बन्सो पुत्री कर्म चन्द ,,
बस्सन पुत्र अज्ञात ,,
इच्छरो पत्नी बस्सन ,,

कढाला

मेमां विधवा कालू राम
किष्ण सिंह पुत्र औंसू राम
केसर सिंह ,, ,, ,,
सर्वन सिंह ,, ,, ,,
कृष्ण सिंह ,, नन्द सिंह
झण्डा राम ,, दुनिचन्द
करतार सिंह पुत्र दुनिचन्द
हरिया राम ,, खियाली राम
काशी राम ,, अमरू राम
ज्ञान सिंह ,, भगत राम
गोपाल सिंह ,, बान सिंह
शाहनी पत्नी गोपाल सिंह

फूला राम पुत्र डाली राम
बेलू राम ,, फूला राम
देस राज ,, बेलू राम
हंस राज ,, बेलू राम
नाहपा राम ,, ,, ,,
बाला राम ,, ,, ,,
जियूनी देवी विधवा नाहपा राम
जैमल सिंह पुत्र डाली राम
अमर सिंह ,, जैमल सिंह
गोपाल सिंह पुत्र ,, ,,
गुरां दित्ता ,, ,, ,,
चेतू राम पुत्र जगत सिंह
मिट्ठू राम पुत्र ,, ,,
हरि जन्द ,, डाली राम
मसां विधवा हरि चन्द
नत्था सिंह पुत्र गोकल राम
प्रेम चन्द ,, नत्था सिंह
कर्म चन्द ,, गंडू राम
फल्ला सिंह ,, तोता सिंह
करतार चन्द पुत्र साधू राम
करतार सिंह ,, दल सिंह
साधू रात ,, दल सिंह
सुन्दर दास ,, ,, ,,
दयाल सिंह ,, सुन्दर दास

भंगाली

संत राम पुत्र लच्छम ब्राहमन
हरिया आहीर पुत्र ठैना राम जट
गोपी आहीर ,, ठैना राम जट
राधी आहीर पत्नी मगंता राम जट
औसूं पुत्र जैमल आसला जट
खैमो पत्ती औसूं आसलां जट
जीतो पुत्रो ,, ,, ,,
धुन्हा पूत्र सोहना आहीर
खेम कौर पत्नी किष्ण सिंह
मैहगां पूत्र मथरा खब्बत
हरि सिंह ,, ,, ,,
मेला राम ,, गंडू आसला
हकूमत ,, गोपी समोत्रा
दुन्ना ,, चेतू जट
भाइयां पत्नी दुन्ना जट
काको पत्नी साधू राम जट
लहनू पूत्र सोहनू आस्ला
लच्छो पत्नी लहना आस्ला
पून्नू पूत्र ,, ,,
भाइयां पत्नी पून्नू ,,

धमूली

मेहतो पत्नी मथरा छिब
साधू पुत्र रूडा ,,
अमर सिंह ,, रूडा ,,
इन्द्र ,, ,, रूडा ,,
जलाल सिंह ,, अर्जन जट
तीरथ राम ,, भगत राम ब्राह्मन
सावन राम ,, भगत राम ,,
द्रोपदि पत्नी भगत राम ,,
तीरथ पुत्र भगत राम ,,
फेरू ,, जोती जट
पुन्नां विधवा कर्मों जट
कर्ण सिंह पुत्र गडूं राम

सदो पत्नी कर्म सिंह
ज्ञानो पुत्री ,, ,,
शेरू पुत्र जोती राम
मक्खो पत्नी जोती राम
हरिय पुत्र अज्ञात
सांई ,, हरिया
जीतो पुत्री हरिया
वरियाम सिंह पुत्र हरिया
नाहमों पत्नी मुणशा सिंह
बग्गी पत्नी जलाल
बज़ीर सिंह पुत्र गोपाल सिंह
जल्ही पूत्री गोपाल सिंह
प्रताप सिस पुत्र सोहनू चिब
शाहनी पत्नी प्रताप सिंह
पुन्नां पत्नी अमर ,,
मालन ,, ,, ,,
सखी ,, सोहनू राम
गोपाल सिंह पुत्र अन्ना जट
वजीरो पत्नी ,, ,,
जल्ही पुत्री ,, ,,
मुंशी सिंह पुत्र वकील चंद

मिट्ठूवाला

बागा पुत्र मक्खन जट
पुन्नां पत्नी ,, ,,
लाभा पुत्र ,, ,,
सुलखनी पत्नी लाभा ,,
जगत सिंह पुत्र ,, ,,
कैसरी पत्नी जगत सिंह जट
गुरिया पुत्र बागू जट

हरिया ,, रैणा जट
रैणा ,, ज्वाला ,,
जुरा ,, गंगा ,,
बूंदां पत्नी जुरा ,,
बली पुत्र ,, ,,
रामचन्द ,, ,, ,,
द्रोपदि पत्नी बेली राम
सदरो पत्नी राम चन्द
राजा राम पुत्र बेलो राम
मुणशी राम ,, बेली राम
वालक राम ,, बेजी राम
चन्ना ,, ,, ,,
करतारी पुत्री बेली राम
राम प्यारी ,, ,, ,,
गुड्डी ,, ,, ,,
भुल्ला पुत्र रामचन्द
फज्जा ,, तोतू राम
संतो पत्नी फज्जा
मेला राम पुत्र फज्जा
देस राज ,, ,,
मेलो देवी पुत्री ,,
कर्स चन्द पुत्र तोतू राम

अब्बोवाला

शंकरी पत्नी महरू चमार
भाइयां ,, अनन्तू ,,
मस्त राम पुत्र सूंको चमार
बागू ,, तबूत चमार
लच्छमन ,, बागू चमार
मंगो ,, बस्सन चमार

अनन्ती पत्नी मंगा चमार
काका पुत्र वरियाम चन्द
तारो विधवा वरियाम चन्द
वरियाम चन्न पुत्र मंगा राम
सन्तो पुत्री मंगा राम
दासू पुत्र डाली राम
मेहर सिंह ,, मंगतू जट
देविया ,, पोठी जट
बिन्द्रू पुत्र मंगतू जट

कांगडा

नानकी पुत्री लोजर राम
हसना पुत्र निहाला जट
बूटा राम ,, निहाला जट
लब्बू ,, बस्सन जट
लोजर ,, कन्दू राम जट
सुलखनि पत्नी लोजर जट
बूटी राम पुत्र लोजर जट
शंकर दास ,, ,, ,,
लहना ,, अज्ञात
कत्थू ,, लहना

हज़ारा

ज्ञान सिंह पुत्र चमन राम
धर्मो पत्नी ज्ञान सिंह
प्रीतम सिंह पुत्र ज्ञान सिंह
रानो पुत्री ज्ञान सिंह
जीत सिंह चौकिदार
कर्मों पत्नी जीत सिंह
गुड्डी पुत्री ,, ,,

मोती राम पुत्र अज्ञात
माडू राम ,, मोती राम
इन्द्र राम ,, मोती राम
इन्द्रो पुत्री मोती राम
जिओ देवी पत्नी मोती राम
आसा राम पुत्र बागू राम
गुलाबू ,, अज्ञात
कर्म सिंह ,, झण्डू राम
सद्धां पत्नी कर्म सिंह
जियो ,, बूहडा राम
हरदई ,, मोती राम
कृष्णा पुत्री ,, ,,
हीरो पत्नी बागू राम
बागू पुत्र अज्ञात

बाग

बिन्दर राम पुत्र जल्हा राम
जगत राम ,, चडता राम
रुकको पत्नी जगन राम
लक्खा सिंह पुत्र गोपाल सिंह
गंगा पत्नी खुशिया राम
मथरो पत्नी फूला राम
छोहारी ,, मंगत ,,
जल्हा राम पुत्र मंगत राम
कर्म सिंह ,, सीला राम
राम चन्द ,, खुशिया राम
लाल सिंह ,, जगत सिंह
कांशी राम ,, जोती राम
भागने पत्नी ज्ञान सिंह
शकुन्तला पुत्री ज्ञान सिंह

सलीमा मत्ता

झण्डू राम पुत्र गोपो राम
साधू ,, ,, ,, ,,
भुण्णी ,, ,, लक्खू ,,
वकील ,, फंगी ,,
भजन लाल ,, वकील ,,
खंमो पुत्री वकील राम
कांशी राम पुत्र गोपी राम
माया पत्नी कांशी राम
पशौरी राम पुत्र कालू राम
संतो पुत्री पशौरी लाल
पुन्नां पत्नी पशौरी लाल
धर्मो ,, खोजू राम
कर्मो ,, दल्लू राम
दीवान चन्द पुत्र मंगू
बीरो पुत्र दीवान
गोपी राम ,, अज्ञात
संगो विधवा अज्ञात

सींगला

बुद्ध सिह पुत्र छांगा राम
संत राम ,, रूडा राम
मुर दई पत्नी संत ,,
लद्धा पुत्र रंगीला ,,
मैना पत्नी लद्दा राम
रण सिंह पुत्र ,, ,,

टम्हक

हाकिम पुत्र अज्ञात
लच्छो पत्नी हकिम

रूपा पुत्र अज्ञात
मुर दई पत्नी रूपा
चूहड़ा पुत्र अज्ञात

गुक्कड़

राजा सिंह पुत्र जवाला सिंह
बैन्ती पत्नी राम सिंह
भजनो पुत्री राजा ,,
किशण सिंह पुत्र राजा सिंह
मक्खनी विधवा गोपालू राम

चोर ढक्की

औसूं राम पुत्र वजीर चन्द
फंगी राम ,, अज्ञात
अमरू ,, फंगी राम
जोधा ,, अज्ञात
लब्भू ,, अज्ञात

हैल

प्रीतम सिंह पुत्र अज्ञात
जीत कौर पत्नी प्रीतम

गोजर गुडा

मगंता राम पुत्र अज्ञात
बस्सो पत्नी मगंता राम
ज्ञान चन्द पुत्र ,, ,,
ज्ञानो पुत्री ,, ,,
सोहनू पुत्र अज्ञात
रोहलू ,, ,,
हीरो देवी माता रोहलू

केसरो पत्नी नानक चन्द
मेवा राम पुत्र नानक चन्द
सेवा राम ,, नानक चन्द
सर्वन ,, गोविंदा
अमर नाथ ,, ,,
बस्सो पत्नी कक्कू राम
लहना पुत्र बिन्दू
दादू विधवा हस्सन
हरो विधवा बस्सन
लच्छो पत्नी खुशिया
हरि चन्द पुत्र ,,
अमरो पुत्री बस्सन
मगंता पुत्र भुल्ला
शेरू ,, मंगता
अमरी पुत्री ,,
हीरो पत्नी बागू
सन्तो पुत्री रूडा
चेतू पुत्र हीरा
शिवो पत्नी साईं दास
लब्बो पत्नी संतू
सांई दास पुत्र संतू
चतरू पुत्र संतू
झण्डू ,, ,,
बरकत ,, ,,
शेरू ,, बागू

सियारा

संत राम पुत्र प्रताप सिंह
पार्वति विधवा कृपा राम
सांई सिंह पुत्र सोहनू
राम सिंह ,, भगडो
भगडो ,, खियाली
धर्म सिंह ,, अज्ञात
सद्रो पत्नी जगतू
रांजो पत्नी सर्वन
जगतू पुत्र अज्ञात
हरिया ,, ,,
सर्वन ,, ,,
जगतू गारडी
मंगतू ,,
महंगा पुत्र जगतू

शहीदो तुम को मेरा प्रणाम ।

देवा-वटाला एक विदेशी इतिहासकार की नज़र में

देवा-वटाला क्या था और उसनी क्या अहमियत थी उस के बारे में "खानदान चिब राजपूत" के जवां साल लेखक राजा मोहम्मद इफतखार अलि खां एम० ए० एल० एल० बी० बर्ढहिंग (पाकिस्तान) निवासी ने देवा-वटाला और वहां के रहने वालों को इन शब्दों में याद किया है। लेखक की यह पुस्तक जुलाई १९७९ में छपी थी।

"चिब कौम का ज़िक्र हो और देवा-वटाला को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाये यह महाल है।"

देवा-वटाला भिंबर से शर्की कण्डी में यूं तो एक मश्हूर तारीखी गांव है मगर फी ज़माना देवा-वटाला कंडी का इलाका समझा जाता है। इस इलाके की तारीख बग़ावतों, सर्कशों, बदअमनियों और खूंरेज़ियों से भरी पड़ी है। इस इलाके ने बड़े बड़े इन्कलाब देखे हैं। हमलावरों ने कई वार इस को झुकने पर मजबूर किया मगर खुददार और खुदमुख्तार वटाला हर बार पूरी आन बान से इस तरह उठा, गोया कभी झुका था ही नहीं। इस इलाके पर मुद्दतों बददन, सुद्धन और थकियाल कोमें हुकमरान रहीं। खडी खडयाली ता मुनावर वटाला कण्डी के शहज़ादा खडक सिंह की मुददतों जागीर रही।

राजा धर्म चन्द (शादाब खां) के पोते राजा घघी खां की औलाद नौशहरा और बलबाखर के पहाड़ों से उतर कर यहां आबाद हुई। वटाला के चिब अपने अबाई मज्हब हिण्दूमत पर बड़ी मजबूती और सख्ती से कायम रहे। अपने मज्हब और खुदमुख्तारी की खातर सदियों तक हमलावरों की मज़ाहमत कर के जुर्हत और शजाहित के अजीमउलशान कारनामें कर दिखाये। इन की अपनी कौम में इन के मुसलमान भाइयों राजा मल खां के खानदानों और सुल्तान खान के पैशवाओं ने उन्हें ज़ेर करने के लिये बड़ा ज़ोर लगाया लेकिन सख्तजां वटाला किसी के भी मतिह न हुआ और सरहददी पठानों की तरह यह सारे इलाके के लिये एक मुस्तकिल खतरा बना

रहा। बक़ौल सर लेपल ग्रीफन "देवा-वटाला का इलाका ग़ारितगरी, सफ्फाकी और खूंखारी के लिये मशहूर है" लेकिन तकसीमे बर्सगीर ने वटाला की सदियों पुरमोहीत और इन्तहाई तांबाक तारीख का बाब हमेशा हमेशा के लिये खत्म कर दिया। रही सही कसर भारत पाक जंग १९६५ और १९७१ ने पूरी कर दी। वटाला के ग़य्यूर और नाकाबिलेतस्खीर चिब राजपूत अपने आबा-व-अजदाद की सरज़मीन और रवायात को छोड़ने पर मजबूर हो गये। न मालूम अब कौम चिब्भाल के यह सुच्चे मोती कहां कहां और किस जगह गुम हो कर रह गये हैं"।

संगठन ही जीवन का केन्द्र बिन्दु है। स्वार्थों से ऊपर उठो, देश का हित सर्वोपरि है। त्याग और देश के लिए समर्पित जीवन वन्दनीय है। देश हित में व्यक्तित्वपूर्ण जीवन ही आदर्श नागरिक की कसौटी है। जैसे नागरिक होंगे वैसी ही देश की तसवीर बनेगी। देश को बनाने वाले त्याग और सदाचार के अधार पर अपना जीवन गठन करें। दूसरों को सदगुणी बनाने से पहले स्वयं सदगुण सम्पन्न बनें। दुर्व्यसन नागरिकता पर कलंक है।

माधवराव सदाशिवराव
गोलवलकर

बदि का रास्ता नरक में जाता है जबकि नेकी का अमन और स्वर्ग में।

हरवंश सिंह निर्मल

— इति —

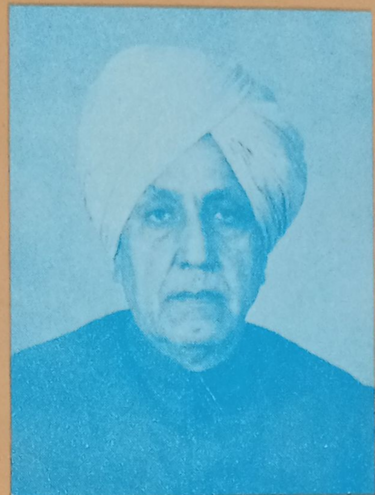
यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम ॥

भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता में श्री अर्जुन को देश धर्म, समाज धर्म और मानवधर्म के कर्तव्यों की प्रेरणा देते हुये यही व्यक्त किया है कि — हे अर्जुन ! जब जब भी धर्म की हानी होती है तब तब ही मैं धर्म की पुनर्स्थपना हेतु शरीर धारण करता हुं ।

यही स्थिति आज हमारे देश और समाज की बनती जा रही है। इसे बदलना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इस का रूप युद्ध न हो कर राजनीतिक प्रणाली भी हो सकती हैं।

—गीता

जन्म भूमि से अधिक कोई भी स्थान आदरणीय नहीं है ।



बलदेव सिंह चिब

पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर के वीर उपजाऊ क्षेत्र 'देवा वटाला' (तहसील भिंबर) में आप का जन्म, जनवरी 1925 में एक किसान परिवार में हुआ। देश का विभाजन हुआ। अध्यापक के पद से त्यागपत्र दिया, तथा कबायली आक्रमण से देवा-वटाला की रक्षा के लिए, 'लोक-सेना' बनाई। हिन्दु-मुस्लिम भाईचारा बनाए रखने के लिए, रात-दिन एक कर दिया।

विभाजन उपरान्त तीन वर्ष तक शरणार्थी नेता के रूप में सरकार से लड़ते रहे। आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने के लिए, सन् 1950 में भारतीय डाक व तार में भरती हुए। सन् 1972 में फिर से हृदय में लोक-सेवा का अंकुर फूटा और सब-पोस्टमास्टर का पद छोड़ कर सक्रिया राजनीति में कूद पड़े। वर्तमान भ्रष्ट तथा दूषित राजनीति में अधिक देर तक नहीं रह सके इसलिए अपना ध्यान आपने 'ग्रामीण समाज सुधार' की ओर दिया। इसी की एक कड़ी है कि आप सन् 1987 तक जम्मू-कश्मीर 'क्षत्रिय-समाज' के आठ वर्ष तक प्रधान निर्वाचित रहे और इस समाज का ध्यान सामाजिक कुरीतियों की ओर आकर्षित करते रहे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से प्रेरित होकर आपने संघ की गतिविधियों को भी अपने जीवन का भाग बनाया। पर्यावरण व कृषि में आप की विशेष रुचि है तथा फूल, पौधे और पक्षी आप के मित्र हैं। गायत्री मां को आप अपना इष्ट समझते हैं तथा इतिहास के पढ़ने लिखने में अपना काफी समय व्यतीत करते हैं। 'अमर-कहानी', तथा 'अठारह-दिन' हिन्दी में तथा 'मेरी-पसन्द', उर्दू भाषा में आप की मुख्य रचनाएं हैं।

परमात्मा

की स्नेह भरी याद

का साथ आत्मा की सहन शक्ति

बढ़ा देता है और आत्मा विजयी बनती है।

दूसरों के दोष और अवगुण

देखने से न अपना

भला होता है न

दूसरों का